kissekahani.com

अप्रैल १९७०

पराग

बच्चों का मधुर मासिक

आभार : डा. देशदीपक.

www.kissekahani.com

५० पैसे

kissekahani.com

C I B A Cosmetics

यह रहा बिनाका शॉर्ट हैड

जिसकी विशेषता है

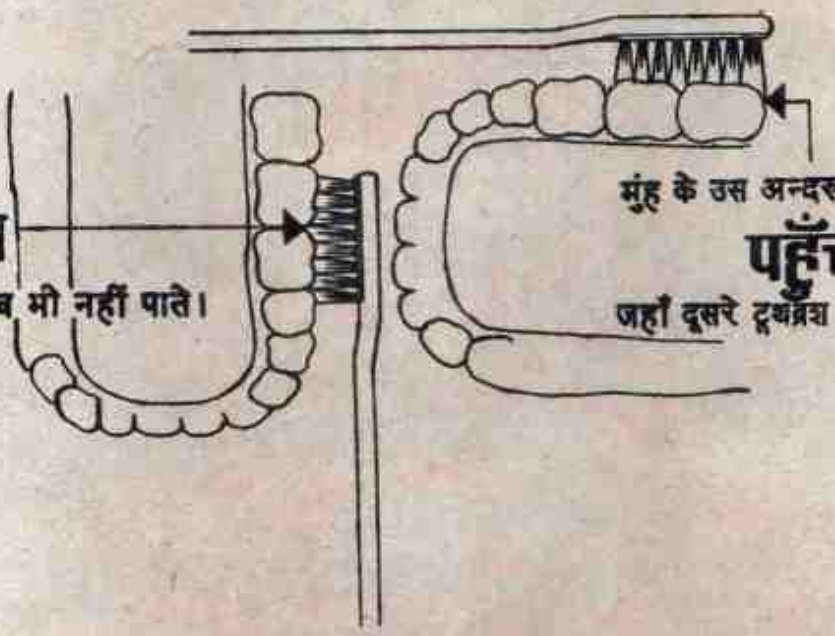

दातों के उन भागों की
सफ़ाई करना
जहाँ दूसरे टूथब्रश पहुंच भी नहीं पाते।

मुंह के उस अन्दरूनी भाग में
पहुँचना
जहाँ दूसरे टूथब्रश पहुंच भी नहीं पाते।

बिनाका शॉर्ट हैड के बालों की गोल बनाई गई नोकें आपके मसूड़ों को छिलने से बचाती हैं।

बिनाका टूथब्रश सिर्फ टूथब्रश ही नहीं कुछ और भी है।

Binaca®

ULKA-CTB-65 HIN

'मंजन परेड'

www.kissekahani.com

अनुक्रमणिका

मुखपृष्ठ :

दो मुखौटे : पी. वी. सुब्रमण्यम् १

सरस कहानियां :

टेलीफोन : अवतारसिंह ४
आरंभ : सत्यस्वरूप दत्त १२
बोलती तस्वीर : मधुजय वाचस्पति १६
तट से छूटकर : वीरकुमार 'अधीर' २०
दुगना दर्द : राजेशकुमार जैन २८
खीर : मीना मेहरोत्रा ३६
गप्पीराम : मनमोहन मदारिया ४०

चटपटी कविताएं :

गुड़िया रानी रूठ गई : कल्पना व्यास २४
डब्बू जी की डायरी से : विश्वबंधु २५
सरकस : निरंजनलाल मालवीय 'अविचल' ५२
चालाक चूहा : पंकज गोस्वामी ५२
बंदर भूप : अनुपम ५३
भालू जी का ब्याह : अनिलकुमार खरे ५३

मजेदार कार्टून-कथाएं :

छोटू और लंबू : शेहाब ८
बुद्धूराम : आबिद सुरती २३

अन्य रोचक सामग्री :

डुप्लीकेट (कार्टून) : पंकज गोस्वामी ७
दफ्तर से पहले का शेविंग (फोटो कथा) : चंद्रकांता १०
मार्ग ही खराब (लघुकथा) : हसनजमाल छीपा १९
संगीत का प्रभाव (कार्टून) : रंजित २७
तरंगे और उमंगे (रंगीन चित्र) : विद्याव्रत ३२
१९६९ के डाक-टिकट (लेख) : गजराज जैन ४८

स्थायी स्तंभ :

छोटी छोटी बातें : सिम्स १५
शीर्षक प्रतियोगिता–१४ : ३१
'पराग' उद्धरण प्रतियोगिता-१८ : ४४
कहो कैसी रही (चुटकुले) : दीना वल्लभ ५६
रंग भरो प्रतियोगिता-९४ : ५९

वार्षिक शुल्क : स्थानीय : रु. ६.००
डाक से : रु. ६.५०

संपादक : आनंदप्रकाश जैन

kissekahani.com

टेलीफोन

ड्राइंग-रूम से निकलकर दादा जी बरामदे में आ खड़े हुए. मारे खुशी के उनके पैर जमीन पर नहीं पड़ रहे थे, इसलिए वह सीढ़ियां चढ़कर छत पर आ पहुंचे और वहीं चहलकदमी करने लगे. बिजली के तार पर बैठी चिड़ियां चहचहा रही थीं. मिट्टी के गमलों में फूल खिले हुए थे. किंतु दादा जी ने उनकी तरफ कानी आंख से भी नहीं देखा. वह अपने में मस्त गुनगुना रहे थे— "हेलो-हेलो. . . क्रि-क्रि-क्रि. . . हेलो-हेलो. . .!"

दादा जी का गुनगुनाना सुनकर कोई भी समझ सकता था कि उनके घर में टेलीफोन लग रहा है. यह टेलीफोन पिंकी के डैडी की कंपनी लगवा रही थी क्योंकि उनके बॉस को आफिस के बाद भी उनकी जरूरत पड़ जाती थी.

यकायक ही दादा जी को कुछ याद आया. वह लपके हुए ड्राइंग-रूम में आ घुसे, जहां दो कारीगर टेलीफोन के कनेक्शन लगा रहे थे. दादा जी ने उनसे अच्छी-खासी दोस्ती गांठ ली थी. यहां तक कि वह स्वयं बाजार जाकर उनके लिए कोका-कोला और बिस्कुट लाए थे.

दादा जी ने पूछा— "क्यों, भैया जी, हमें नंबर कौनसा दे रहे हो?"

एक ने बताया—"फाइव सिक्स टू सेवन फोर नाइन."

दादा जी ने नाक सिकोड़ी— "यह नंबर तो हमें पसंद नहीं है. हमें तो वैसा ही नंबर चाहिए जैसा आपने नुक्कड़ वाले वकील साहब को दे रखा है— फाइव सिक्स फाइव सिक्स फाइव सिक्स!"

कारीगर ने मुस्करा कर कहा— "आपने पहले कहा होता! अब तो वह नंबर वकील साहब मार ले गए!"

"मैं वकील साहब वाला नंबर तो नहीं मांग रहा. हमें ताल-मेल वाला कोई दूसरा नंबर दे दीजिए. जब तक नंबर में ताल-मेल न हो, किसे याद रहेगा?"

"अब तो आपको यही नंबर एलॉट हो गया."

दादा जी ने थोड़े सख्त लहजे में कहा— "यह नंबर तो कतई नहीं चलेगा. जब यह नंबर तीस सैकिंड में मैं भूल गया, तो औरों को क्या खाक याद रहेगा! जो हो, आपको नंबर बदलना ही होगा."

किसी तरह कारीगरों ने दादा जी को विश्वास दिला दिया कि वे टेलीफोन के नंबर थैले में भरकर नहीं लाए हैं. दादा जी उदास हो गए. वह बाहर आए, तो उनकी खुशी पचास प्रतिशत कम थी.

टेलीफोन लगाकर कारीगर चलते बने. तब तक दोपहर भी ढल चली थी. बच्चे स्कूल से आ चुके थे.

टेलीफोन मेज पर रखा था. खिड़की से आती सूर्य की किरणों में उसका स्टेनलेस स्टील का डायल चमचमा रहा था. साबुन से हाथ धोकर दादा जी ने टिंकू के फोन का नंबर डायल किया. टिंकू ने ही रिसीवर उठाया. बोला— "हेलो!"

जैसे 'नमस्ते' का जवाब 'नमस्ते' से दिया जाता है, उसी तरह दादा जी ने भी कह दिया— "हेलो!"

टिंकू तुरंत दादा जी की आवाज पहचान कर बोला— "दादा जी, नया टेलीफोन लगने की कांग्रेचुलेशंस! लेकिन आप गलती कर बैठे. 'हेलो' तो फोन प्राप्तकर्ता करता है, फोन-प्रेषक नहीं!"

"वाह, भई टिंकू! यह गूढ़ हिंदी कहां से सीख आए!"

"दादा जी, लज्जित न कीजिए. वह तो अभी अभी 'पराग उद्धरण प्रतियोगिता' के लिए मनी आर्डर-फार्म भरा है इसलिए ये शब्द दिमाग में अटक गए हैं."

"टिंकू, मुझ से गलती क्या हुई थी?"

"दादा जी, आप को 'हेलो' के स्थान पर कहना चाहिए था—'मे आई स्पीक टु मिस्टर टिंकू?' फिर मैं कहता—'यस, टिंकू स्पीकिंग,' तब आप अपना परिचय देकर बातचीत आरंभ कर देते," टिंकू ने बताया.

दादा जी ने कुछ देर बातचीत करके रिसीवर वापस रख दिया.

नए खिलौने का शौक तो बच्चे को भी होता है, फिर टेलीफोन तो बहुत बड़ा खिलौना है, दादा जी भी दिन भर टेलीफोन के पास बैठे रहते. किंतु टेलीफोन कभी बजता ही न था. शायद इसलिए कि दादा जी के परिचितों के पास टेलीफोन नहीं थे. यह विकट समस्या थी. बेजान पड़ा टेलीफोन काट खाने को दौड़ता था. दादा जी एक्सचेंज भी हो आए किंतु व्यर्थ की सिरदर्दी के सिवाय कुछ हाथ न लगा.

दादा जी के पास जो फोन आते भी थे, वे पराये होते थे. हां, इससे उन्हें कुछ संतोष मिल जाता था. फोन अपना हो या पराया, घंटी तो दादा जी के ही घर बजती थी. वह बुलावा देने डेढ़ सौ मीटर दूर भी खुशी खुशी जाते थे.

टिंकू और दादा जी की तो खास तौर पर गहरी छनने लगी थी. मुहल्ले में केवल उन्हीं के घर टेलीफोन थे. इस संबंध में दादा जी की शंकाएं टिंकू ही दूर करता था. एक दिन टिंकू ने समझाया—"दादा जी, अपने यहां से दूसरों को फोन मत करने दिया कीजिए."

दादा जी ने चकित होकर पूछा— "क्यों, भई टिंकू? अपने को तो दो सौ काल फ्री मिलती हैं, कंपनी पैसे देगी!"

"दादा जी, आजकल बड़े शहरों का दिल्ली से सीधा कनेक्शन है. किसी ने पटना-वटना का नंबर मिलाकर दस मिनिट गुप-चुप बात कर ली, तो आपकी दो सौ कालें देखते देखते साफ हो जाएंगी!"

उस दिन से दादा जी सचेत हो गए. वह फोन करने वालों पर कड़ी नजर रखने लगे.

एक और समस्या पैदा हुई. दादा जी ने नोट किया कि फोन दिन-प्रतिदिन मैला होता जा रहा है. दादा जी ने टिंकू से पूछा— "टिंकू, यह टेलीफोन की चमक-दमक दिन-दिन फीकी पड़ रही है. वह पहले वाला रंग-रूप

—अवतार सिंह—

kissekahani.com

ही नहीं रहा! इसका कोई इलाज नहीं है क्या?"

टिंकू फोन के चक्कर में दादा जी से काफी परेशान हो चुका था, बोला—"दादा जी, यह भी कोई समस्या है! एक लिटर पानी में आधा चम्मच सर्फ या आधा लिटर पानी में आधा चम्मच सर्फ घोल लीजिए. इतना हिलाइए कि सर्फ झाग बनकर न उड़ जाए. इस घोल में साफ कपड़े का कोना भिगो कर टेलीफोन पर धीमे धीमे रगड़िए. टेलीफोन चमक उठेगा."

दादा जी ने घोल तैयार किया और टेलीफोन चमकाने में जुट गए. टेलीफोन चमका तो, परंतु उतना नहीं जितना दादा जी ने परिश्रम किया.

प्रति मास नए पुरस्कार

बच्चो, इस अंक की कहानियां ध्यान से पढ़ो और हमें २० अप्रैल १९७० तक लिखो कि अपनी पसंद के विचार से कौन-कौनसी कहानी तुम पहले, दूसरे, तीसरे आदि नंबरों पर रखोगे. तुम्हें इस प्रकार सभी कहानियों पर अपनी पसंद बतानी है. इसमें केवल वे ही कहानियां शामिल होंगी, जिनका उल्लेख अतापता में 'सरस कहानियां' के अंतर्गत आया है. जिन बच्चों की पसंद का क्रम बहुमत के क्रम से अधिकतम मेल खाता हुआ निकलेगा, उन्हें हम सुंदर सुंदर पुस्तकें पुरस्कार में भेजेंगे.

बाल पाठकों के द्वारा इस तरह इस अंक की जो कहानी सर्वश्रेष्ठ ठहरेगी, उसके लेखक को भी ५० रुपये का एक अतिरिक्त पुरस्कार प्रदान किया जाएगा. अपनी पसंद एकदम अलग कार्ड पर लिखो. पता यह लिखो : **संपादक, 'पराग', हमारी पसंद प्रतियोगिता नं. ३८, पो. आ. बा. २१३, टाइम्स आफ इंडिया, बंबई-१.**

प्रतियोगिता नं. ३५ का परिणाम

इस प्रतियोगिता में एक बच्चे का हल सर्वशुद्ध आया. बच्चे का नाम और पता नीचे दिया जा रहा है. उसे शीघ्र ही पुरस्कार भेजा जाएगा :

● **विजयकुमार, कक्षा ८, जूनियर हाई स्कूल, सुहेल नगर, पो. आ. चित्तौरा, जिला बहराइच (उ. प्र.).**

जनवरी ७० अंक की कहानियों का सर्वाधिक लोकप्रिय क्रम इस प्रकार है :

१–अनमोल क्षण, २–किताब की चोरी, ३–जासूसों पर जासूसी, ४–मोर के बच्चे, ५–एक सजा मीठी-सी, ६–हम हैं उनके भाई, ७–कुकर्म और कीचड़, ८–बिदायक.

'अनमोल क्षण' की लेखिका सुश्री मीना मेहरोत्रा को ५० रुपये का अतिरिक्त पुरस्कार प्रदान किया जाएगा.

बच्चों को दादा जी का टेलीफोन के प्रति यह अनावश्यक स्नेह फूटी आंखों न भाता था. कोई बात है कि सुबह से लेकर शाम तक दादा जी टेलीफोन से चिपके हैं. खाना है तो टेलीफोन के पास, कुछ पढ़ना है तो उसी मेज पर. इतनी टेलीफोन-भक्ति किस काम की? इसका भी कुछ इलाज होना चाहिए.

दिन-मुहूर्त तय किया गया और आखिर इस दिशा में पहला कदम उठा ही लिया गया.

●

दस बजे होंगे. छुट्टी का दिन. दादा जी बाहर से लौटे. डैडी ने बताया—"पिता जी, आप का फोन आया था."

"मेरा फोन!" दादा जी का मुंह छोटा-सा रह गया. उनका अपना फोन आया और वह घर पर न थे. क्या ट्रेजेडी थी!

डैडी ने कहा—"हां पिता जी, बबली का फोन था. उसने आपके नाम मैसेज छोड़ा है."

"क्या...?" दादा जी के माथे की शिकनें कुछ कुछ दूर हुईं. फोन न सही, मैसेज तो है. टेस्ट-मैच न देखा, कमेंटरी तो सुनने को मिली.

"बबली ने कहा था कि उसके हाथ 'होगी जीत हमारी' नाटक का पास लग गया है—बारह जनों का. इसलिए आप अविलंब तैयार होकर थिएटर पहुंच जाएं. बाकी सब जने पहुंच चुके हैं," डैडी ने बताया.

दादा जी ने पूछा—"राजू-मुन्नू-पिंकी?"

डैडी ने कहा—"वे भी चले गए होंगे. सुबह से मुझे तो दीखे नहीं."

दादा जी की प्रसन्नता का पारावार न रहा. नाटक से उन्हें विशेष मोह था. उन्हें तैयार होने में कुछ मिनिट लगे. प्रेस किया धोती-कुर्ता पहने दादा जी ने घर से बाहर कदम रखा ही था कि उन्हें कुछ याद आया. आकर उन्होंने डैडी से पूछा—"रामलाल, यह तो तुमने बताया ही नहीं कि मुझे जाना किस थियेटर पर है!"

डैडी ने कहा—"यह तो मुझे भी बबली ने नहीं बताया!"

दादा जी ने खिन्न हो कर कहा—"बबली ने न बताया हो, ऐसा हो नहीं सकता, तुम्हें याद नहीं रहा होगा."

डैडी ने स्वीकार किया—"हो सकता है मेरे दिमाग से यह बात उतर गई हो."

"जब इतनी महत्वपूर्ण बात सुबह सुबह तुम्हारे दिमाग से उतर गई, तो बाकी दिन में जाने क्या करोगे!" दादा जी डैडी को लंबा लैक्चर पिलाते कि फोन की घंटी क्रि-क्रि कर उठी.

दादा जी ने लपककर फोन उठा लिया—"हेलो-हेलो... फाइव सिक्स टू सेवन फोर नाइन!"

kissekahani.com

उधर से कहा गया— "दादा जी, मैं मधु बोल रहा हूं, थियेटर से. हम आपकी प्रतीक्षा में दुबले हो रहे हैं और आप अभी तक घर में विराजमान हैं! मुनीश भैया भी अभी तक घर में हैं. उनके साथ आ जाइए."

दादा जी ने संतोष की सांस ली और मधु के घर की ओर दौड़े. मधु की मम्मी ने बताया कि मुनीश तो अभी अभी आपके घर की ओर गया है.

"किंतु वह रास्ते में तो कहीं मिला नहीं. . ." दादा जी ने चकित होकर कहा. वह उल्टे पांव वापस दौड़े आए. घर पहुंचकर डैडी से पूछा— "यहां मुनीश आया था?"

डैडी ने उत्तर दिया—"अभी अभी तो आया था!"

दादा जी ने तुरंत पूछा— "कहां है?"

डैडी बोले— "आपको पूछकर चला गया."

दादा जी ने रुष्ट हो कर पूछा— "तुमने उसे बैठाया तक नहीं?"

"कहा था लेकिन वह बहुत जल्दी में था."

दादा जी डैडी पर बरस पड़े— "तुमने कहा ही नहीं होगा. सुबह से तुम्हारी यह दूसरी गलती है."

डैडी की समझ में नहीं आ रहा था कि दादा जी को सुबह से क्या हो गया है? इतनी नाराजगी वह कम ही दिखाते हैं.

दादा जी वहां से बस-स्टाप की ओर दौड़े, किंतु मुनीश कहीं नहीं दीख पड़ा. लगता था, उसे पहुंचते ही बस मिल गई थी. डी. टी. यू. की बसों को कोसते हुए दादा जी घर लौटे.

●

घर आकर उन्होंने अखबार का चप्पा चप्पा छान मारा किंतु कहीं भी 'होगी जीत हमारी' का विज्ञापन नहीं दीख पड़ा कि थियेटर का पता चल जाता. दादा जी इस दुर्घटना के जिम्मेवार डैडी को ठहरा रहे थे, जिन्होंने बबली का संदेश पूरा याद नहीं रखा था.

तभी फोन की घंटी टनटना उठी. दादा जी ने रिसीवर उठाया. उधर से पूछा गया— "मे आई स्पीक टू दादा जी प्लीज? उनसे कहिए कि थियेटर से बबली बोल रहा है. . ."

दादा जी की जान में जान आई. खुशी से भरे कंठ से बोले— "यस, बबली, इट इज मी ओनली!"

"ओह, दादा जी, आप हैं! नमस्ते. . . आप अभी तक नहीं पधारे. मुनीश आधा घंटा आपके घर प्रतीक्षा करता रहा. आप उस समय वहां थे नहीं."

दादा जी ने प्रतिवाद किया— "गलत! बिल्कुल गलत! मुनीश आधा घंटा क्या, आधा मिनिट भी मेरे यहां नहीं बैठा."

"हो सकता है, दादा जी प्रतीक्षा का एक क्षण भी युग के समान लगता है. खैर. . . नाटक शुरू होने में अभी पांच-सात मिनिट बाकी हैं. आप स्कूटर या टैक्सी लेकर यहां पहुंच जाइए. मैं गेट पर आपको मिलूंगा."

"लेकिन तुम बोल कहां से रहे हो?"

"पब्लिक बूथ से."

"सो तो ठीक है, किंतु यह पब्लिक बूथ कहां है?"

"थियेटर के अंदर है, दादा जी!"

"थियेटर कहां है?"

"पब्लिक बूथ के बाहर!"

"मगर. . ."

"दादा जी, इन बातों से आपको क्या लेना-देना? आप व्यर्थ समय नष्ट कर रहे हैं. लीजिए, पहली घंटी बज रही है. आप फौरन से पेश्तर यहां आ जाइए. फिर जी भर कर बातें होंगी."

दादा जी ने कुछ पूछना चाहा, मगर कनेक्शन कट चुका था.

दादा जी को बच्चों की मूर्खता पर कम, अपने भाग्य पर अधिक रोना आ रहा था. किसी मछली की तरह थियेटर का पता हाथ में आता आता फिसल जाता था. ऐसे नाटक क्या रोज रोज आते हैं, वह भी फ्री पास पर!

(शेष पृष्ठ ४३ पर)

डुप्लीकेट—

"जिस तरह फिल्मों में पिटने के लिए डुप्लीकेट होता है, उसी तरह स्कूल में मार खाने के लिए मेरे बेटे ने भी डुप्लीकेट रखा है!"

kissekahani.com

kissekahani.com

kissekahani.com

पहली आफत : रोज की मुसीबत बन गई है, दफ्तर जाने से पहले दाढ़ी की घिसाई के लिए सारा सामान जुटाने की!

दफ्तर से पहले...

दूसरी आफत : साबुन रगड़ते-रगड़ते हाथ दुखने लगे. यह न करूं, तो नए ब्लेड से एक बाल भी खूंटी से निकलने वाला नहीं है!

kissekahani.com

तीसरी आफत : इतनी मेहनत करके आधी मंजिल तो पार कर ली, लेकिन अभी इतनी ही मंजिल और तय करनी है—हाय राम!

...का शेविंग

छाया : चंद्रकांता

चौथी आफत : लो, भई, चिकनी-चुपड़ी दाढ़ी बन तो गई... लेकिन घड़ी क्या बजा रही है! लेट होने पर साहब की डांट...!

अरक्षा

kissekahani.com

क्या जमाना आ गया है! मोहल्ले से आए दिन कुछ न कुछ गायब होता रहता है. पिछले दिनों एक एक करके मोहल्ले के चार कुत्ते गायब हो गए. चार में से तीन कुत्ते पालतू थे—दूध-बिस्कुटों पर पले स्वस्थ, मांसल, झबरे कुत्ते. मोहल्ले में खलबली मच गई. मोहल्ले की रखवाली करने वालों की रखवाली का प्रश्न था.

बच्चे गायब हो सकते हैं किंतु कुत्ते गायब नहीं हो सकते; उन्हें कहीं भी छोड़ दो, घूम-फिर कर अपने ठिकाने पर पहुंच ही जाते हैं. बच्चों के गायब होने में किसी का स्वार्थ होता है, कभी कभी बच्चों का अपना भी स्वार्थ होता है. किंतु कुत्तों के गायब होने में? कुत्तों को अपने स्वामी से निस्वार्थ प्रेम होता है. वे मालिक बदलना पसंद नहीं करते. उन्हें मालिक बदलने के लिए समझाया नहीं जा सकता, लालच नहीं दिया जा सकता, मालिक का विरोध करने के लिए बहकाया नहीं जा सकता.

यह सब होते हुए भी कुत्ते गायब हो रहे हैं या किए जा रहे हैं. मोहल्ले वाले इस कुत्ता-कांड की व्याख्या नहीं कर पा रहे, इसके पीछे छिपे उद्देश्य को समझ नहीं पा रहे. इतना ही समझ पा रहे हैं कि जो हो रहा है, अच्छा नहीं हो रहा. इस होने की उपेक्षा नहीं की जा सकती; मकान अरक्षित हो गए हैं, मोहल्ला अरक्षित हो गया है. आज कुत्ते जा रहे हैं, कल कुछ और जाएगा. कुत्तों का जाना क्या कुछ और जाने की भूमिका नहीं है? चोर हर हालत में पकड़ा जाना चाहिए, तभी इस मोहल्ले की खैर है.

सब परेशान हैं—सब मोहल्ले वाले. सब दिमाग लड़ा रहे हैं. बड़े-बूढ़े एक ओर हैं. बच्चा पार्टी एक ओर है.

ऐसे में बच्चा पार्टी की बैठक में इस रहस्य का पता लगाने पर गंभीरता से विचार किया जा रहा था. सब बच्चे उत्तेजित थे. उनके चेहरों पर रोष था, होंठ फड़फड़ा रहे थे, आंखें जल रही थीं. उनके रहते उनके प्यारे कुत्ते गायब हो गए! यह उनके अस्तित्व को चुनौती थी. इसी से गरमागरम चर्चा हो रही थी, चर्चा से धुआं उठ रहा था!

"हमने बड़े-बड़ों को ठिकाने लगाया है! अच्छे अच्छों की ठुकाई की है! इस पर भी किसी का यह दुस्साहस कि हमारे घरों के कुत्ते भगा ले जाए!" मनीष ने रोष से कहा.

"अपराधी को ठिकाने अवश्य लगाना है. टामी जब से गया है मेरी बहन रोजी का बुरा हाल है. एक कौर भी उसके गले से नहीं उतरा है," राजेश ने शिकायत भरे स्वर में कहा.

"पंपी जब से गया है, मुझे रात के समय घर के पिछवाड़े पेशाब करने जाने में बड़ा डर लगता है! क्या पता अनार के बड़े बड़े झाड़ों में कोई छिपा ही बैठा हो!" अशोक ने अपनी बड़ी बड़ी आंखों को और बड़ा करते हुए कहा. "वैसे मैं किसी से डरता नहीं, किंतु जमाना बड़ा खराब है. दिन दहाड़े चलती सड़क पर खून-खराबा हो जाता है, रात के अंधेरे में किसी का क्या भरोसा?"

"यह समय निराशापूर्ण बातों का नहीं, जो हो गया उस पर रोने का नहीं, यह समय मनोबल ऊंचा करने का है. चुनौती स्वीकार करने का है. हमें बड़े-बूढ़ों से पहले अपराधी को पकड़ना है. सबको बता देना है कि तोड़फोड़ करने वाले हमारे ये हाथ समाज-उपयोगी काम भी उसी कुशलता से कर सकते हैं." मनीष ने फिर कहा

"हम बता देना चाहते हैं कि सफलता हमारी सहचरी है. हम जिस काम में हाथ डालते हैं सफलता हमारे हाथ चूमती है!" आलोक आलोकमय स्वर में बोला.

"हमारी खोज इसी क्षण से आरंभ होती है. इसी क्षण से हमें सतर्क रहना है, अपनी आंखें खुली रखनी हैं, कान खड़े रखने हैं, और अपने सब साथियों को चौकस रहने के लिए कह देना है, कुत्तों पर नजर रखने वालों पर नजर रखने के लिए कह देना है!" अशोक ने कहा.

"सबसे पहले मैं उन परिस्थितियों का अध्ययन

kissekahani.com

करूंगा जिनमें कुत्ते गायब हुए हैं. कदम उठाने में कुछ देर हो गई है, अतः घटनास्थल पर पांवों के निशान या अन्य उपयोगी सूत्र मिलने कठिन हैं. खैर जो हो गया सो हो गया. अब हमें एक मिनिट भी नहीं खोना है और तुरंत अपनी खोज आरंभ करनी है," राजेश ने गंभीर स्वर में कहा.

इसके साथ ही सभा विसर्जित हो गई. सबके सब कुछ सोचते हुए, अपने माथे पर बल डाले हुए, मुट्ठियां भींचे हुए, धीमे धीमे कदम उठाते चल रहे थे. सबके मस्तिष्क तेजी से काम कर रहे थे. सब भिन्न भिन्न बातें सोच रहे थे. कोई सोच रहा था कि वह दिखाई पड़ने वाले सब कुत्तों पर ध्यान रखेगा, उन कोठियों के चक्कर लगाएगा जहां कुत्ते पलते हैं. कोई सोच रहा था कि वह मोहल्ले में रात के समय आने-जाने वाले चोर टाइप लोगों पर ध्यान रखेगा. हो सकता है कि यह किसी दल का काम हो, जो कुत्तों का सफाया कर अपनी चोरी का मार्ग साफ करना चाहता है. जिन तीन घरों से कुत्ते गए हैं, तीनों ही धनी परिवार हैं. कोई सोच रहा था कि इसके पीछे किसी ऐसे दल का हाथ है जो परीक्षणों, आकाश-उड़ानों के लिए कुत्ते वैज्ञानिकों को सप्लाई करता है. कोई सोच रहा था कि कुत्ते गायब होने का समाचार अखबार में छपवाया जाए, और यह भी छपवाया जाए कि पुलिस अपराधियों की खोज में है, इससे डर कर शायद चोर चोरी करना छोड़ दे.

अगले दिन सब मिले. सबके चेहरों पर निराशा पुती हुई थी. सबकी आंखें झुकी हुई थीं. किसी को सफलता नहीं मिली थी. अगले दिन पुनः मिलने का निश्चय करके फिर सब अपनी खोज में जुट गए.

तीसरे दिन भी यही स्थिति रही. चौथे दिन और भी निराशा रही. सबके उपायों पर विचार-विमर्श किया गया... पैंतरे बदलने का निश्चय किया गया.

अशोक सिर खुजलाता हुआ सड़क पर आया. उसे विश्वास था कि अभी और कुत्ते गायब होंगे. अभी तक जितने कुत्ते गायब हुए हैं, सब स्वस्थ, भारी भरकम, मांसल कुत्ते थे. उन्हें ले जाने वाला कोई बलिष्ठ व्यक्ति ही होना चाहिए. मोहल्ले में कौनसी बलिष्ठ आकृतियां उसने देखी हैं? उसने सोचा, जो कुत्ते चोरी गए हैं स्वास्थ्य में उनके पश्चात् अब टीटू का ही नंबर है. अतः टीटू पर कड़ी दृष्टि रखना आवश्यक है. वह अब टीटू पर नजर रखेगा.

अशोक को अपने प्रयास में सफलता मिली. उसने तुरंत साथियों की एक असाधारण बैठक बुलाई, नयी स्थिति पर विचार करने के लिए.

"मित्रो!" अशोक ने घोषणा की— "आपको यह जानकार प्रसन्नता होगी कि चोर पकड़ा गया है!"

सबके चेहरों पर प्रसन्नता की लहर दौड़ गई. सबकी आंखें चमक उठीं. कौन? कौन है चोर? कैसे पकड़ा गया? कहां है?

अशोक ने बात आगे बढ़ाई—"चोर को आप सब जानते हैं. आप सबने उसे देखा है. चोर और कोई नहीं, सड़क के पार वाला कठोर दिल कसाई है, जिसके यहां से हम लोग बकरे का मांस लाते ह. उस कठोर

—सत्यस्वरूप दत्त—

दिल ने हमें कई दिन तक बकरे के नाम पर कुत्ते का मांस खिलाया है. अच्छा हुआ पकड़ा गया, नहीं तो अभी भी खिलाता रहता. कल रात ढले वह साबुन वालों की कोठी में से बोरे में कुछ लाद कर निकला. मुझे संदेह हुआ क्योंकि किसी अपरिचित को देखकर टीटू का न भौंकना अस्वाभाविक था. मैंने वहां जाकर देखा, टीटू वहां नहीं था. फिर मैंने मनीष को जगाया, हम दोनों उसकी दूकान के पास गए. दूकान भीतर से बंद थी. मैंने और मनीष ने टीटू के भौंकने की, रोने की आवाजें स्पष्ट सुनी हैं!"

सबके शरीर में क्रोध एवं घृणा की लहर दौड़ गई. बच्चा पार्टी चीख उठी—"मारो, मार-मारकर चमड़ी उधेड़ दो बेईमान की! ...दूकान को जला दो! मुंह पर कालिख पोत दो! ...कुत्ते का मांस...आक् थू!"

"उस कठोर दिल कसाई ने हमें धोखा दिया है, हमें ठगा है. बच्चू को वह मजा चखाएंगे कि उम्र भर याद रखेगा."

तभी मनीष उठा. उसके मुख पर किसी प्रकार की उत्तेजना नहीं थी, बोला—"भाइयो, इस बार हम हिंसा का सहारा नहीं लेंगे, कानून भी अपने हाथ में नहीं लेंगे! कानून हाथ में लेने के कारण हम बहुत बदनाम हो चुके हैं. पथराव, आगजनी से निश्चय ही हमारी प्रतिष्ठा गिरी है. हमने सदा और किसी की नहीं, अपनी और केवल अपनी संपत्ति की हानि की है. इस बार हम दूसरा मार्ग अपनाएंगे. उसे पीटेंगे नहीं, उसकी दूकान नहीं जलाएंगे, किंतु उसे दंड देंगे!"

"हमारा मार्ग जो भी हो, हम उस कठोर दिल का असली रूप जनता के सामने रखेंगे. उसे उसके अनुचित आचरण का बोध कराएंगे. उसे बिना पीटे आठ आठ आंसू रुलाएंगे . . ."अशोक ने दृढ़ स्वर में कहा.

तालियों की जोर की गड़गड़ाहट हुई.

●

अगले दिन वह कठोर दिल जब दूकान खोलने आया, तो चकित रह गया. अशोक ने जब से उसे पकड़ा था उसका दिल धड़क रहा था. वह जानता था कि उसका मामला छात्रों के हाथ में है, अतः आसानी से छुटकारा मिलने वाला नहीं, दंड अवश्य मिलेगा. वह सोच रहा था कि उसकी दूकान जला दी जाएगी, उसे सबके सामने पीटा जाएगा. हालांकि ऐसा कुछ हुआ नहीं किंतु उसे रात को नींद नहीं आई. उसके भीतर का चोर उसे कंपा रहा था. उसकी घर से बाहर निकलने की हिम्मत नहीं हो रही थी. वह एक दिन घर से बाहर नहीं निकला. किंतु जब कुछ नहीं हुआ. तो बाहर निकला. बाहर निकलने पर भी नहीं पिटा, तो दूकान खोलने चला आया. उसने देखा कि दूकान के ऊपर एक नया साइन बोर्ड लगा था. बोर्ड पर कुत्ते की तस्वीर थी. और लिखा था—यहां बकरे के नाम पर कुत्ते का मांस मिलता है!

आते-जाते लोग ठिठक कर बोर्ड को पढ़ रहे थे, पढ़कर हंस रहे थे!

सहसा उसकी दृष्टि सामने की दीवार पर पड़ी. वहां पोस्टर चिपका था—'आप कुत्ते का मांस खाते हैं. कुत्ते का मांस हमारी विशेषता है. दूकान याद रखिए. कुत्ते के मांस की एकमात्र दूकान, कसाई कठोर दिल की टूटी-फूटी सड़क के नुक्कड़ वाली दूकान!' पोस्टर पर उसका बड़ा-सा चित्र छपा था. पोस्टर के नीचे कुत्ते और बकरे के चित्र थे.

कसाई कठोर दिल का माथा ठनका. ऐसे पोस्टर सड़क सड़क पर लगे होंगे, गली गली में चिपके होंगे. अब उसका मांस कौन खरीदेगा?

उसके सामने चाय की ठेली वाला खड़ा था, उसे देख-देखकर मुस्करा रहा था. उसे देखकर मुस्करा तो सभी रहे थे, किंतु सबसे अधिक उसे ठेली वाले की मुस्कान कड़वी लगी—बिना दूध, बिना चीनी की कड़वी चाय-सी! तभी ठेली वाले का छोकरा मुस्कराता हुआ उसकी ओर बढ़ा. वह स्थानीय अखबार उसके सामने फेंकता हुए बोला—"पढ़ो, चचा, इसमें तुम्हारी दूकान का विज्ञापन छपा है. तुम्हारा नाम रोशन हो रहा है. विज्ञापन पढ़-पढ़ कर लोग तुम्हारी दूकान देखने आ रहे हैं. अपनी चाय खूब बिक रही है. तुम्हारा भला हो!"

कठोर दिल को बात चुभ गई. उसके मुख से एक गंदी गाली निकलते निकलते रह गई. अखबार में भी कुत्ते के मांस वाला विज्ञापन छपा था. उसका फोटो भी छपा था.

तभी उसे अशोक दिखाई दिया. उसके साथ मनीष था. कठोर दिल का दिल धड़क उठा. क्या कोई कसर रह गई है! अशोक के हाथ में माइक था. उसने कोई रेकार्ड बजाया. एक साथ अनेक कुत्तों के भौंकने का स्वर सुनाई दिया. कुछ ही क्षण में भौंकना रुदन में बदल गया. रेकार्ड रोक कर अशोक माइक को मुंह के सामने लाकर ऊंचे स्वर में बोला—"खुल गई! खुल गई!! खुल गई!!! आपके नगर में कुत्ते के मांस की दूकान खुल गई! आइए, आइए, आइए! स्वयं भी आइए, मित्रों को लाइए. कुत्ते का स्वादिष्ट मांस खाइए, कोठियों में दूध-बिस्कुट पर पले कुत्तों का स्वादिष्ट मांस—बकरे के नाम पर! आपके लिए कठोर दिल कोठियों के, गलियों के कुत्ते चुराता है. हमारे मोहल्ले के पांच कुत्ते आपको खिलाए जा चुके हैं! आपने उन्हें पसंद किया है! हम गवाह हैं, आइए आइए, आइए!"

कठोर दिल का रक्त उफन रहा था. वह रह-रह कर दांत पीस रहा था. उसे लोगों पर क्रोध आ रहा था. लोग अंधे हैं. निश्चय ही अंधे हैं. सामने बकरा लटका है. उसे कुत्ता समझ रहे हैं!

उसे लग रहा था कि वह पागल हो जाएगा. उसका मस्तिष्क चकरा रहा था. विशाल जनमत से टकराना कठिन है. छात्र-दल पीछे पड़ गया है, अब बचना कठिन है. आज पहला ही दिन है. ऐसे कब तक चलेगा? सब उसपर हंस रहे हैं. सब उससे, और उसकी दूकान से कतरा रहे हैं, जैसे वह संसार का एकमात्र अपराधी हो.

●

कसाई कठोर दिल को अपने यहां आते देखकर अशोक को कोई आश्चर्य नहीं हुआ. उसे, मनीष, राजेश को उसके वहां आने की पूरी आशा थी. वह तीनों बैठे उसी की बातें कर रहे थे.

"आओ, चचा कठोर दिल, जल्दी ही आ गए. हमसे अधिक प्रतीक्षा नहीं करवाई!" अशोक ने कहा.

कठोर दिल का चेहरा बुझा हुआ था. उसकी आंखों में भय व निराशा थी.

"अब क्या कहूं. कुछ कहने लायक मुंह तो नहीं

kissekahani.com

है, आप लोग दंड दे रहे हैं, दंड मुझे मिलना चाहिए, किंतु इतने कठोर मत बनिए!" कठोर दिल ने कोमल स्वर में कहा.

"अपनी करनी प्रत्येक को भुगतनी पड़ती है, तुम भी भुगत रहे हो. तुम्हारा अपराध छोटा नहीं है. तुमने लोगों के साथ बहुत बड़ा धोखा किया है. खरे पैसे लेकर खोटा माल दिया है. कोठियों से लोगों के कुत्ते गायब किए हैं. तुम्हारे अपराधों को देखते हुए यह दंड अधिक नहीं..." अशोक ने जज के स्वर में कहा.

"मुझे अपने किए का बहुत दंड मिल गया है, अशोक बाबू, अब बस कीजिए! मैं कहीं का नहीं रहा. शहर गली गली में बदनाम हो चुका हूं. यदि मेरा ऐसा ही बहिष्कार होता रहा, तो मेरा इस नगर में रहना कठिन हो जाएगा, मैं भूखा मर जाऊंगा. मैं अपने किए पर बेहद लज्जित हूं!" कठोर दिल ने आंखों में आंसू भरकर हाथ जोड़ते हुए कहा.

"इस बात का क्या प्रमाण कि तुम आगे से ऐसा नहीं करोगे?" मनीष ने पूछा.

"ऊपर वाला गवाह है, जो मैं कह रहा हूं, सच कह रहा हूं, अपनी बीवी के सुहाग को ध्यान में रखकर कह रहा हूं. जो मैं झूठ बोलूं, तो मेरी जबान में कीड़े पड़ें! मेरे बच्चे गली गली भीख मांगें!" कठोर दिल ने रुंधे गले से कहा.

"ठीक है! ठीक है! इस तरह गिड़गिड़ाओ नहीं. हमारा दिल नरम है. जल्दी ही पिघल जाता है. इस बार तुम्हें माफ कर दिया जाएगा. किंतु आगे से ऐसा हुआ, मिलावट की कोई शिकायत हुई, तो इस शहर से तुम्हारा बिस्तर-बोरिया गोल कर दिया जाएगा. जिस शहर में जाओगे, तुमसे पहले तुम्हारा इतिहास पहुंचा दिया जाएगा. हमारे हाथ बहुत लंबे हैं!" अशोक ने कहा.

"इस बार मुझे माफ कर दिया जाएगा न?" कठोर दिल को कुछ आशा बंधी.

"हां, किंतु दो शर्तें हैं और दोनों तुम्हें बिना चीं-चपड़ किए स्वीकार करनी हैं. चीं-चपड़ करोगे, तो शर्तें या दंड की अवधि या दोनों बढ़ा दी जाएंगी. पहली शर्त के अनुसार तुम्हें पच्चीस पच्चीस रुपये उन परिवारों को देने होंगे जिनके कुत्ते तुमने चुराए हैं. दूसरी शर्त के अनुसार अपनी दूकान में तुम्हें मिट्टी के पांच कुत्ते रखने होंगे जो तुम्हें हर समय तुम्हारे अनुचित कामों का एहसास कराते रहें!" मनीष ने कहा.

कठोर दिल कुछ देर सोचता रहा. फिर धीरे से बोला, "मुझे शर्तें स्वीकार हैं, किंतु इस बदनामी के बाद कौन मेरी दूकान पर आएगा!"

"ईमानदार रहोगे, तो सब आएंगे. आरंभ में हम, हमारे मोहल्ले वाले तुम्हारी सहायता करेंगे," राजेश ने कहा.

कठोर दिल तीनों को प्रणाम करके बाहर निकल गया. उसके निकलते ही तीनों ने हाथ मिलाया.

"यह तो आरंभ है! और आरंभ अच्छा हुआ, अब हम समाज के अन्य द्रोहियों से टक्कर लेंगे!" अशोक के स्वर में संकल्प था. ●

सी-डी-२, सेक्टर-३, पोस्ट ध्रुवा, रांची.

छोटी छोटी बातें—

—सिम्स

"'चांद' पर पहुंचकर सबसे पहला काम क्या करोगे?"

"हः हः! सबसे पहले उसपर एक टोला लगाऊंगा!"

कहानी

बोलती तस्वीर

www.kissekahani.com

वह एक खूबसूरत कैलेंडर था. राज को उसके पिता जी ने बताया था कि वह चित्र, जो उस कैलेंडर पर छपा था, सरस्वती का है. और यह भी कि वह विद्या की देवी हैं और लिखाई-पढ़ाई का विभाग उन्हींके जिम्मे है. सरस्वती के दो हाथों में वीणा थी, तीसरा एक पुस्तक थामे था और चौथा जैसे सदैव आशीर्वाद देता था. वह कैलेंडर किसी पुस्तक छापने वाली फर्म का था और इसे राज के पिता जी ने लाकर उसकी पढ़ने वाली मेज के ऊपर लगा दिया था—ठीक टेबल-लैंप के सामने.

वह पढ़ते पढ़ते जब उकता जाता और दृष्टि उठाता, तो पाता कि सरस्वती का वह सौम्य चेहरा मुस्करा रहा है और उसे अधिक परिश्रम करने के लिए प्रेरित कर रहा है. वह भी मुस्कराता और फिर पढ़ने में जुट जाता. उसे वह दिन याद है जब पहली तिमाही परीक्षा में उसने सर्वाधिक अंक प्राप्त किए थे और परीक्षा-फल लिये वह अपने कमरे में आया था. कमरे में घुसते ही उसकी दृष्टि उस कैलेंडर पर पड़ी थी. उस दिन और दिनों से अधिक मुस्कान उस चेहरे पर थी. लगभग ऐसा ही तब हुआ जब उसने लायब्रेरी की वह किताब, जो उसके पास छठी कक्षा से पड़ी थी और जिसे उसने कभी न लौटाने की नीयत से उठाया था, वापस कर दी थी. उस दिन भी उसे लगा था कि उस चित्र ने उसे शाबाशी दी थी. ऐसे अनगिनत दिन उसे याद थे, परंतु आज क्या हुआ?

आज जब वह, सूरज छिपने के बहुत बाद सबकी नजरों से बचता अपने कमरे में घुसा, तो उसकी दृष्टि सीधी उसी दीवार पर, उसी कैलेंडर पर गई. उसका हृदय धक् से रह गया. वह चेहरा जैसे एकदम बदल गया था. चेहरे पर फीकी-सी हंसी थी और आंखें बहुत गंभीर थीं. राज फिर दुबारा नजर न उठा सका और कमरे से बाहर निकल आया.

आज शाम जब राज स्कूल से बाहर निकला, तो उसकी भेंट अपने एक ऐसे मित्र से हो गई, जो पिछले साल स्कूल छोड़ चुका था और जिसने पढ़ाई से हमेशा-हमेशा के लिए मुख मोड़ लिया था. बातों ही बातों में उसने राज को बताया कि अब वह एक ऐसी जगह काम करता है जहां हर शाम को लोग चोरी-छिपे जाते हैं. वह जगह एक छोटे-से होटल में है, जहां लोग जाकर जूआ खेलते हैं. वह मित्र, जिसका नाम ठाकुर था, बातों ही बातों में राज को वहां ले गया. वह एक छोटा-सा होटल था, जिसके चारों ओर बड़ी बड़ी इमारतें थीं. वह होटल इतना गंदा था कि राज उसे दूर से देखने पर ही लौटने लगा. परंतु ठाकुर ने उसका हाथ पकड़ लिया.

"देख, राज, छठी क्लास से तू एक साइकिल खरीदने का सपना देखता आ रहा है. मुझे मालूम है कि तेरे पिता जी इतनी कीमती चीज खरीदने में असमर्थ हैं. तू खुद ही क्यों नहीं कोशिश करता?"

"साइकिल तो दो सौ रुपये से भी अधिक की आती है. मेरे पास तो सिर्फ एक पांच का नोट है, वह भी मम्मी ने स्कूल से लौटते समय कुछ सामान लाने के लिए दिया है. उसे मैं कैसे खर्च कर सकता हूं?"

"तू निरा मूर्ख है रे! आ, मैं तुझे दिखाता हूं कि कैसे तू साइकिल भी खरीद सकता है और मम्मी के रुपये भी लौटा सकता है; आ, मेरे साथ आ!"

राज जैसे खिंचा हुआ ठाकुर के पीछे पीछे चला गया था. चारों ओर ऐसे ऐसे लोग नजर आ रहे थे जिनके चेहरों तक से धूर्तता टपक रही थी और उनके कपड़े इतने गंदे थे कि उनमें से दुर्गंध निकल रही थी. उसका दिल धड़कने लगा. मन बार बार लौटने की चेतावनी दे रहा था. पर एक तो ठाकुर ने उसका हाथ इतनी सख्ती से पकड़ा हुआ था कि वह छुड़ाने में असमर्थ था और दूसरे साइकिल का आकर्षण भी उसे खींच रहा था.

ठाकुर उसे उस दूकान के पिछवाड़े ले गया, जहां एक छोटे से कमरे में कुछ लोग जमा थे. कमरे के बीचों-

kissekahani.com

बीच एक गोल बर्तन था जिसमें कुछ अंक खुदे थे. एक गोली को उसमें घुमाया जाता था और वह गोली जिस नंबर पर रुक जाती थी, उसी नंबर वाला व्यक्ति जिसने पहले से ही वह नंबर अपने लिए चुन रखा होता था, जीत जाता था. राज ने देखा कुछ लोगों के चेहरे उतरे हुए थे. वह बात-बात पर खीझ उठते थे. उसने अनुमान लगाया, शायद ये वे लोग हैं जिनका भाग्य उनका साथ नहीं दे रहा. कुछ लोग खुश थे और उछल रहे थे, ये आज अच्छा भाग्य लेकर आए थे.

ठाकुर ने उसके हाथ से रुपये ले लिये और दावं पर पैसे लगाने आरंभ किए. राज को उस खेल के नियम मालूम नहीं थे अतः वह खड़ा खड़ा देखता रहा. कभी ठाकुर ढेर सारे रुपये समेट लेता था और कभी कंधे उचका कर दिखा देता था कि भाग्य साथ नहीं दे रहा. अंत में जब जूआ समाप्त हुआ, तो दूकान से बाहर निकल कर ठाकुर ने राज के हाथ में दस रुपये रख दिये. राज को आश्चर्य हुआ. उसने अपनी आंखों से ठाकुर को अंतिम खेल में ढेर सारे रुपये जीतते देखा था. ठाकुर चतुर था. बोला—"देख, मैंने तेरे पैसे दुगने कर दिए हैं. बाकी से तुझे क्या मतलब? कल फिर आना. तेरा भाग्य अच्छा है. साइकिल तू जल्दी खरीद लेगा."

घर लौटकर उसने मम्मी को तो देर से लौटने का झूठा कारण बताकर संतुष्ट कर लिया था, परंतु वह उस तस्वीर को कैसे संतुष्ट करता? उसकी तो अपने कमरे में कदम रखने की ही हिम्मत नहीं थी. बहुत रात गए वह सिर नीचा किए अपने कमरे में घुसा और सीधा पलंग पर जाकर सो गया. सुबह तक उसने फैसला कर लिया था कि अब वह दुबारा उस गंदी दूकान में जूआ खेलने नहीं जाएगा और अगर ठाकुर उसके पास आएगा, तो वह साफ साफ मना कर देगा.

परंतु अगले दिन वह ठाकुर की बातों में फिर आ गया. उसके कदम अनचाहे फिर उसी दूकान की ओर मुड़ गए. उस दिन राज ने चतुराई से काम लिया. पैसे ठाकुर के हाथ में देने के बदले वह स्वयं खेला और

— मधुजय वाचस्पति —

और बहुत जीता. लौटते समय ठाकुर को एक पांच का नोट, उसके मेहनताने के रूप में देने के बाद भी उसकी जेब में बत्तीस रुपये थे. अगर वह इसी प्रकार जीतता रहा, तो जल्दी ही साइकिल उसके पास होगी. परंतु वह पिताजी को रुपयों के बारे में कैसे बताएगा? यह एक समस्या थी, लेकिन इसके बारे में बाद में भी सोचा जा सकता था.

दूसरे दिन भी राज फिर कमरे के दरवाजे पर आकर ठिठक गया. कल वाला अनुभव आज उसे फिर हुआ. फिर उसने सोचा कि उसका एक चित्र मात्र से डरना निहायत मूर्खता है. अगर उसके मित्र सुनेंगे, तो उस पर हंसेंगे. उसने फौरन कैलेंडर के चित्र वाले हिस्से के फाड़ कर कई टुकड़े किए और खिड़की से बाहर फेंक दिए. अब उसके हृदय में झांकने वाला कोई नहीं रहा. वह अब जब चाहेगा कमरे में आएगा और जिस दिन चाहेगा देर से लौटेगा.

kissekahani.com

उसके बाद लगभग हर शाम को उसके पैर उस दूकान की ओर अपने आप बढ़ जाते. अब उसका केवल ठाकुर ही मित्र नहीं था, अपितु ढेर सारे आवारा लड़के उसके साथी बन गए थे. पहले उसने निश्चय किया था कि जिस दिन उसके पास साइकिल खरीदने भर के पैसे हो जाएंगे वह उस गली का मुंह भी नहीं देखेगा, परंतु धीरे धीरे उसने पहले दो-तीन दिनों में जितना जीता था वह सब खो दिया.

●

शायद उस दिन सोमवार था. वह घर से कहकर चला था कि उस दिन ड्रिल है वह देर से लौटेगा.

छुट्टी होने के बाद ठाकुर उसे गेट पर ही मिल गया. दोनों जल्दी जल्दी उस दूकान की ओर बढ़ चले. उस दिन वहां और दिनों की अपेक्षा कुछ अधिक भीड़ थी. एक दिन पहले लोगों को वेतन जो मिला था. राज और ठाकुर भीड़ में से रास्ता बनाते हुए जूए वाली मेज के पास जा खड़े हुए. दोनों ही यह निश्चय करके आए थे कि वह पांच बार से अधिक जूए में दांव नहीं लगाएंगे, परंतु खेल आरंभ होते ही जैसे वह यह भी भूल गए कि उन्हें वापस लौटना है.

राज बहुत रुपये जीत गया था. उसने अनुमान लगाया कि साइकिल खरीदने के लिए अब उसे बहुत थोड़े से रुपयों की ही आवश्यकता है. इसलिए उसे यह खेल अब बंद कर देना चाहिए. लेकिन तभी एक घटना घट गई. राज ने जिस नंबर पर पैसा लगाया था, उसी पर एक मोटे मूंछों वाले व्यक्ति ने भी लगाया था. जब उस नंबर पर पैसा आया तब उस मूंछों वाले व्यक्ति ने आगे बढ़कर सारा पैसा अपनी जेब में रख लिया. राज को बहुत गुस्सा आया, पर क्या करता. ठाकुर ने यह सब देख लिया था. उसने जाकर उस मोटे व्यक्ति की तोंद पर एक धौल जमाई. बोला—"हमें बच्चा समझकर बेईमानी करता है! पैसे निकालो!" ठाकुर और राज के वहां बहुत से मित्र भी बन गए थे. वे भी उन दोनों की सहायता के लिए आ पहुंचे. सारे कमरे में गुलगपाड़ा मच गया. तभी एक मोटा बांस का डंडा लिए, मालिक अंदर आ गया. उसको देखते ही कमरे में शांति छा गई. वह गरजा—"यह क्या हो रहा है?"

"दो बच्चे जूआ खेलने अंदर घुस आते हैं. उन्हीं के कारण आज यह सब हुआ है," किसी ने बताया.

"इनसे सब पैसे छीन लो और इन्हें बाहर निकाल दो. देखना आइंदा ये फिर कभी अंदर न घुसें."

दो बैरों ने आकर उन्हें पकड़ लिया और बाहर ले जाने लगे. ठाकुर चिल्लाया—"मैं यहां के सब भेद खोल दूंगा. तुम लोग जूआ खेलने के साथ अफीम भी बेचते हो. मुझे सब पता है!"

मोटा मालिक बाहर जाते जाते रुक गया. एक आदमी चिल्लाया—"मालिक इन्हें न छोड़ना. ये पुलिस के जासूस लगते हैं. ये जरूर यहां की टोह लेने आए होंगे!" मालिक ने दोनों बैरों को संकेत किया. दोनों बैरे राज और ठाकुर को बाहर ले जाने के बजाय दूकान के अंदर की ओर ले गए. वहां उन्हें एक कमरे में ढकेल कर बाहर से कुंडा लगा दिया गया. जाते जाते बैरे कह गए—"मालिक अभी दोनों से मिलने आएंगे, तब तक आप लोग आराम कीजिए."

राज रोने लगा. ठाकुर ने राज को रोते हुए देखा, तो बोला—"देख, राज, मैं जानता हूं, तू मुझसे बहुत गुस्सा है. जो कुछ तेरे साथ हुआ है वह मेरे कारण ही. अगर मैंने तुझे सब्ज बाग न दिखाए होते और जूए की गंदी लत न लगाई होती, तो तू आराम से इस समय घर पर होता. पर देख, इस समय तू यह भी जानता है कि अगर हिम्मत से काम नहीं लिया गया, तो यह दूकान का मालिक हमें और तंग करेगा. अब वह हम दोनों को फुसलाएगा और बदमाश लोगों के दल में शामिल करने का प्रयत्न करेगा. हम दोनों को अभी यहां से निकल भागना है. तू देख मेरा कमाल!" उसके बाद ठाकुर उस कमरे के निरीक्षण में लग गया.

●

उस कमरे में कोई खिड़की नहीं थी. दीवार में बहुत ऊंचे पर बना हुआ एक छोटा-सा रोशनदान था. बाकी वहां कोका-कोला की बोतलों की पेटियां रखी थीं. अभी ठाकुर खाट पर कुर्सी और कुर्सी पर कोका-कोला की पेटी रख, उस रोशनदान तक पहुंचने का प्रयत्न कर ही रहा था कि दरवाजा खुला और कमरे में मोटा मालिक घुसा. उस कमरे में इतनी तरह की वस्तुएं अस्तव्यस्त पड़ी थीं कि उसने ठाकुर द्वारा बनाई हुई उस मीनार पर कोई ध्यान नहीं दिया.

"तुम दोनों का घर किधर है?" उसने उन दोनों से पूछा, जो चुपचाप एक टूटी पेटी पर बैठ गए थे.

राज घर का ध्यान आते ही रोने लगा. ठाकुर ने उत्तर दिया—"इसका घर बड़े पोस्ट आफिस के पास है और मेरा किशन बस्ती में."

"मैं तुम दोनों के घर जाकर बताऊंगा कि तुम दोनों जूआ खेलते हो और फिर दूकान में चोरी भी करते हो!" मोटे मालिक ने उन्हें डराने का प्रयत्न किया.

ठाकुर दिलेर था, बोला—"और यह क्यों भूल जाते हो कि मैं सबको बतला दूंगा कि यहां पर अफीम और गांजा बिकता है. पुलिस अगर हमें जूआ खेलने के लिए पकड़ेगी, तो दूकान की भी तो तलाशी लेगी."

"अच्छा, तो तू दादा बनने की कोशिश करता है! यह बता अगर मैं तुझे यहीं कैद रखूं, तो?"

"मेरे घर के लोग जानते हैं कि मैं बिगड़ा हुआ लड़का हूं और रोज यहां जूआ खेलने आता हूं. फिर ढेर सारे ग्राहकों ने भी तो देखा है कि कैसे तुमने हमें यहां बंद किया है!"

मालिक सिर खुजाने लगा. ऐसा दबंग लड़का

kissekahani.com

उसने पहले कभी नहीं देखा था. उसने कहा—"अच्छा अगर मैं तुम्हें छोड़ दूं, तो?"

"हम किसी से कुछ नहीं कहेंगे, मगर जितना पैसा हमसे छीन लिया गया है, वह सब हमें लौटा दो."

"कितना पैसा तुमसे लिया गया है?"

"पचास रुपये के लगभग इसका था और मैंने आज सत्तर रुपये जीते थे."

"ठीक है, अगर तुम झूठ नहीं बोल रहे होगे, तो तुम्हें पैसा वापस मिल जाएगा. आओ मेरे साथ."

अभी मालिक दरवाजे से बाहर भी नहीं निकला था कि एक आदमी दौड़ता हुआ आया और मालिक को संकेत से बाहर ले गया. बाहर दोनों में कानों ही कानों में कुछ बात हुई और उसके बाद मालिक दौड़ता हुआ बाहर चला गया. आने वाले आदमी ने दोनों को अपने साथ चलने का आदेश दिया और बजाय बाहर ले जाने के उन्हें और अंदर की ओर ले चला. अगले कमरे में एक कोने में एक बड़ा खाली ड्रम रखा था. साथ आने वाला आदमी बोला—"मालिक ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं अभी थोड़ी देर तुम दोनों को और यहीं रखूं. तुम्हें छोड़ दिया जाता, परंतु कुछ ऐसी बात हो गई है कि तुम्हें थोड़ी देर यहां रुकना पड़ेगा."

राज ने विरोध करना चाहा, परंतु ठाकुर ने जो दूकान में असामान्य रूप से उठने वाले शोर को सुनने का प्रयत्न कर रहा था, राज का हाथ दबा उसे चुप रहने का संकेत किया. उस आदमी ने उस ड्रम के ऊपर एक और ड्रम रखा. वह एक तिपाई के सहारे ऊपर चढ़ गया और फुसफुसा कर उन्हें भी ऊपर आने का इशारा किया. जब दोनों में से कोई भी ऊपर चढ़ने को तैयार नहीं हुआ, तो आदमी फुसफुसाया—"बाहर पुलिस आ गई है और जो भी जूआ खेल रहे थे, उन्हें पकड़कर ले जा रही है. अगर तुम भी पुलिस के मेहमान बनना चाहते हो, तो बाहर जा सकते हो. मालिक तुम पर रहम कर तुम्हें छुपाना चाहता था, पर जैसी तुम्हारी इच्छा!" और यह कहकर वह एक रोशनदान से उधर कूद गया, जो वास्तव में एक गुप्त कमरे की खिड़की थी. ठाकुर ने राज को ऊपर चढ़ने का संकेत किया और जल्दी से बंदर की तरह उछलकर ड्रमों पर चढ़ गया. राज ने भी, जो पुलिस के नाम से ही घबराता था, चढ़ने में विलंब नहीं किया. जब दोनों उस आदमी के पीछे पीछे गुप्त कमरे में कूद गए, तब उसने उन दोनों को थोड़ी देर कमरे में आराम करने को कहा और स्वयं खिड़की बाहर से बंदकर ड्रमों को हटाने चला गया.

कमरे में सीलन की बदबू थी और हवा आने के लिए कमर में मात्र एक बड़ी दरार थी. कमरे में केवल बोरियां थीं, जिनमें गेहूं भरा था, सामने एक लकड़ी का दरवाजा भी था, जिससे एक और छुपे कमरे का आभास होता था.

दोनों मन मारे बोरियों के ऊपर बैठ गए. एक स्थान से निकले, तो दूसरी जगह जा फंसे!

मार्ग ही खराब

एक बार एक सेठ जी सो रहे थे. एक चूहा कहीं से आया और उनके ऊपर से निकल गया. चूहे का ऊपर से निकलना था कि सेठ जी ने रोना-चिल्लाना शुरू कर दिया. उनको इस प्रकार रोते-चिल्लाते सुनकर उनके घर वाले व पास-पड़ौस के लोग दौड़कर उनके पास पहुंचे और पूछा—"क्या हुआ? रो क्यों रहे हैं आप?"

सेठ जी ने रोते रोते ही कहा—"मेरे सीने पर से अभी अभी एक चूहा निकल गया."

बात सुनते ही सभी हंस पड़े. कहा—"अरे, तो इसमें रोने की क्या बात है? चूहा ही तो था, शेर तो नहीं!"

तब सेठजी ने कहा—"मैं कोई चूहे के डर से नहीं रोया. एक की बजाय सौ चूहे निकल जाएं, तो मैं परवाह नहीं करता. किंतु यह रास्ता ही खराब है. आज चूहे ने मार्ग बनाया है, तो कल इधर से सांप निकलेंगे. मैं तो इस बुरे मार्ग की भावी आशंका से भयभीत हुआ हूं. यदि आज सहज ही यह रास्ता बन गया, तो कल सांपों को इस रास्ते से चलते हुआ कौन मना करेगा?"

और सब लोग सेठजी का मुंह ताकने लगे.

(राजस्थानी लघुकथा)

—हसनजमाल छीपा

"अब हम यहां से कभी नहीं छूटेंगे!" राज बोला. "क्यों?"

"वह मोटा मालिक हमें अपने सारे गुप्त कमरे दिखाकर क्यों छोड़ने लगा?"

ठाकुर ने कुछ देर सोचने के बाद उत्तर दिया—"तो फिर हमीं यहां से निकलने की जुगत लड़ाएंगे. तू तो साहस ही छोड़े दे रहा है. थोड़ा धीरज रख!" परंतु राज दोनों हाथों में सिर थामे चुपचाप बैठा रहा.

लगभग दो घंटे बीत गए. दोनों के पेट में चूहे कूद रहे थे. आधी छुट्टी में राज ने जो आधा परांठा खाया था, उसके बाद उसने एक गिलास पानी भी नहीं पिया था. कमरे में घुटन भी बहुत थी, दोनों पसीने से लथपथ थे.

थोड़ी देर बाद खिड़की खुली और मालिक अंदर आया. उसके हाथ में कागज में लिपटी कोई वस्तु थी, जो उसने ठाकुर के हाथ में दे दी. वह बोला—"मैं तुम्हें छोड़ देना चाहता था परंतु न जाने किस बदमाश ने पुलिस को फोन कर दिया. अगर मैं तुम्हें उस समय बाहर जाने देता, तो पुलिस तुम्हें भी साथ ले जाती. मगर मुझे तुम पर तरस आता है. जब तक पुलिस नहीं चली जाती तब तक तुम यहीं आराम करो. ये परांठे

(शेष पृष्ठ ५५ पर)

kissekahani.com

एक साहसिक यात्रा-कथा

तट से

नहर के किनारे बैठे, पिकनिक पर आए बच्चों ने खूब खा-पीकर बचा-खुचा सामान इधर-उधर फेंक दिया, जिसमें डबल रोटी, शाक-सब्जी, पत्ते और बिस्कुटों के रैपर आदि शामिल थे. यह सामान नहर के किनारे बेतरतीबी से बिखरा पड़ा देखकर एकाएक किसी ने बाल्टी भर पानी उलटा और सारा कूड़ा-करकट एक झटके के साथ नहर के पानी में जा मिला. इसी कूड़े-करकट में डबल रोटी का वह टुकड़ा भी बह निकला, जिसपर चारों ओर से खूब जैम और मक्खन लिपा-पुता था और सत्रह चींटियों का दल उसपर अपनी पिकनिक मना रहा था.

एकाएक झटका खाकर सारी चींटियां चौंक पड़ीं और सबने घबराकर इधर-उधर देखा. चारों ओर पानी ही पानी और पानी का ठाठें मारता विशाल समुंदर. अब नन्ही-मुन्नी चींटियों के लिए तो समुंदर ही था वह. और समुंदर में ठाठें मारतीं लंबी-चौड़ी लहरें, और लहरें मानो मौत की लपलपाती जीभें! और यह चटोरी जीभें जाने कब एक ही बार लपलपा कर चाट जाएं इन सत्रहों जानों को, डबल रोटी के जैम और मक्खन लगे टुकड़े को चाट का पत्ता समझकर!

डबल रोटी का टुकड़ा उस लंबी-चौड़ी नहर में बहा जा रहा था और चारों ओर देख-देखकर सत्रहों चींटियों के प्राण खुश्क हुए जाते थे. सामने ही मौत और निश्चित मौत को देखकर घबराहट में सबसे छोटी उम्र वाली चींटी ने बूढ़ी चींटी से कहा, "हाय, मैं क्या करूं, अम्मी जान! हमारा नन्हा-सा जलयान और इतना जल! हम सब यों ही डूब जाएंगी क्या?"

बूढ़ी चींटी ने साहस बटोरते हुए दिलासा देने वाले स्वरों में प्यार से कहा, "मेरी नन्ही, घबरा मत. बड़ों ने कहा है कि बड़ी से बड़ी मुसीबत में भी हिम्मत नहीं हारनी चाहिए. और चींटियों की जाति तो हजारों बार ऐसी अग्नि-परीक्षा दे चुकी है. थोड़ा-बहुत हिम्मत से काम ले और कुछ देर को सब्र कर, ताकि मैं कुछ तरकीब सोचूं. वरना यह पानी, जरा भी हिम्मत छोड़ी तो सबको लील जाएगा एक ही झटके में. शी...शी... शी..." सहसा उसके मुंह से निकला, "संभलकर! संभलकर!" उसने देखा, डबल रोटी के किनारे खड़ी होकर बहते पानी को कातर दृष्टि से देखती एक दूसरी चींटी अचानक नीचे फिसल गई थी और डबल रोटी के किनारे को छूता पानी बार-बार उसे अपनी ओर घसीट ले जाना चाहता था. "शी...शी...शी..." बूढ़ी चींटी ने घबराकर सबको सचेत किया और सारी चींटियां उसकी मदद के लिए किनारे पर उसके इर्द-गिर्द जा पहुंचीं. मगर उसके नज़दीक कोई न गई. पानी के तेज थपेड़े और नन्ही-सी चींटी की जान! अब कौन अपनी जान जोखिम में डालकर डबल रोटी के ढलुआ किनारे से नीचे उतरे और छोटी चींटी की रक्षा करे.

"राम राम राम! मरी, तू इधर आई ही क्यों थी?" बेचैनी से इधर-उधर चक्कर लगाती एक चींटी ने क्रोध भरे शब्दों में कहा.

और सबने देखा, पानी के थपेड़े बदस्तूर जारी हैं और नन्ही चींटी मक्खन में अपने हाथ-पांव गड़ाए डबल रोटी के किनारे को पकड़े रहने में मशगूल है, मगर बार-बार पानी की चपेट से उसके हाथ-पांव खिसक-खिसक जाते हैं. हर पल ऐसा महसूस हो रहा था कि छोटी चींटी अब गई, अब गई.

"लो, गई!" पानी के झटके से छोटी चींटी के हाथ-पांव छूटते देखकर एक चींटी किनारे से चिल्लाई. लेकिन छोटी चींटी ने झटपट फिर किनारे की मक्खन वाली दलदल में अपने हाथ-पैर गड़ा लिये.

सबको हाथ पर हाथ धरे खड़े देखकर बूढ़ी चींटी ने ललकारते हुए कहा, "अरी जालिमो, देख क्या रही हो! कोई खेल-तमाशा है यह? आगे आओ और ईश्वर का नाम लेकर डूबने वाली को बचाओ. नहीं तो मिलकर डूब मरो सब इसी पानी में!"

आज्ञा सुनकर सारी चींटियों के चेहरों का रंग उड़ गया. लो जी, करे कोई भरे कोई! यानी आप

kissekahani.com

घूर कर

तो पानी पीने के लिए समुंदर में जा गिरें और दूसरे लोग आपको भंवर के बीच टोहते फिरें कि कहां गायब हो गई है दुधमुंही! अब यह भी हमारा ही कसूर है जो समुंदर के पानी को शर्बत की बूंद समझकर यह शैतान की आंत इधर खिंची.

मगर कुछ क्षण रुककर, चींटियों में से कुछ एक ने डरते डरते पानी के थपेड़ों से जूझती टकराती डबल रोटी के किनारे चिपटी छोटी चींटी की ओर धीरे धीरे कदम बढ़ाए. सबसे आगे दो तैराक चींटियां धीरे-धीरे साहस बटोर कर बढ़ीं. फिर उन्होंने अपने हाथ-पांव अच्छी तरह मक्खन में गड़ाकर दोनों ओर से छोटी चींटी को मुंह में जकड़ लिया और ऊपर की ओर जोर लगाया, मगर छोटी चींटी अपनी जगह से टस से मस न हुई. वह दरअसल इस कदर डर गई थी कि किनारा छोड़ने को तैयार ही न होती थी. ऊपर खड़ी कुछ चींटियां जिंदगी और मौत की रस्साकशी का यह खौफनाक दृश्य देख रही थीं. उनमें से एक चिल्लाई, "अरी कंबख्त, हाथ-पांव तो ढीले कर, ताकि ये तुझे ऊपर को खिसकाएं. कहीं अपने साथ इन्हें भी न ले मरना!"

आखिर, हिम्मत करके छोटी चींटी ने हाथ-पांव ढीले किए. तैराक चींटियों ने पूरा जोर लगाकर झटके के साथ उसे ऊपर खींचा. 'बोल चींटा महाराज की जय!' सब चींटियों ने एक साथ नारा बुलंद किया. छोटी चींटी ऊपर आ गई. उसके साथ ही पानी के छींटों में भीगकर भागी भागी आई तैराक चींटियां कि कहीं उनका नंबर न आ जाए. तीनों भीगे हुए प्राणी रेंगते हुए डबल रोटी की चोटी पर जा चढ़े और भयभीत नजरों से पानी की ओर देखने लगे. उनके साथ ही अन्य चींटियां भी उनके इर्द-गिर्द इकट्ठी हो गईं. बूढ़ी चींटी के चेहरे पर डांटने जैसी क्रोध की मुद्रा और छोटी चींटी के बच जाने की खुशी उभर आई. उसने तैराक चींटियों को शाबाशी वाली नजरों से देखा और फिर छोटी चींटी को घूर कर बोली, "खबरदार, अगर अब कभी बगैर पूछे इधर-उधर गईं!" फिर सब खामोश हो गईं.

बूढ़ी चींटी और उसके इर्द-गिर्द अन्य सारी चींटियां एकत्र होकर डबल रोटी के टुकड़े की चोटी पर चढ़ी भयभीत दृष्टि से पानी को देख रही थीं, तभी नन्ही चींटी बोली, "भूख के मारे पेट में ऐंठन होने लगी है."

एकाएक सबको अपने अपने पेट की ऐंठन का खयाल आया और बूढ़ी चींटी की अनुमति से सबकी सब इधर-उधर लगे जैम से अपनी क्षुधा शांत करने लगीं. जब सब अच्छी तरह खा-पी चुकीं तो बूढ़ी चींटी ने कहा, "भोजन सोच-समझ कर करो. राशन कम है और यात्रा की अवधि कितनी है, किसी को पता नहीं. बाद में 'भूख से मरो या डूब के मरो' वाली नौबत न आ जाए!"

सुनकर सब चींटियां एक बार फिर किसी गहरी आशंका से भयभीत हो उठीं. बूढ़ी चींटी डबल रोटी की चोटी पर खड़ी शोर करते पानी का दृश्य देख रही थी. एकाएक उसे खयाल आया कि हम जिस चीज पर यात्रा कर रहे हैं, यह लकड़ी की नाव तो है नहीं, डबल रोटी का एक मामूली टुकड़ा है जिसमें किसी भी क्षण पानी भर सकता है. वह तो किस्मत अच्छी थी जो इसके चारों ओर ऊपर-नीचे मक्खन और जैम इस तरह लिपटा

— वीरकुमार 'अधीर' —

हुआ है कि पानी को अब तक कोई सूराख नहीं मिला. वरना नाव में छेद हो जाए तो डूबने वाले का भगवान ही मालिक है. अभी तक तो सब कुछ सही-सलामत था, मगर आने वाले खतरे की पूर्वसूचना उसे पहले से ही मिल गई. उसने गौर से देखा कि छोटी चींटी ने जान बचाने के लिए जिस जगह पर अपने हाथ-पांव गड़ाए थे, वहां से मक्खन धीरे धीरे अपनी जगह छोड़ रहा है और सुई के बराबर एक छेद उस जगह पर पैदा हो जाने की संभावना है. उसने सबका ध्यान इस ओर आकृष्ट कराया. सबने घबराहट में उस ओर देखा. क्या किया जाए, सब सोचने लगीं, क्योंकि यान के हिलने-डुलने से वह हिस्सा रह-रह कर पानी में डुबुक-डुबुक हो रहा था. जहां पांव गड़ाकर कुछ देर अपने आप भी खड़े रहना खतरे से खाली न हो, वहां कौन मौत को गले लगाकर उस छेद को भरने की हिम्मत करे.

अभी इस बात पर विचार हो ही रहा था कि एक चींटी दूसरी ओर देखकर सहसा ही चिल्ला उठी. उस ओर पानी भयंकर आवाजें करता हुआ हहरा रहा था. शोर सुनकर सबकी नजरें सहसा उस ओर पहुंच

kissekahani.com

गई. देखा, तो सबके हाथों के तोते उड़ गए, काटो तो खून नहीं. सामने ही नहर का पानी तेज आवाज करता हुआ, झरने के रूप में हहराता हुआ चार-छह फुट नीचे जाकर गिर रहा था. यह भयंकर प्रपात और चींटियों की यह छोटी-सी नाव! ऐसे में कैसे सलामत रहेगी! बड़ी मुश्किल है. एक मुसीबत से निपटे नहीं कि दूसरी सामने आ खड़ी हुई!

"खबरदार! जो जहां खड़ा है उसी स्थान को अपनी-अपनी टांगों से जकड़ ले और जो हिस्सा सामने आए उसे कसकर पकड़ ले," सहसा बूढ़ी चींटी ने चीखकर सबको सावधान किया और अपने आप को संयत करते हुए, नजदीक आते झरने के मुंह की ओर भयभीत दृष्टि से देखा. झरने का मुंह उन सबको उस समय साक्षात् मौत का मुंह मालूम हो रहा था और रोटी के टुकड़े से तन-मन का जोर लगाकर चिपटी हुई सब चींटियां उसी ओर देख रही थीं. बूढ़ी चींटी ने अंतिम बार ऊंचे आकाश की ओर मुंह किया और फिर सबको भगवान के भरोसे छोड़ दिया. डबल रोटी का टुकड़ा तेजी से झरने के मुंह की ओर बढ़ा आ रहा था.

बूढ़ी चींटी ने एक बार फिर सबको चेतावनी दी, "सब अपने-अपने स्थानों को कसकर पकड़े रहना!" वह इतना कह ही पाई थी कि डबल रोटी का टुकड़ा झरने के मुंह में जाकर समा गया. क्षणभर को जैसे सब चींटियां चेतनाशून्य हो गईं. रोटी का टुकड़ा हहराते हुए पानी के साथ हिचकोले खाता छह फुट नीचे पानी में छपाक् से जा गिरा. एक बार सब चींटियों के सिरों पर पानी की लहरें दौड़ गईं. ऊपर से बूंदों की फुहार की मार! अब तक सबकी आशाओं पर पानी फिर चुका था.

●

कुछ क्षण बाद, आश्वस्त होते हुए बूढ़ी चींटी ने सिर ऊपर उठाकर देखा, सबके शरीर पानी से बुरी तरह भीग गए थे और डर के मारे थर-थर कांपती हुई सब चींटियां अपने-अपने स्थान से चिपटी हुई थीं. लेकिन यह देखकर उसे खुशी हुई कि कोई दुर्घटना नहीं हुई थी और सत्रह की सत्रह जानें अपने-अपने स्थानों पर सही-सलामत विद्यमान थीं. उसने एक संतोष की सांस ली. आकाश में दूर तक सुनहली धूप फैली हुई थी और डबल रोटी का टुकड़ा अब फिर पूर्ववत् बहने लगा था. उजली सुनहली धूप में वह अपने स्थान से रेंग कर थोड़ा ऊपर आई. उसे हिलते देखकर अन्य चींटियां भी अपने-अपने स्थानों से रेंगीं और एक स्थान पर उसके इर्द-गिर्द एकत्र हो गईं. केवल नन्ही चींटी अपने स्थान से चिपटी हुई डर के मारे अब भी थर-थर कांप रही थी. बूढ़ी चींटी दौड़कर उसके पास पहुंची और उसे समझाया, "डर मत, अब खतरा टल चुका है."

नन्ही चींटी ने सिर उठाकर भय से चारों ओर देखा और फिर कातर नेत्रों से बूढ़ी चींटी की ओर देखकर पूछा, "आखिर कब तक यों ही चलता रहेगा?"

बूढ़ी चींटी ने उसे अपने नजदीक घसीटते हुए कहा, "तू क्यों फिक्र के मारे दुबली हुई जाती है? तेरे से पहले हम सोलह जानें जाएंगी, तब कहीं तेरा नंबर आएगा!"

सब चींटियां नन्ही चींटी की इस दशा पर मुस्करा दीं और कुछ देर पूर्व के संकटकाल का खौफनाक दृश्य सबके प्राण बच जाने की खुशी के वातावरण में बदल गया. बूढ़ी चींटी ने नन्ही चींटी को प्यार से ऊपर घसीटते हुए कहा, "इधर आकर धूप में बदन सुखा ले, नहीं तो निमोनिया हो जाएगा!"

फिर सब चींटियां सुनहली धूप में अपना भीगा बदन सुखाने में मशगूल हो गईं. कुछ देर पहले का खौफ सबके दिलों से निकल गया था. मगर उसका कोई न कोई अंश बाकी जरूर था, इसलिए अपने स्थान से कोई हिल-डुल नहीं रहा था. लेकिन कुछ ही देर में जब धूप ने सबके बदन सुखा दिए, तो धीरे-धीरे एक चींटी अपने स्थान से हिली, फिर उसकी देखा-देखी दूसरी ने हरकत की, फिर तीसरी ने, फिर चौथी ने; फिर एक-एक करके सब चींटियां डबल रोटी के 'डेक' पर चहलकदमी करने लगीं, मीठे मीठे जैम के चटखारे ले-लेकर पेट की क्षुधा मिटाने लगीं. दरअसल इस लंबी रस्साकशी ने सबके पेटों की ज्वाला को दुबारा भड़का दिया था. चींटियां जैम खाती हुई, इधर से उधर टहलतीं और समुंदर के पानी का नजारा करतीं.

"अरे बाप रे!" एकाएक छोटी चींटी का ध्यान उस गड्ढे की ओर गया, जहां उसने अपने हाथ-पांव गड़ाकर मौत के मुंह से अपने आप को बचाया था. वहां अब एक छेद स्थान बना रहा था. बूढ़ी चींटी ने भी उस ओर देखा. जब सबका ध्यान दुबारा उस ओर केंद्रित हुआ तो सब अपनी भूल पर बड़े पछताए. दरअसल सामने बड़ी आफत आई देखकर छोटी मुसीबत का खयाल ही न रहा था उन्हें. और अब तो झरने के पानी के थपेड़ों से गड्ढे की चौड़ाई और अधिक बढ़ गई और कुछ ही देर में वहां एक छेद पैदा हो जाने की संभावना थी. अब उस स्थान को मजबूत करना सुरक्षा की दृष्टि से आवश्यक हो गया था, परंतु वहां तक पहुंचकर प्राणों की बाजी लगा देने पर भी गड्ढे को पूरी तरह पाट देने का काम सबको असंभव ही नजर आ रहा था, इसके विपरीत जान से हाथ धोने की ज्यादा आशंका थी.

●

इसी चिंताजनक विषय पर विचार-विमर्श करने में धूप ढलने लगी और धीरे-धीरे आकाश का नीलापन गहरा होता गया. फिर सांझ हो गई और कुछ ही देर में, नीले आकाश में सितारे जगमगा उठे. सर्दी बढ़ गई थी, तिस पर खुले आकाश के नीचे यह खतरनाक यात्रा, जिसकी मंजिल का किसी को पता नहीं था और न रास्ते की भयंकर कठिनाइयों के संबंध में ही किसी को पूरा ज्ञान था. कौन जाने कब कहां मुसीबत आ

kissekahani.com

खड़ी हो! आखिर डबल रोटी की यह छोटी-सी नाव, जिस पर सत्रह प्राणियों की जिंदगी, मौत के कठिन से कठिन भयानक वार को भी झेलने के लिए तत्पर थी और इन्होंने अभी तक हिम्मत नहीं हारी थी. यद्यपि भय और आशंका से सबकी हालत खस्ता हो चुकी थी. कुछ समय पूर्व की घटनाओं और नाव में छेद हो जाने की आशंका ने उन्हें बुरी तरह डरा दिया था, तिसपर नई मुसीबत कब आ खड़ी होगी, कौन कह सकता था! चारों ओर पानी ही पानी और पानी के थपेड़े और थपेड़ों में डगमग डोलती बही जा रही वह नाव, जिसके डूब जाने की स्थिति किसी भी क्षण पैदा हो सकती थी. आखिर, चिंताओं में मग्न सोचते-विचारते कुछ चींटियां बेहाल होकर जैम के ढेर के पास ही सो गईं. इस लंबी यात्रा ने उन्हे काफी थका दिया था. रात ढलते-ढलते केवल दो तैराक और एक बूढ़ी चींटी को छोड़कर बाकी सबकी आंखों में नींद झूलने लगी.

बूढ़ी चींटी ने तैराक चींटी से कहा, "अभी तक कोई खतरा नहीं है, लेकिन उस स्थान पर यदि सचमुच सुराख हो गया, तो निश्चित रूप से सबके प्राण संकट में पड़ जाएंगे!"

"लेकिन किया क्या जाए, वह स्थान पानी से नीचे है, अतः उस स्थान को पाटने के लिए पानी में उतरना पड़ेगा, जो खतरे से खाली नहीं है," एक तैराक चींटी ने उत्तर दिया.

"मेरा विचार है, मैं उस स्थान पर मक्खन में अपने योग्य सूराख पैदा कर लूं और वहां स्वयं बैठकर पानी रोकने का कार्य आरंभ कर दूं. फिर यह कार्य हम बारी-बारी से ड्यूटी देकर पूरा करते रहेंगे." दूसरी तैराक चींटी ने सुझाव दिया और बूढ़ी चींटी के उत्तर की प्रतीक्षा करने लगी.

"उंहूं!" बूढ़ी चींटी ने गंभीरतापूर्वक गरदन हिलाकर इंकार कर दिया. "इसमें रिस्क है. इससे पानी के तेज थपेड़ों को उस स्थान में दरार पैदा करना और भी आसान हो सकता है. पानी के थपेड़े यदि तुम्हें ही लील गए, तो लहरों को रोकने का काम ही नहीं रुक जाएगा, बल्कि इस प्रकार पानी मक्खन के भीतर घुसकर डबल रोटी की भीतरी दीवार तक भी पहुंच सकता है, जिससे धीरे-धीरे सारी डबल रोटी में पानी भर जाएगा और तब इसे डूबने में एक पल का समय भी नहीं लगेगा," बूढ़ी चींटी ने कहते हुए अपनी बात जारी रखी, "अभी तक तो वे गड्ढे ज्यों के त्यों बने हुए हैं. इससे पूर्व ही कि वे और गहरे हों, हमें सोच-विचार कर कोई ठोस कदम उठाना चाहिए."

इसके बाद तीनों में कोई बातचीत नहीं हुई. नाव पर सन्नाटा छाया हुआ था. अन्य चींटियां प्रगाढ़ निद्रा में मग्न हो चुकी थीं. रात का लगभग तीसरा पहर आरंभ हो गया था. धीरे-धीरे रात की ठंडक बढ़ती गई और तेज ठंडी हवा के झकोरे चलने लगे. तीनों सोच-विचार में डूबी हुई थीं.

बुद्धूराम—

—सुरती

kissekahani.com

गुड़िया रानी रूठ गई !

जरा चिढ़ाया, मुंह बिचकाया,
एक सयानी रूठ गई,
गुड़िया रानी रूठ गई!

हां-हां सब गलती मेरी है;
सिर्फ जरा-सा यही कहा था—
"अब तू काफी बड़ी हो गई
मुझको चिंता,
कहीं मिले अच्छा-सा गुड्डा,
ना हो बुड्ढा,
पीले कर दूं हाथ तुम्हारे."

पलक झुकाकर,
दबे स्वरों से बोली गुड़िया—
"सच ही तो है,
अब कौन तुम्हें अच्छी लगती हूं?
जहां कहोगी, चली जाऊंगी,
फिर बुलाओगी, नहीं आऊंगी!"

गाल फुलाकर कुप्पा हो गए,
उमड़ आई आंखों में गंगा,
मैंने पूछा—"नहीं आओगी?"
"हां-हां, बिलकुल नहीं आऊंगी."

तुम्हीं बताओ, सखी-सहेली,
कैसे सुलझे नई पहेली?
रूठी गुड़िया कौन मनाए?
जाना है ससुराल एक दिन,
इस बुद्धू को कौन बताए?
मुझको क्या कुछ मोह नहीं है?
बिदा-पहर जब इस गुड्डे को
अपने तन से जुदा करूंगी;
सच कहती हूं—फूट फूटकर,
बिलख-बिलखकर रोऊंगी (मैं)

और फिर सच तो है यह
बात चलाई थी मैंने तो,
यह महरानी रूठ गई,
गुड़िया रानी रूठ गई!

—कल्पना व्यास

"तुम लोग सो जाओ," खामोशी तोड़ते हुए बूढ़ी चींटी ने कहा. "मैं भी कुछ देर आराम करती हूं. इस बीच दो अन्य चींटियों को पहरे पर लगा दिया जाए."

दोनों तैराक चींटियां आदेश का पालन करने के लिए मुड़ीं. एक ने आगे बढ़कर दो चींटियों को जगा दिया और फिर सोने के लिए चल दीं.

बूढ़ी चींटी ने पहरे पर लगीं दोनों चींटियों को आदेश दिया, "देखो, अब जागकर पहरा देने की तुम्हारी बारी है. यदि कहीं किसी भी तरफ से कोई खतरा नजर आए, तो फौरन मुझे जगा देना." यह कहकर वह भी सोने के लिए चली गई.

इसके बाद कुछ देर तक तो शांति छाई रही. कहीं कोई किसी प्रकार की घटना नहीं हुई. रह-रह कर ठंडी हवाओं के झकोरे चलने लगते, जिससे पहरे पर लगी दोनों चींटियां ठंड के मारे कांपने लगतीं. फिर आकाश में बादल घिर आए और जोर की बिजली कड़की, तो पहरे पर तैनात चींटियां किसी आने वाले खतरे का आभास पाकर चौंक पड़ीं, और उन्होंने घबराहट में लपककर बूढ़ी चींटी को झकझोर कर जगा दिया. बूढ़ी चींटी हड़बड़ाकर उठ बैठी. "क्या है?" उसने घबरा कर पूछा.

"वह देखो," उत्तर दिशा से आने वाले बादलों के भयंकर दल की ओर संकेत करते हुए एक पहरेदार चींटी ने कहा, "तूफान आने वाला है!"

"ओह!" बूढ़ी चींटी घबराकर उठी. यद्यपि उसे सोए अभी घंटाभर ही हुआ था और वह ठीक प्रकार से सो भी न पाई थी, मगर आने वाले खतरे को देखते हुए क्षणभर में ही उसकी नींद हवा हो गई. उसने एक-एक कर सारी चींटियों को जगा दिया. हवा तेजी से चलने लगी और उत्तर दिशा से आने वाले बादलों की सेना विशाल दैत्यों की तरह धीरे धीरे आकाश में फैलने लगी. और कुछ ही देर में सारे सितारे छिप गए. चारों ओर घनघोर काली घटाओं का खौफनाक जमाव नजर आने लगा. बीच-बीच में बिजली के चमकने से सारी चींटियां भय और आशंका से कांप उठतीं, लेकिन फिर भी उन्होंने हिम्मत नहीं हारी.

बूढ़ी चींटी ने कहा, "चिंता न करो. झरने वाले मौत के मुंह से जो शक्ति हमें सुरक्षित निकाल लाई है, वही इस संकट में भी हमारी सहायता करेगी."

बूढ़ी चींटी की यह बात सब पर जादू का असर कर गई. प्राणों की आशा छोड़ती चींटियों के दिलों में दुबारा एक नई आशा का संचार हुआ. वे बड़ी से बड़ी मुसीबत का सामना करने के लिए तैयार हो गईं.

फिर एकाएक बूंदाबांदी होने लगी. पानी का वेग बढ़ने लगा. और कुछ देर में बरखा आरंभ हो गई. पानी का बहाव और भी तेज हो गया. फिर बरखा की बूंदों ने थोड़ी ही देर में प्रलयंकारी रूप धारण कर लिया. नहर रूपी उस छोटे-से समुंदर में मानो भयंकर तूफान आ गया था. डबल रोटी की वह छोटी-सी नाव विकराल लहरों पर इधर से उधर दौड़ती-

kissekahani.com

डब्बू जी की डायरी से

यह लो सेब!
इसे खाओ,
नहीं. . .सिर्फ चखो!
वह भी नहीं —
केवल सूंघ लो!
वह भी उस समय
जब तुम्हें जुकाम हो!
नहीं समझे न मेरी पहेली?
अरे भाई!
यह सेब कहां है?
उसकी फोटो है!

यों तो फोटो मेरी भी है एक
इनलार्ज की हुई —
आदमकद;
मन तो यही करता है
कि अपने बदले
उसे ही भेज दिया करूं स्कूल!
डैस्क पर वही बैठे
और बिना चीं-चपड़ किए
बेंत भी खा ले!

यों तो खा मैं भी सकता हूं;
लेकिन बेंत नहीं,
बल्कि पोपले मुंहवाली —
अपनी नानी के हिस्से के वे लड्डू
जो वह रोज रात को
सिरहाने रखकर सो जाती है
और शायद सपने में उन्हें खाती है!
देखा? बात कहां से कहां जा पहुंची!
तो तुम्हें सेब की फोटो दिखा रहा था!
मैंने इसे खींचा है
किस सड़े-गले कैमरे से?
यह तुम 'पराग' के संपादक दादा से पूछो!

— विश्वबंधु —

भागती बही जा रही थी. और स्पष्टरूप से अब उसके भविष्य की कल्पना कर, उस पर अफसोस ही किया जा सकता था. यह भयानक दृश्य देखकर एकबार फिर चींटियों ने अपने बचने की आशा छोड़ दी. उन्हें विश्वास हो गया कि अब वे सब इसी गहरे पानी में डूब मरेंगी. पानी के थपेड़ों में हर पल ऐसा लगता था कि नाव अब उलटी, अब उलटी. मगर बूढ़ी चींटी ऐसे में भी भाग-भागकर सबकी हिम्मत बढ़ा रही थी और सबको धीरज से काम लेने की प्रेरणा दे रही थी. उसे पक्का यकीन था कि जिस शक्ति ने उन्हें झरने वाले मौत के मुंह से जीवित निकाल लिया था, वही इस बुरे वक्त में भी उनकी रक्षा करेगी. बूढ़ी चींटी को ऐसा करते देखकर कुछ चींटियों को संदेह हुआ.

"कहीं यह डर से पागल तो नहीं हो गई?" एक चींटी ने डरे शब्दों में फुसफुसाया.

"लगता है," दूसरी ने रूखे स्वरों में कहा.

फिर कोई नहीं बोला. सब अपनी जीवनलीला के समाप्त होने की प्रतीक्षा करने लगीं. मगर बूढ़ी चींटी को चैन कहां था! वह बार-बार इधर-उधर दौड़ती-भागती, सबको ढाढ़स बंधाती हुई, जा-जाकर किनारे के गड्ढों का अवलोकन कर लेती थी, जिनके भीतर सूराख हो जाने का खतरा इस स्थिति में और भी बढ़ गया था. मगर ईश्वर की कृपा से गुड्ढे ज्यों के त्यों सुरक्षित थे. उसपर तेज हवा और ऊपर से तड़ातड़ बरसात पूर्ववत् जारी थी. बार-बार नावके उलटने की स्थिति पैदा हो जाती. नाव इस प्रकार डोल रही थी कि एक स्थान पर पांव जमाकर खड़े रहना कठिन हो गया था.

मगर फिर धीरे धीरे बरखा का वेग कम होने लगा. साथ ही साथ पानी की हलचल भी समाप्त हो गई और हवाओं के झक्खड़ बंद हो गए. कुछ देर और प्रतीक्षा करने के बाद जब बारिश बिलकुल बंद हो गई, तो सबकी जान में जान आई. अब वह प्रलयंकारी दृश्य बीत चुका था. फिर भी पानी का बहाव पूर्ववत् तेज था उथल-पुथल समाप्त हो गई थी और खतरा टल चुका था. और दूर पूरब में सूर्योदय होने लगा था. मगर इस भयंकर घटना ने उन सबको इतना अधिक डरा दिया था कि वे अपने अपने स्थान से चलकर एक जगह पर एकत्र हो गईं और भयभीत-सी एक-दूसरे का मुंह ताकने लगीं. चेहरों पर एक प्रश्न था कि आखिर कब तक यों ही चलता रहेगा. दर असल भय और आशंका के इस निरंतर संघर्ष से उनके दिलों में एक अजीब किस्म की ऊब पैदा हो गयी थी. बूढ़ी और तजुर्बेकार चींटी की हिम्मत जवाब दे चुकी थी.

kissekahani.com

सब चिंतामग्न बैठे हुए थे. एकाएक छोटी चींटी एक ओर संकेत करती हुई जोरों से चिल्ला उठी : "जमीन! जमीन!! जमीन!!!"

खुशी के इस समाचार से सब चींटियों के हृदय एकाएक धड़क उठे. दरअसल इस समय नाव नहर के किनारे के नजदीक से बह रही थी. सब दौड़कर छोटी चींटी के पास आ गईं. सबने दूर से जमीन के दर्शन किए. मगर यह नाव ऐसी थी जिसका कोई लंगर नहीं डाला जा सकता था और न इस जलयान के साथ, बीच के गहरे पानी को पार करके किनारे तक पहुंचने के लिए किसी प्रकार की डोंगियां ही थीं. अतः सब ललचाई नजरों से किनारे की तरफ देख रही थीं. किनारे के हरे-भरे पेड़ और लुभावने दृश्य देखकर सबके हृदय प्रसन्नता से भर गए, मगर अपनी इस विवशता पर अनेक की आंखों में दुःख के आंसू भर आए.

एकाएक कोई चीज पानी में छपाक् से आ गिरी, जिससे सारे पानी में एकाएक उथल-पुथल मच गई. इस आकस्मिक झटके से सब की सब अपने-अपने स्थान पर ही लुढ़क पड़ीं. घबरा कर सबने देखा, नाव हिचकोले खा गई थी. फिर धीरे धीरे पानी पूर्ववत् शांत हो गया और नाव फिर पूर्ववत् बहने लगी.

दरअसल किनारे से किसी ने पत्तों का बना एक दोना, जिसमें फूल रखे हुए थे, बहते पानी को भेंट चढ़ाया था. बूढ़ी चींटी ने समझा, नियंता ने हमारे लिए ही डोंगी भेजी है कि इसमें बैठ कर किनारे की ओर बढ़ जाओ. मगर यह देखकर उसे निराशा हुई कि कि अब उनका जलयान किनारे से काफी दूर बह आया था और अब दूर-दूर तक जमीन का कहीं नामोनिशान नजर न आता था. फिर, पत्तों की इस नाव को खेने का कोई साधन भी तो उनके पास न था. पत्तों की नाव पानी में गिरते ही उनके जलयान से आ टकराई थी और फिर उसके साथ लगी-लगी ही बहने लगी. सब चींटियां एक स्थान पर एकत्र हो कर फूलों से लदी उस रंगबिरंगी नाव के दृश्य का आश्चर्य से अवलोकन कर रही थीं. परंतु उस पर जाने का साहस कोई न कर पा रहा था.

"हो सकता है, यह किसी जादूगर की चाल ही हो या किसी समुद्री राक्षस की माया हो," तभी बूढ़ी चींटी ने कहा. "इसलिए उस ओर कोई चींटी न जाए, खबरदार!"

सुनकर सब चींटियों की आंखें भय और आशंका से और भी फैल गईं. लेकिन दोनों तैराक चींटियां बूढ़ी चींटी की बातें सुनकर हंसने लगीं, "ही! ही! ही!" एक तैराक चींटी ने हंसते हुए कहा, "कहां पिछले जमाने की बातें करने लगी हैं, बड़ी जी! अब जादू-परी और राक्षसों की बातें कौन करता है, साइंस का जमाना है यह!"

"चुप कर! नालायक, बत्तमीज!" बड़ी जी ने एकाएक तैराक चींटी को फटकारा, "अभी सिर पर नहीं पड़ी, बच्ची! जिस दिन फंस गई न निन्यानवे के चक्कर में, तब पता चलेगा! कबीर ने ठीक ही कहा था कि 'दुख में सुमरण सब करें सुख में करे न कोय'."

'अब इससे बड़ा भी कोई चक्कर चलेगा क्या?' मन ही मन तैराक चींटी ने कहा और मुस्करा कर रह गई.

एकाएक बूढ़ी चींटी ने महसूस किया कि यान डोल रहा है और उसका भारीपन धीरे धीरे बढ़ता जा रहा है. हो न हो, इसी मायावी नाव की ओर से कोई कारस्तानी हुई है, उसने सोचा और भय और शंका से वह उस ओर देखने लगी. फिर अन्य सब चींटियों ने भी महसूस किया कि उनके यान का भारीपन धीरे धीरे बढ़ रहा है.

"सचमुच ही कोई समुद्री राक्षस तो हमारे जलयान के पीछे नहीं पड़ गया?" छोटी चींटी ने घबराकर कहा.

यह सुनकर सबके चेहरे भय से पीले पड़ गए. बूढ़ी चींटी हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगी, "हे समुद्र देवता, दया करो! हमसे कहीं कोई भूल हुई हो, तो हमें क्षमा कर देना!"

बूढ़ी चींटी को इस प्रकार प्रार्थना करते देखकर अन्य चींटियां भी उसके समीप ही हाथ जोड़कर कतारबद्ध खड़ी हो गईं.

●

तैराक चींटियां जादू-टोने और राक्षस-परी आदि के अंधविश्वासों में इस प्रकार सबको फंसे देखकर झुंझला रही थीं. मगर वे कर ही क्या सकती थीं. जलयान का भार धीरे धीरे बढ़ता जा रहा था और उन्हें विश्वास हो गया था कि यदि इसी क्रम से भार बढ़ता गया तो निश्चित रूप से थोड़ी ही देर में जलयान सबको लिये हुए पानी में डूब जाएगा.

एकाएक दूसरी तैराक चींटी ने पहली के कान में कुछ कहा, और फिर दोनों साथ साथ दौड़ पड़ीं. दोनों भागती हुई जलयान के गड्ढे वाले हिस्से की ओर आईं. फिर उन्होंने गौर से देखा, जलयान के गड्ढे वाले स्थान पर पानी के बुलबुले-से फूट-फूट जाते थे और पानी का स्तर यान के काफी ऊपर तक उठ आया था. उन्हें समझते देर न लगी कि पानी की उथल-पुथल से गड्ढे वाला स्थान और भी गहरा हो गया है और उससे दाखिल होकर पानी डबल रोटी की छोटी-सी नाव के भीतरी हिस्से में आने लगा है. भागती-भागती आईं ध्यान-मग्न बूढ़ी चींटी की ओर जहां और भी चींटियां ध्यान-पूजा में लगी थीं. फिर दूर से ही चीखती-चिल्लाती हुई बोलीं, "उठो उठो, मूर्खो! दौड़ कर सामने वाली नाव पर सवार हो जाओ. हमारे जलयान में पानी भर रहा है!"

सारी ध्यानमग्न चींटियां हड़बड़ा कर चौंक उठीं.

"क्या हुआ?" घबराकर बूढ़ी चींटी ने पूछा.

"जलयान का गड्ढे वाला हिस्सा खुल गया, उसके द्वारा जलयान में पानी भर रहा है!" दूसरी तैराक चींटी ने जल्दी-जल्दी कहा, "दौड़ कर सब सामने वाली

kissekahani.com

नाव में चढ़ जाओ."

यह सुनते ही सारी चींटियों में एकाएक खलबली मच गई. एक-एक करने सब दौड़ दौड़ कर पत्तों वाली फूलों की नाव में चढ़ने लगीं.

जब सारी चींटियां एक-एक करके पत्तों वाली बड़ी नाव पर जाकर फूलों की छत पर जा चढ़ीं, तो सबसे अंत में नन्ही और छोटी चींटियों को साथ लिये हुए, बूढ़ी चींटी फूलों वाली नाव पर पहुंची और सरसराती हुई फूलों की छत पर चढ़ने लगी. फिर वे भी अन्य चींटियों में जा मिलीं.

"यह स्थान पहले से सुरक्षित और अच्छा है," प्रसन्नता से चारों ओर दृष्टि फेंकते हुए एक चींटी ने तालियां बजाकर कहा.

"अभी निश्चित कुछ नहीं कहा जा सकता. हो सकता है, इस नाव में उससे भी बड़ा खतरा हो. इससे पहले कि हम किसी नतीजे पर पहुंचें, हमें घूम-फिर कर इसका निरीक्षण कर लेना चाहिए. हो सकता है, फूलों के इस झाड़ में कोई भयंकर जानवर ही यात्रा कर रहा हो," बूढ़ी चींटी ने सुझाव दिया.

"यह ठीक है," एक तैराक चींटी ने कहा.

"वह देखो, वह!" सहसा एक अन्य चींटी ने डबल रोटी की छोटी-सी नाव की ओर संकेत करते हुए भयभीत स्वर में कहा. और सब उस ओर देखने लगीं जहां कुछ क्षण पूर्व वे स्वयं थीं. दरअसल डबल रोटी की छोटी-सी नाव के सूराख में तेजी से पानी भरने लगा था और अब वह तेजी से डूब रही थी. फिर देखते ही देखते कुछ ही क्षणों में वह पानी में डूब गई.

कुछ देर बाद, आश्वस्त होने पर, बूढ़ी चींटी के नेतृत्व में सब चींटियां घूम-फिर कर पत्तों की उस बड़ी नाव की जांच-पड़ताल में व्यस्त हो गईं. चप्पा-चप्पा घूम-फिर कर देखा गया कि यहां रहने में कहीं कोई खतरा तो नहीं है. और यह देखकर सबको प्रसन्नता हुई कि यह नाव पहली नाव से कहीं अधिक मजबूत और टिकाऊ है और इसके चिकने पत्तों पर पानी की बूंद भी नहीं ठहरती है, बल्कि फिसल कर गिर जाती है. नाव में फूलों के तीन मजबूत घर बने हुए हैं जिनमें रात को विश्राम किया जा सकता है और दिन में तपती धूप और बारिश से बचने के लिए काम में लाया जा सकता है. चारों ओर घूम-फिर कर जब पूरी तरह निरीक्षण कर लिया गया, तो फिर सब की सब भागकर नाव की छत पर जा चढ़ीं, जहां नन्ही और छोटी चींटी पहले से ही खेल में मशगूल थीं. सबको आते देख कर दोनों खेलना बंद करके उनके समीप आ खड़ी हुईं.

एकाएक बूढ़ी चींटी के नजदीक आते हुए नन्ही चींटी ने ठुनक कर कहा, "मुझे भूख लगी है!"

और भूख का नाम सुनते ही अन्य चींटियों को भी अपने-अपने पेटों का खयाल आया. लेकिन फिर सबके चेहरों पर चिंता व्याप कर रह गई, क्योंकि राशन तो सब डबल रोटी की छोटी नाव में ही रह गया था और इस नाव में खाने के नाम पर एक दाना भर राशन नहीं था. ऐसी स्थिति में चिंता होना स्वाभाविक ही था.

कुछ ही देर में नन्ही चींटी और छोटी चींटी भूख से रोने लगीं. अन्य चींटियां भी भूख से परेशान थीं. मगर अब कोई चारा भी तो नहीं था सिवाय तड़पते रहने के. पूरा दिन इसी प्रकार भूखों ही बीत गया. दूर क्षितिज पर सांझ उतरने लगी थी. भूख से बेहाल कुछ चींटियां अधमरी-सी फूलों के घर में इधर-उधर जाकर पड़ गईं. फिर रात हो गई. अगली सुबह जब, सब सोकर उठीं, तो सभी को अपने शरीर भूख और थकान से चूर मालूम होते थे. बूढ़ी चींटी ऐसी अवस्था में भी तैराक चींटियों को साथ लिये नाव के 'डेक' के आस-पास तेजी से गश्त कर रही थी कि शायद कोई चारा नजर आ जाए, जिसके द्वारा भूख से मरती चींटियों के प्राण बचाए जा सकें.

आखिर लंबी प्रतीक्षा के पश्चात् एक कीड़ा बहता हुआ नाव से आ लगा. मगर वह उस समय जीवित अवस्था में था. बूढ़ी चींटी ने चुपचाप दोनों तैराक चींटियों को संकेत किया. एक चींटी भागी-भागी कुछ अन्य चींटियों को लेने के लिए चली गई. कुछ ही देर में उस स्थान पर अनेक चींटियां अपने शिकार के आसपास मंडराने लगीं. फिर एकाएक बूढ़ी चींटी का संकेत पाते ही मिलजुल कर सबने उस पर हमला बोल दिया. मगर कीड़ा भी कम बलवान न था. चींटियां उसके चारों ओर चिपट गईं और उसे नाव में ऊपर खींचने का प्रयत्न करने लगीं. कीड़ा इस आकस्मिक हमले से एकाएक घबरा गया था. वह पुनः पानी में डुबकी लगा जाना चाहता था. लेकिन

(कृपया पृष्ठ ३४ देखिए)

संगीत का प्रभाव—

"अरेरेरे! बस बस, मास्टर साहब! देखिए, कमरे में एक गधा घुसा चला आ रहा है!"

kissekahani.com

सभी सतीश का इंतजार कर रहे थे. बात ही कुछ ऐसी हो गई थी. विनोद ने अपनी गुलेल से निशाना लगाते हुए कहा—"अब क्या आएगा वह? अपन सबको चकमा दे गया!"

"नहीं, वह जरूर आएगा," अशोक ने कहा.

"मान लिया—आएगा, लेकिन ऐसी भला कौन-सी चीज लाएगा?" हाथ मटका कर अन्नू बोली.

"यह तो मैं भी नहीं बता सकता," अशोक ने लाचारी के साथ कहा.

विनोद ने कहना शुरू किया—"वह क्या टिकेगा मेरी गुलेल के सामने. . .उसे निशाना लगाना ही नहीं आता. मुंह छिपाना होगा, इसलिए बकबक करता हुआ चला गया. . ."

"लो, वह आ गया!"

सबने घूमकर देखा, सतीश आ रहा था. सतीश के हाथ में बंदूक थी. सब चौंक गए.

"बाप रे, यह तो बंदूक ले आया!" अन्नू ने सिहरकर कहा.

तब तक सतीश पास में आ चुका था. अशोक और विनोद उससे कुछ बोलें, इससे पहले ही सतीश ने कहा—"देखा, यह है एयर-गन. . . अब मैं इससे निशाना लगाऊंगा. तुम अपनी गुलेल के लिए गोल-गोल पत्थर खोजा करो. . .मेरे पास छर्रों की डिबिया है!"

"अरे वाह! तू कहां से लाया बंदूक?" अशोक ने पूछा.

"सतीश, तुम्हारी इस बंदूक से तो मुझे डर लगता है. . ."

"डर क्यों? मैं तुम्हें थोड़े ही मारूंगा. यह तो चिड़िया मारने के लिए है . . ."

"चिड़िया! तुम चिड़िया को मारोगे?"

"तो क्या हुआ? मैं कोई जैनी थोड़े ही हूं जो हिंसा से डरूं?"

"अब अपना शिकारी-दल फिर से शिकार पर निकले क्या?" विनोद में उत्साह था.

"हां हां, क्यों नहीं? जंगल कब से अपना इंतजार कर रहा है! लेकिन एक बात है, पहले हम अपने शिकारी-दल का नेता चुन लें, तो अच्छा रहे," सतीश ने प्रस्ताव रखा.

सब समझ गए कि सतीश ने यह प्रस्ताव अपने लिए रखा है. अशोक ने 'हां में 'हां' मिलाते हुए कहा, "अरे सतीश, तेरे सिवाय और कौन हो सकता है नेता! फिर तुम्हारे पास तो 'एयर गन' भी है. अच्छा हमें भी चलाने दोगे न?"

"सोचूंगा. . ." कहकर सतीश आगे आगे चलने लगा. उसके पीछे सभी हो लिये.

विनोद को अपनी गुलेल एयर-गन के सामने बहुत छोटी लग रही थी. सामने टीन का एक पुराना डिब्बा पड़ा था. अन्नू ने चिल्लाकर कहा—"यह रहा अपना शिकार . . .!"

सब सतर्क हो गए. अशोक ने अन्नू को झिड़कते हुए डांटा—"इस तरह चिल्लाया नहीं जाता वर्ना शिकार भाग जाएगा. . ."

"भागेगा कैसे?" कहते हुए निशाना ताककर विनोद ने अपनी गुलेल का पत्थर छोड़ दिया. टक् से वह डिब्बे पर लगा और डिब्बा लुढ़क गया. सतीश ने घुटने पर रखकर अपनी बंदूक को मोड़ा और उसमें छर्रा भर दिया. जब सतीश निशाना साधने लगा, तो अन्नू ने अपने कानों पर उंगलियां रख लीं.

"डरपोक कहीं की! . . .क्यों, सतीश, इससे झटका तो लगता होगा?" अशोक ने पूछा.

"हां, लगता है. पर अपना कंधा मजबूती से कड़ा रखो, तो कुछ नहीं होता."

उसके ट्रिगर दबाते ही 'सर्र' की आवाज हुई. एक पल के लिए सबकी आंखें बंद हो गई थीं. लेकिन कुछ नहीं हुआ. डिब्बा हिला तक नहीं.

"निशाना जमा नहीं, वर्ना डिब्बे में छेद हो जाता," सतीश ने तनिक निराश होकर कहा.

"कोई बात नहीं, लाओ जरा मुझे दो," इसी बहाने अशोक ने बंदूक लेने के लिए हाथ बढ़ाया, पर सतीश

कहानी

दुगना दर्द

kissekahani.com

ने मना करते हुए कहा—"ठहरो, यार, मैं इस डिब्बे को छेद कर ही रहूंगा . . ."

तब तक विनोद ने दूसरी बार पत्थर फेंककर डिब्बे को हिला दिया और कहा—"चलो, अब आगे बढ़ें, एक और मजेदार शिकार मेरे ध्यान में आया है."

"कौनसा?" अशोक ने पूछा.

"अरे जरा ठहरो. . .ये लो. . ." सतीश के मुंह से निकला और सर्र से छर्रा छूटकर डिब्बे पर लगा.

"वाह!" अन्नू बोली.

अपनी बिन उगी मूंछों पर सतीश ने हाथ फेरा—"हां, तो, विनोद, तुम किस शिकार की बात कर रहे थे?"

"आओ . . . चलो मेरे साथ. . ." विनोद बोला.

सब आगे बढ़े और बगीचे से निकलकर सड़क के मोड़ पर आ गए. विनोद बिजली के एक खंबे के पास रुक गया. उसने बल्ब की ओर इशारा करते हुए कहा—"देख रहे हो न उस बल्ब को."

एकाएक अन्नू बोली—"हाय राम! तुम सरकारी बल्ब को फोड़ेंगे!"

". . .हां, तू डरती क्यों है?" विनोद ने गुलेल तान ली. सतीश ने एयर गन में छर्रा भर लिया.

"वाह! मजा आएगा! देखें कौन फोड़ पाता है इसे?" अशोक ने ताली बजाई.

"मजा तो तब भी आया था जब यहां बल्ब नहीं था और उस रात को अंधेरे में विनोद महाराज की साइकिल पत्थर से टकरा गई गई थी. कितने मजे थे धड़ाम

—राजेशकुमार जैन—

से गिरने में!" अन्नू ने हाथ मटकाकर कहा.

सुनकर विनोद रुक गया. उसने अपनी गुलेल नीचे झुका ली—"मैं इस बल्ब को नहीं फोड़ूंगा. . ."

"क्यों, डर गए?" सतीश ने ललकारा.

"क्या डर गए . . .! यहां रात में अंधेरा हो जाएगा, कोई किसी से भिड़ गया, तो?"

"खैर, जैसी तुम्हारी मर्जी. . . तो चलो कोई दूसरा शिकार खोजें. अरे. . . वह देखो कितना गंदा पिल्ला है—एकदम मरियल और आवारा! इसी पर निशाना लगाया जाए. . ."

"हाय राम!" अन्नू बोली—"पिल्ले ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है! उस पर भला क्यों निशाना लगाते हो? वह तो मोहल्ले की सीधी-सादी कुतिया का एकलौता पिल्ला है. . .किसीपर भौंकता ही नहीं!"

"अरे दादी जी, अपना उपदेश रहने दीजिए. अगर इतनी ही दयावान हो, तो हमारे साथ मत आओ, जाओ भागो यहां से. . ." सतीश की आवाज में एक कड़क थी. वह पिल्ला कचरे के ढेर में सूंघ-सूंघ कर कुछ खाने की चीज ढूंढ़ रहा था. विनोद एक बार हिचकिचाया, लेकिन सतीश का उत्साह देखकर उसने गुलेल से निशाना साधा. वह निशाना न लगा सका और पत्थर कहीं और चला गया. सतीश का छर्रा सीधे पिल्ले की टांग पर लगा. पिल्ला जोर से कूं-कूं करके लंगड़ा कर एक ओर भाग गया. पिल्ले की दर्दनाक चीख सुनकर अन्नू ने अपने कान बंद कर लिये—"हाय हाय, कितने पापी हो तुम! उस बिचारे ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था? उसे दर्द हो रहा होगा!"

"हूं, देखा मेरा निशाना. . ." सतीश ने अन्नू की बात अनसुनी करते हुए कहा.

"सतीश, तेरे भैया आ रहे हैं!"

सचमुच दूर सड़क पर साइकिल चलाते हुए सतीश के भैया आ रहे थे. हड़बड़ाकर सतीश बोला—"मैं अभी आया घर से. . .जरा बंदूक रख आऊं, वर्ना भैया मेरी. . ."

सतीश चला गया और थोड़ी देर बाद बंदूक रखकर आ गया. इस बीच विनोद ने भी अपनी गुलेल जेब में रख ली. सतीश ने आते ही कहा—"चलो कोई दूसरा खेल खेलें."

"कौनसा?"

kissekahani.com

भोलू भाई की भूलभुलैया नं० २६

सही उत्तर और परिणाम

१–एक घंटा २० मिनिट और ८० मिनिट—एक ही बात है.

२–पांचवां सेब टोकरी में ही रहने दोगे और टोकरी पांचवें मित्र को थमा दोगे.

३–किसान के पास भूसे का एक बड़ा ढेर हो जाएगा.

इस बार भी सही हल भेजने वालों की संख्या इतनी अधिक थी कि सभी के नाम छापने संभव नहीं थे. इसलिए पूर्व घोषणा के अनुसार कार्यालय में पहले आए सही हल वाले पच्चीस बच्चों के नाम दिए जा रहे हैं, जो इस प्रकार हैं :

मुथा गौतमचंद, बंबई २६; मुकुंदबिहारीलाल, भाटापारा; विश्वास सहस्त्रबुद्धे, महिदपुर; प्रदीप घरनीधरका, बंबई–५२; सुरेशकुमार याज्ञिक, बासवाड़ा; मनीष रा. पंडित, बंबई–६६; सतीशचंद्र गुप्ता, बंबई–७०; सतीशकुमार जैन, राजगढ़ा; घनश्याम गोकुलदास डागा, बंबई; विनायक माहेश्वरी, चूरू; प्रमोदकुमार गजानंद बागला, बंबई–५५; पोपटकुमार बंका, बंबई–६२; प्रदीपकुमारसिंह, देवलाली; उपकार कैथ, शिमला–१; अशोककुमारसिंह, बंबई–८; प्रेमसिंह माथुर, चूरू; कु. रानी बंसल, जगराओं; कु. मंजू रानी, नैनीताल; सतीशकुमार माहेश्वरी, बंबई–२२; नरोत्तमलाल नेमानी, बंबई–२६; जीवन देसाई, बंबई–१८; अनिलकुमार, नई दिल्ली–५; रवींद्रकुमार गर्ग, जावद; विजयप्रकाश पाठक, रतैठा; विमलाकुमारी, रूपाहैली.

"बहुत दिनों से गुलाम-डंडा नहीं खेला. चलो उस अमरूद के पेड़ पर खेलेंगे."

"मैं अपना गिल्ली का डंडा लेकर अभी आता हूं," अशोक ने कहा.

पेड़ के नीचे पहुंचकर विनोद ने गोला बनाया. दांव विनोद पर ही पड़ा. अशोक डंडा फेंकने लगा, तो सतीश ने कहा, "ला मुझे दे, मैं खूब दूर फेंकूंगा."

अन्नू और अशोक पेड़ पर चढ़ गए. सतीश ने पूरी ताकत लगाकर, टांग के नीचे से डंडा फेंकने के लिए हाथ घुमाया. लेकिन डंडा उसके ही घुटने की हड्डी पर जोर से लगा. अन्नू के मुंह से चीख निकल गई. सतीश अपना पैर पकड़कर जमीन पर बैठ गया. वह बुरी तरह तिलमिला रहा था और किसी तरह अपनी रुलाई को रोकने की कोशिश कर रहा था. अन्नू दौड़ पड़ी—"मैं जाकर सतीश की मम्मी से कहती हूं..."

थोड़ी देर बाद सतीश उठ खड़ा हुआ. अशोक और विनोद ने उसे पकड़ रखा था. जब सतीश ने अपना पैर जमीन पर रखा, तो दर्द और बढ़ गया. वह लंगड़ाकर चलने लगा. घर के गेट पर पहुंचकर उसने अशोक और विनोद से कहा—"मैं चला जाऊंगा..."

लंगड़ाकर वह आगे बढ़ा, किंतु फिर सहसा रुक गया. सामने वही पिल्ला था जो उसकी ही तरह लंगड़ा कर चल रहा था और कुतिया उसको चाट रही थी. सतीश को लगा—उसमें और पिल्ले में कोई अंतर नहीं; दोनों लंगड़ाकर एक ही तरह चल रहे थे. पिल्ले की टांग से खून बह रहा था और उसकी टांग का घुटना इतना छिल गया था कि उसमें से खून की बूंदें रिस रही थीं. एकाएक सतीश को दुगना दर्द महसूस होने लगा, जैसे पिल्ले का दर्द भी उसे लगा हो, क्योंकि इसकी वजह तो वह खुद ही था!

सतीश की मम्मी पट्टी लेकर दौड़ी आईं. जब वह पट्टी सतीश के पैर पर बांधने लगीं, तो उसने कहा, "एक मिनिट, मम्मी, जरा पट्टी देना..."

उसने पट्टी के दो टुकड़े किए और एक मम्मी को दे दिया. पट्टी का दूसरा टुकड़ा लेकर वह पिल्ले की ओर बढ़ा. कुतिया उस पर जोर-जोर से भौंकने लगी. इसकी परवाह न करते हुए उसने पिल्ले को पकड़ा और उसकी टांग में पट्टी बांधने लगा. वह पिल्ले को पट्टी बांध रहा था और उसकी मम्मी उसे पट्टी बांध रही थीं!

अब कुतिया ने भी भौंकना बंद कर दिया था. ●

२०।२ अमीर गंज, भोपाल (म. प्र.).

शीर्षक प्रतियोगिता नं. ११ का परिणाम

पुरस्कार विजयी शीर्षक :

'हंसते दीप, चमकते मोती'

प्रेषक :

कुमारी प्रीति टंडन, किरलायनी काटेज,
मल्लीताल, नैनीताल.

शीर्षक प्रतियोगिता—१४

kissekahani.com

छाया : एम. सी. शर्मा

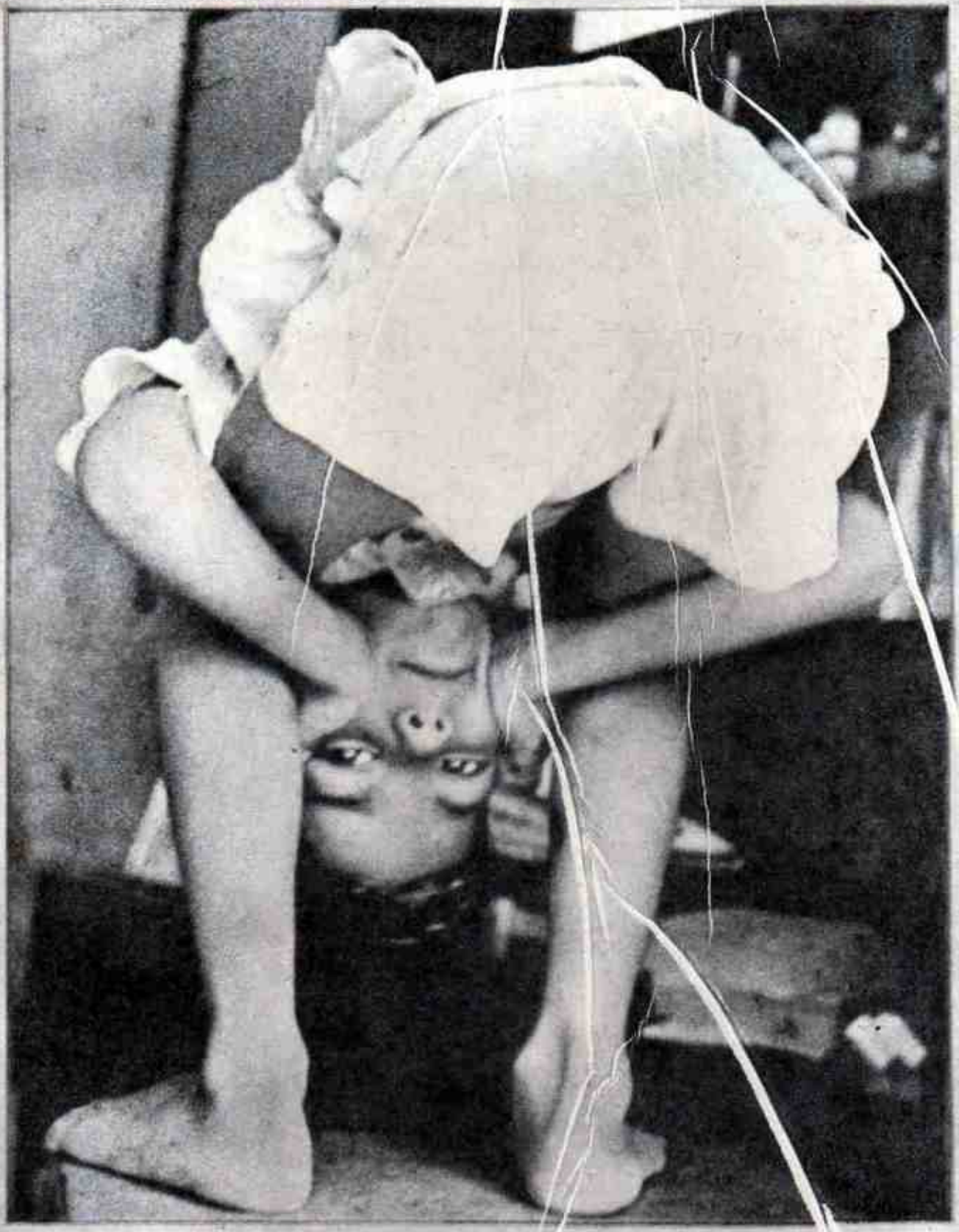

इस चित्र का शीर्षक बताइए

ऊपर के चित्र को देखिए और जरा सोचकर इसका एक बढ़िया और फड़कता हुआ शीर्षक बताइए. अपने उत्तर एक सबसे अलग पोस्ट कार्ड पर लिखकर हमें २० अप्रैल तक भेज दीजिए. सबसे बढ़िया शीर्षक पर [illegible] रुपये के मूल्य की पुस्तकें पुरस्कार में मिलेंगी. हां, कार्ड पर अपना नाम और पता लिखना मत भूलिए. शीर्षक के कार्ड इस पते पर भेजिए : संपादक, 'पराग' (शीर्षक प्रतियोगिता-१४), पो. आ. बा. नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया बिल्डिंग, बम्बई-१.

kissekahani.com

kissekahani.com

तट से छूट कर (पृष्ठ २७ से आगे)

बहादुर चींटियों के समक्ष उसकी एक न चली. आखिर पसीने से लथपथ चींटियां उसे ऊपर खींच ही लाईं और भूख के कारण एकाएक उसपर टूट पड़ीं, और कुछ ही देर में जीवित कीड़े का आधे से अधिक शरीर चबा गईं. फिर जब सबने पेट भर भोजन कर लिया, तो बचा-खुचा भाग घसीट कर एक ओर रख दिया गया, ताकि दूसरे वक्त के भोजन का काम चलाया जा सके.

पेट भर भोजन करने के पश्चात् सब में एक नई शक्ति का संचार हो उठा. कुछ देर को सब चींटियां निश्चित होकर इधर-उधर विहार करती रहीं. फिर कुछ विश्राम करने के लिए फूलों के कक्ष में चली गईं. बची-खुची बाकी चींटियां, अपने में खोई-सी, विचार करने लगीं. लेकिन इन सब में सबसे अधिक चिंतित बूढ़ी चींटी ही नजर आती थी. वह जानती थी कि दूसरे पहर के भोजन के लिए कीड़े का बचा-खुचा मांस सबके लिए पर्याप्त नहीं है, इसलिए वह 'डेक' पर इधर उधर टहलती हुई किसी नए शिकार की प्रतीक्षा कर रही थी.

●

धीरे धीरे सांझ भी हो गई और फिर कुछ देर बाद दूसरे वक्त के भोजन का समय हो गया. बूढ़ी चींटी कीड़े के बचे-खुचे मांसपिंड के नजदीक जाकर खड़ी हो गई. फिर उसने ऐलान किया, "देखो, हमारे यान में इस वक्त राशन कम है. यहां तक कि इस वक्त का भी पूरा भोजन हमारे पास नहीं है. इसलिए हमें इसका उपयोग देखभाल कर करना चाहिए."

यह कहकर, बूढ़ी चींटी ने नन्ही और छोटी चींटी को संकेत से अपने पास बुलाया और सर्वप्रथम उनको जी भर कर भोजन कर लेने की आज्ञा दी. वे दोनों चुपचाप पेट भरकर एक ओर हट गईं.. फिर बूढ़ी चींटी आगे बढ़कर बचे-खुचे खाद्य के पास चली आई और एक-एक को संकेत से नजदीक बुलाकर मांस का एक-एक टुकड़ा सबको थमाती गई, जो मात्रा में उनके लिए आधी खुराक से भी कम सिद्ध हुआ. परंतु इस संकट की स्थिति में बिल्कुल भूखे रह जाने से इतना भोजन मिल जाना भी सौभाग्य की बात थी. जो चींटियां भूख पर नियंत्रण रख सकती थीं, उन्होंने भोजन करने से स्वयं ही इंकार कर दिया. स्वयं बूढ़ी चींटी और तैराक चींटियां भी भोजन किए बगैर ही रह गईं. अतः भोजन का थोड़ा-बहुत अंश अब भी बचा रह गया था. बूढ़ी चींटी ने चुपके से एक गुप्त स्थान पर उसे छिपा दिया.

रात हो गई थी. थोड़ी ही देर में सब चींटियां फूलों वाले कक्ष में सोने के लिए चली गईं. केवल दो चींटियां पहरे पर तैनात कर दी गईं.

जैसे-तैसे करके यह रात भी बीत गई. सुबह की ठंडी हवा के साथ बूढ़ी चींटी नींद से जाग उठी तो उसने देखा, पास ही दोनों तैराक चींटियां अभी तक निद्रामग्न थीं. उसने उन दोनों को जगाया और अपने स्थान से उठ खड़ी हुई. उठते हुए उसने अनुभव किया कि पिछले दिन की थकान से उसका अंग-अंग अभी तक टूट रहा है. मगर वह इसकी परवाह किए बगैर, तैराक चींटियों को साथ लेकर, शिकार ढूंढ़ने के अपने कार्य में व्यस्त हो गई.

●

सहसा छत पर टहलती एक चींटी के मुंह से एक दबी-सी चीख निकल गई. उसने डरते डरते सबका ध्यान उस ओर आकृष्ट कराया. थोड़ी देर में पूरी नाव में कुहराम मच गया. शोर सुन कर बूढ़ी चींटी और तैराक चींटियां भी भागी भागी छत पर गईं. उन्होंने देखा, सब चींटियां भयभीत दृष्टि से उस ओर देख रही हैं. उधर एक दैत्य शरीर पानी के बीचोंबीच नाव की ओर पीठ किए पहाड़ के समान खड़ा हिल-डुल रहा है.

बूढ़ी चींटी ने स्थिति की गंभीरता को समझते हुए संकेत से सब को खामोश रहने का आदेश दिया. और सब चींटियां चुपचाप डरी-डरी-सी आने वाले अज्ञात खतरे की प्रतीक्षा करने लगीं. उनकी नाव तेजी से उस दैत्य की ओर ही बही जा रही थी और ज्यों-ज्यों उनके और दैत्य के बीच का फासला कम होता जाता था, सब दिल भय और आशंका से बैठते जाते थे. आखिर यान दैत्य की पानी से बाहर निकली जांघों के नजदीक तक पहुंच गया तो छोटी चींटी के मुंह से एक चीख निकल ही गई. बूढ़ी चींटी ने तेजी से आगे बढ़ कर उसके मुंह पर हाथ रख दिया. दैत्य अब भी इनकी ओर से बेखबर था. नाव धीरे धीरे दैत्य की दोनों जांघों के मध्य जा पहुंची. सब बेचैनी से किसी आकस्मिक घटना की प्रतीक्षा कर रही थीं. मगर जब नाव चुपचाप दोनों जांघों के पुल के नीचे से उस पार सही-सलामत निकल आई, तो सबकी जान में जान आई. उन्होंने देखा, दैत्य ने उनकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया. वह ऊंची आवाज मुंह से निकाल-निकाल कर, किसी से हंस-हंस कर बातें कर रहा है. उसकी दिल दहला देने वाली भयंकर हंसी सुन-सुनकर चींटियां भय से थर-थर कांपने लगीं.

अब तक कोई दुर्घटना नहीं हुई थी, नाव आगे बढ़ती चली गई. कुछ दूर आने पर सबको महसूस हुआ कि खतरा टल चुका है. लेकिन तभी अचानक पानी में खलबली मचने लगी. भयंकर शोर और पानी की आकस्मिक उथल-पुथल से सब घबरा उठे. नाव हिचकोले खाने लगी. पानी की हिलोरें बार-बार

kissekahani.com

ऊंची उठ-उठकर उसे लील जाने को प्रयत्नशील थीं. सबने आगे की ओर देखा, तो यह देखकर सब के होश उड़ गए कि पानी में अनेकों दैत्य, कोई भारी वस्तु एक-दूसरे पर फेंक-फेंक कर लड़ रहे हैं. दरअसल पिकनिक पर आए स्कूल के लड़कों का दल पानी में गेंद से खेल रहा था.

एकाएक वह भारी-सी वस्तु जोरों से आकर उनकी नाव से टकराई, और नाव लहरों पर अपने स्थान से छिटक कर झटके के साथ किनारे की दलदल में जा धंसी. एक बार तो सब बुरी तरह घबड़ा गईं. अब नाव ने बहना बंद कर दिया था. बूढ़ी चींटी और तैराक चींटियों ने इधर-उधर जाकर नाव का निरीक्षण किया. नाव सही-सलामत थी, लेकिन किनारे की दलदल रेत में फंस जाने के कारण हिल-डुल नहीं रही रही थी. लेकिन बार-बार आती पानी की विशाल लहरें, जब नाव से टकराती तो उसमें हल्का-सा कंपन पैदा हो जाता.

बूढ़ी चींटी अभी स्थिति का पूरी तरह अवलोकन कर भी न पाई थी कि एकाएक किनारे की ओर देख कर प्रसन्नता की चीख उसके होंठों से निकल गई. उसने सब का ध्यान उस ओर आकृष्ट कराया, तो सबके चेहरे खुशी से खिल उठे. सामने किनारा था.

●

अब तक बेहोश चींटियों को भी होश में लाया जा चुका था. नाव पर उपस्थित सारी चींटियां नाव की किनारे के ओर वाली 'साइड' पर खड़ी थीं. लेकिन उनके सामने एक समस्या अब भी थी. दरअसल नाव रेत में धंसकर रह गई थी और अब भी उसके चारों ओर किनारे की दलदल का पानी विद्यमान था और इस पानी को पार कर सूखी जमीन तक पहुंचने के लिए उनके इस जहाज के साथ डोंगियां थी नहीं. अतः बूढ़ी चींटी तैराक चींटियों से इस समस्या पर सरगर्मी से विचार-विमर्श कर रही थीं.

तैराक चींटी ने सुझाव दिया, "नाव से जमीन तक दूरी मेरे शरीर की लंबाई के बराबर ही मालूम होती है. मैं अपनी टांगों से नाव को जकड़ लेती हूं और हाथों को किनारे की रेत में धंसा लेती हूं, इससे मेरा शरीर नाव से सूखी जमीन तक पुल का काम करेगा."

"ऊंहूं!" बूढ़ी चींटी ने कहा, "इसमें रिस्क है. नाव के हिलने-डुलने से तुम्हारे हाथ-पांव किसी भी समय छूट सकते हैं. ऐसा रिस्की काम तो मुझे करना चाहिए, क्योंकि मैं अब बूढ़ी भी हो चली हूं और मेरा शरीर यदि किसी काम आ भी गया तो अच्छा ही होगा."

"नहीं, यह अच्छा नहीं लगता कि हम नौजवान चींटियों के होते हुए आप यह कष्ट करें," दूसरी तैराक चींटी ने कहा.

"चुप रहो. यह मेरी आज्ञा है!" बूढ़ी चींटी ने उसे डांट कर खामोश कर दिया और अपने शरीर को नाव से सूखी जमीन तक पुल के रूप में फैला कर लेट गई. "चलो, जल्दी-जल्दी दौड़ कर सब मेरे ऊपर से जमीन पर पहुंच जाओ," बूढ़ी चींटी ने लेटे हुए कहा.

आज्ञा पाते ही चींटियां एक-एक कर, पुल के रूप में लेटी बूढ़ी चींटी के शरीर पर से उतर-उतर कर उस पार जाने लगीं. धीरे-धीरे सब चींटियां सूखी जमीन पर सही-सलामत पहुंच गईं.

सहसा, कोई लहर आकर नाव से टकराई, जिससे नाव झटका खाकर हिल उठी और अचानक बूढ़ी चींटी की टांगें नाव से अलग हो गईं. और वह झटके के साथ किनारे को पड़े हुए पानी में लटक गई. उसने महसूस किया कि उसके हाथों की पकड़ ढीली पड़ती जा रही है और कुछ ही क्षणों में उसके हाथ भी छूट जाएंगे.

उधर, किनारे पर खड़ी चींटियां यह दृश्य देख रही थीं. वे बूढ़ी चींटी की सहायता का उपाय सोच ही रही थीं कि पीछे खड़ी नन्ही चींटी ने जोर-जोर से रोना शुरू कर दिया, "दी . . . दा! दी . . . दा! दी . . . दा!"

●

नन्ही चींटी की चीखों ने पानी में लटकती बूढ़ी चींटी पर जादू का असर किया. उसमें जाने कहां से गजब की ताकत आ गई कि बूढ़ी चींटी जो अपने बचने की आशा छोड़ चुकी थी, फिर दलदल के पानी से संघर्ष करने लगी. यद्यपि उसके शरीर का पांवों वाला हिस्सा रेतीली दल-दल में धंस चुका था और यों भी थकान के मारे वह शिथिल पड़ चुकी थी. मगर दूसरी ओर नन्ही चींटी की निरंतर पुकारें उसमें नई शक्ति का संचार कर रहा था, "दी . . . दा, हम तुम्हें नहीं जाने देंगे . दी . . दा... दा . . ." बूढ़ी चींटी पानी में डूबने से जान लड़ा कर अपने आप को रोके हुए थी. फिर एकाएक नन्ही चींटी की चीखों-पुकारों से तड़प कर वह ऊपर को खिसकी. किनारे पर भय और शंका से कांपती हुई दृश्य देखतीं, अन्य चींटियों में जैसे जीवन जाग उठा. वे सब की सब एक साथ बूढ़ी चींटी को सहारा देने के लिए आगे बढ़ीं. और बूढ़ी चींटी अपने भीगे बदन को घसीटती हुई नन्ही चींटी की ओर बढ़ते हुए बोली, "क्या है? क्यों चीखे जा रही है? ले, मैं आ गई!"

"दी . . .दा!" कहकर नन्ही चींटी दौड़ कर बूढ़ी चींटी से लिपट गई. यह दृश्य देखकर सब चींटियां प्रेम और खुशी के आंसू बहाने लगीं.

बूढ़ी चींटी ने अनुभव किया कि नन्ही चींटी का हृदय अभी तक जोरों से धड़क रहा है. उसने प्यार से उसकी पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा "मरी क्यों जा रही है, कमबख्त! मैं इतनी आसानी से मरने वाली नहीं हूं!"

फिर कुछ देर सुस्ताकर सबने अपने गंतव्य की ओर प्रस्थान किया. सबके चेहरे प्रसन्नता से खिले हुए थे. आखिर उन्होंने एक लंबे अर्से बाद जमीन के दर्शन किए थे. ●

द्वारा श्री सुभाषचंद्र गुप्ता, ४२१ निमरी कालोनी,
निकट भारत नगर, दिल्ली-७.

kissekahani.com

बेखबर

कहानी

—मीना मेहरोत्रा

तब मेरी उम्र छह वर्ष की थी. उन दिनों मेरे पड़ोस में एक प्राइमरी स्कूल के मास्टर और उनका परिवार रहा करता था. उनकी एक मेरी हम-उम्र लड़की थी—रूपा. वह मेरे साथ स्कूल में पढ़ती थी. हम दोनों एक ही कक्षा में थे. धीरे धीरे मेरी और रूपा की मित्रता खूब बढ़ गई. हम दोनों साथ साथ स्कूल पढ़ने जाते और साथ ही साथ घर वापस आते. छुट्टियों में प्रायः सारा दिन हम दोनों का साथ ही साथ बीतता था. कभी मैं उसके घर चली जाती, कभी वह मेरे घर आ जाती.

जब कभी रूपा को मेरे घर देर हो जाती थी और खाने का समय हो जाता था, तो मैं उसे बिना अपने साथ खिलाए नहीं जाने देती थी. ऐसे ही रूपा की मां भी, कभी उसके यहां देर हो जाने पर, मुझे बिना उसके संग खिलाए नहीं आने देती थीं. मुझे खीर पसंद थी, तो रूपा को सेवइयां. जिस तरह मम्मी मेरे लिए खीर अवश्य बनाती थीं, उसी तरह रूपा के लिए उसकी मां सेवइयां बनाती थीं.

एक बार की बात है. गर्मियों के दिन थे. स्कूल बंद थे. दिन भर हम लोग खूब धमा-चौकड़ी मचाते. सारे दिन खूब लू चलती, कड़कती धूप और गर्मी में कमरे से बाहर निकलना मुश्किल था. बंद कमरे में मैं और रूपा पूरा-पूरा दिन गुड्डे और गुड़ियों के लिए पोशाकें सिया करते थे.

एक दिन सुबह-सुबह रूपा आई और कहने लगी—"आज मेरे घर तुम्हें खाना होगा. मां ने तुम्हें बुलाने के लिए मुझे भेजा है."

"आज क्या है? कोई जन्म-दिन या त्यौहार?" मैंने रूपा को छेड़ते हुए पूछा.

"कुछ नहीं, ऐसे ही मां का मन आ गया है!"—रूपा ने कहा.

"तब तो सेवइयां जरूर बनी होंगी!" मैंने चहकते हुए कहा.

"हां, लेकिन आज मां ने वे तुम्हारे लिए बनाई हैं. कह रही थीं कि मीनू को आज मन भर खिलाऊंगी!" रूपा ने बहुत स्नेह से कहा.

"बाप रे! मन भर!" मैंने आंखों को आश्चर्य से नचाते हुए कहा. "इतना तो मेरा वजन भी नहीं है!"

तभी कमरे में मम्मी आ गईं. उन्हें सूचना देने के उद्देश्य से या रूपा के यहां खाने पर जाने के लिए उनकी अनुमति लेने के लिए, मैंने हंसते हुए मम्मी से कहा—"रूपा मुझे बुलाने आई है. इसकी मां ने मन भर सेवइयां खाने को मुझे बुलाया है! भला मन भर सेवइयां रखने के लिए प्लेट कितना बड़ा होगा!"

मम्मी मेरी इस बात से खीझ गई थीं या फिर हो सकता है रूपा के यहां खाने की बात से चिढ़ गई हों. उन्होंने डांटते हुए कहा—"उतनी सेवइयां रखने के लिए प्लेट चाहे मिले या न मिले परंतु तेरी जबान इतनी बड़ी है कि उस पर दो हजार मन सेवइयां आ सकती हैं!"

मैं मम्मी के तेवर को देखकर सहम गई और झेंपकर रूपा का उतरा हुआ चेहरा निहारने लगी. वह भी मम्मी की खीझ से सकपका गई थी. मम्मी अक्सर मेरे किसी के यहां खाने-पीने पर रोक लगाया करती थीं. बाजार का सामान तो वह खाने ही नहीं देती थीं. कभी स्कूल से लौट कर आती और पेट के दर्द की शिकायत करती, तो मुझ पर चिल्ला पड़ती थीं—"जरूर तूने अंट-संट चीजें खाई होंगी. वह जो खोमचे वाले सामान बेचते हैं, न मालूम कितने दिनों का बासी-तिबासी रहता है. उसके खाने से पेट नहीं दर्द करेगा, तो और क्या होगा!"

शाम को जब पापा आते, तो उनसे मेरी शिकायत करतीं—"आज तुम्हारी लाड़ली बेटी फिर पेट-दर्द लेकर पड़ी हुई है. घर की बनी चीजें इसे अच्छी ही नहीं लगतीं!"

www.kissekahani.com

kissekahani.com

तब पापा मुझे प्यार से मम्मी के सामने समझाते—"खोमचे वालों का सामान न खाया करो. उसमें धूल-गर्द पड़ा करती है. फिर कई दिनों का बासी भी रहता होगा. उसके खाने से पेट की बीमारियां हो जाया करती हैं."

तब मैं रुआंसी होकर पापा से अपने को निरपराध बताते हुए कहती थी—"मैंने बाहर कुछ नहीं खाया है आज. . .रूपा के यहां खाने की छुट्टी में अलबत्ता गई थी. उसकी मां ने सेवइयां खाने को दी थीं."

इसपर मम्मी और भी तुनक जातीं और बड़बड़ा कर कहतीं—"अबसे घर के अलावा तुझे और कहीं नहीं खाना है. चट्टू तो है ही, ज्यादा खा लिया होगा या फिर कल शाम की बासी होंगी सेवइयां!"

तब से रूपा के यहां भी मम्मी के भय से नहीं खाती थी. किसी दिन रूपा की मां खाने की ज्यादा जिद करतीं, तो खा लेती थी. परंतु रूपा से तभी अलग चुपके से कह देती थी—"मेरी मम्मी को न बताना कि आज मैंने तुम्हारे यहां कुछ खाया है, नहीं तो डांट पड़ेगी."

तभी रूपा उदास चेहरे से मेरी ओर देखते हुए कह उठती थी—"लेकिन मेरी मां तुम्हारे यहां खाने के लिए मुझे कभी नहीं डांटतीं. बस किसी और के यहां ही खाने के लिए मना करती हैं. वह तो जब कोई चीज बनाती हैं, तो मेरे साथ तुम्हारा भी हिस्सा पहले से लगा लेती हैं. कहती हैं जैसे रूपा वैसे मीनू!"

सो उस क्षण रूपा का उतरा हुआ चेहरा देखकर मैं भी उदास हो गई थी और जैसे इन बातों से छुटकारा पाने के लिए ही उसने कहा था—"यह सब मम्मियों की बातें हैं, वे लोग ही जानें!"

●

लेकिन कई दिन बाद जब मम्मी ने न जाने क्या सोचकर रूपा के यहां खाने के लिए हामी भर दी, तो रूपा का चेहरा खिल उठा था. मैं भी बहुत खुश हुई थी. शायद बहुत दिनों के बाद रूपा के साथ उसकी मां की बनाई हुई चीजों को खाने का अवसर मुझे मिला था.

kissekahani.com

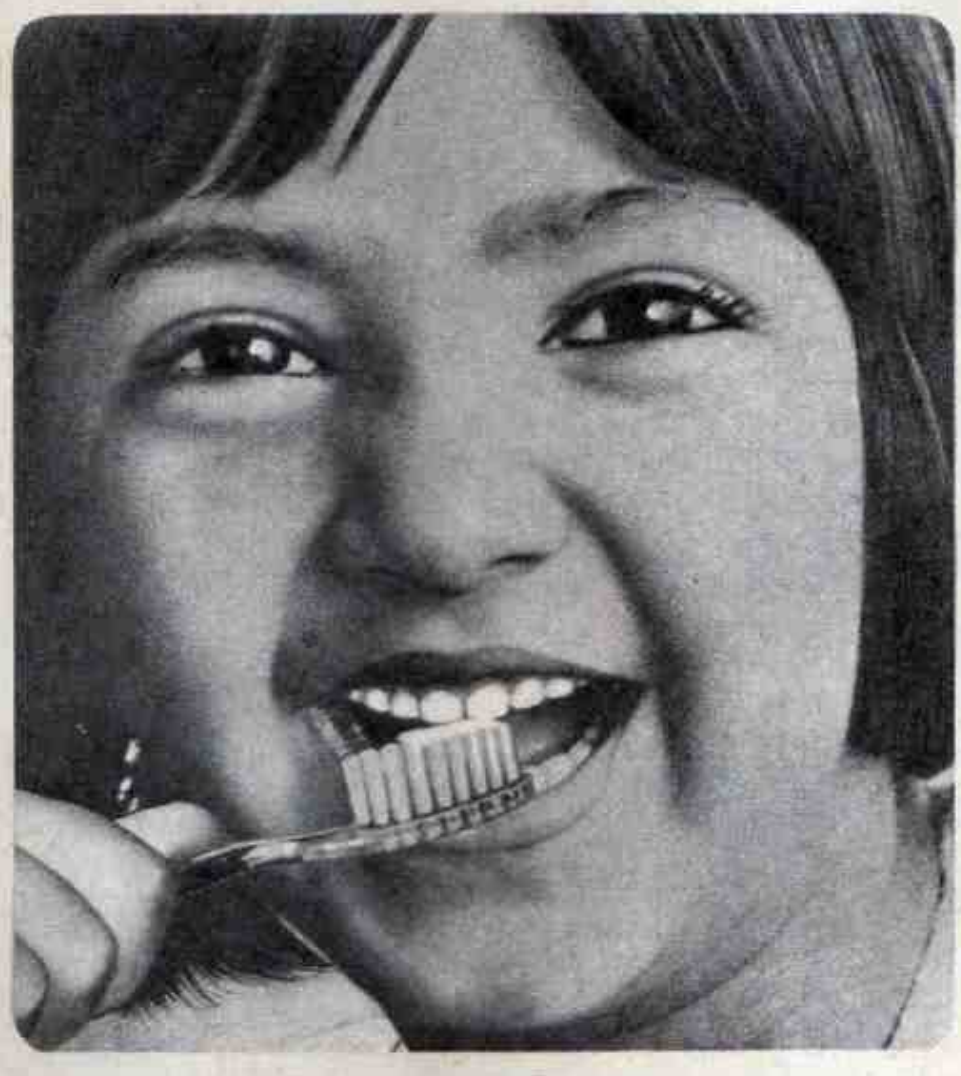

कोलगेट डेन्टल क्रीम से सांस की दुर्गंध रोकिये... दंतक्षय का दिन भर प्रतिकार कीजिये!

वैज्ञानिक परीक्षणों से यह सिद्ध हो चुका है कि १० में से ७ लोगों के लिए कोलगेट सांस की दुर्गंध को तत्काल खत्म कर देता है और कोलगेट विधि से खाना खाने के तुरंत बाद दांत साफ़ करने पर अब पहले से अधिक लोगों का— अधिक दंतक्षय रुक जाता है। दंत-मंजन के सारे इतिहास की यह एक बेमिसाल घटना है। क्योंकि एक ही बार दांत साफ़ करने पर कोलगेट डेन्टल क्रीम मुंह में दुर्गंध और दंतक्षय पैदा करने वाले ८५ प्रतिशत तक रोगाणुओं को दूर कर देता है। केवल कोलगेट के पास यह प्रमाण है। इसका पिपरमिंट जैसा स्वाद भी कितना अच्छा है— इसलिए बच्चे भी नियमित रूप से कोलगेट डेन्टल क्रीम से दांत साफ़ करना पसंद करते हैं।

ज़्यादा साफ़ व तरोताजा सांस और ज़्यादा सफ़ेद दांतों के लिए...
दुनिया में अधिक लोग दूसरे टूथपेस्टों के बजाय कोलगेट ही खरीदते हैं!

DC.G.41HN

kissekahani.com

तभी मां किचन की ओर चली गई. और जब लौट कर कमरे में आईं, तो उनके हाथों में खीर की दो कटोरियां थीं. मेरे और रूपा के सामने कटोरियां रखते हुए मां ने थोड़ा हंसकर कहा—"घर से कुछ खाए बिना बाहर नहीं निकला जाता." और इतना कहकर मां शायद हम लोगों के लिए पानी लाने चली गईं.

●

रूपा के यहां से लौटी, तो बाहर दहलीज तक आते आते मुझे उल्टी हो गई. खूब मितली आ रही थी. मम्मी ने शायद भीतर से ही मेरी उल्टियों का स्वर सुन लिया था. वह भागी हुई अंदर से आईं. मुझे दहलीज पर उल्टी करते देखकर वह सकपका गईं. दहलीज का पूरा फर्श गंदा हो गया था. मेरे कपड़े भी खराब हो गए थे. मम्मी मुझे बांहों के सहारे अंदर कमरे में ले गईं. लेकिन मेरी मितली बंद नहीं हो रही थी और मुझे उल्टी पर उल्टी होती जा रही थीं. घर में कुहराम-सा मच गया था. पापा भी आफिस से बुला लिये गए. मैं बेहाल-सी खाट पर पड़ी हुई थी. पेट में भयानक दर्द आरंभ हो गया था.

मेरी हालत देखकर पापा एकदम से घबड़ा गए. बोले—"अभी तो सुबह यह बिल्कुल भली-चंगी थी. अचानक इसे क्या हो गया?"

मम्मी ने क्रोध से कहा—"इसी से पूछो!"

"इससे क्या पूछूं? साफ साफ क्यों नहीं बतातीं क्या हुआ?" पापा मम्मी की बात से खीझ गए थे.

पापा का तमतमाया चेहरा देखकर मम्मी ने शांत भाव से बतलाया—"आज इसे रूपा की मां ने कुछ खाने के लिए बुलाया था. न जाने क्या क्या, कैसी कैसी चीजें इसने वहां खाई हैं! घर आते ही उल्टियां शुरू हो गईं."

मम्मी की बातें सुनकर मैं कुछ कहना चाह रही थी, लेकिन भय के कारण एक शब्द भी मेरे मुंह से नहीं निकल सका. पेट के दर्द से कराह रही थी. मितली से मन न जाने कैसा कैसा हो रहा था.

तभी रूपा आ गई. मुझे खाट पर पड़ी देखकर वह भौंचक्की रह गई. मुझे पापा और मम्मी से घिरा पाकर वह और सहम गई थी.

मम्मी ने रूपा की ओर उपेक्षा से देखते हुए बड़े रोष से कहा, "मेरी बच्ची को मार डालने के लिए आज अपने घर लिवा ले गई थी यह!"

मम्मी की कड़क आवाज से रूपा एकदम कांप-सी गई. वह रुआंसी-सी होकर मम्मी का तमतमाया चेहरा चुपचाप देखने लगी. शायद वह मम्मी की बातों का अर्थ नहीं समझ पाई थी.

मम्मी ने पुनः रूपा से पूछा—"तुम्हारे यहां क्या खाया था इसने?"

इस बार रूपा की आंखों में आंसू छलक आए और उसने बहुत धीमे स्वर में कहा—"मेरे यहां आज तो इसने कुछ भी नहीं खाया!"

रूपा की बात पर मम्मी उत्तेजित हो उठीं और कठोर स्वर में बोलीं—"झूठ बोलती है! ले किस लिए गई थी?"

"सच कहती हूं, आंटी, मीनू ने आज मेरे यहां कुछ भी नहीं खाया. . ." रूपा ने सिसकते हुए कहा—"मेरे घर पहुंचते पहुंचते ही इसका जी मितलाने लगा था और यह बाहर से ही वापस लौट आई थी!"

रूपा की बातें सुनकर मम्मी हतप्रभ रह गईं. आश्चर्य से उनकी आंखें खुली की खुली रह गईं. पापा की भी कुछ समझ में नहीं आ रहा था. उन्होंने थोड़ी परेशानी से पूछा, "तब आखिर इसने क्या खाया?"

"आज तो सिर्फ इसने खीर खाई थी. बल्कि रूपा के साथ में खाई थी!" कहते कहते मम्मी का चेहरा फक पड़ गया, जैसे उन्हें अभी कुछ याद पड़ गया हो.

तभी मेरे चेहरे के पास अपना आशंकित चेहरा लाकर मम्मी ने धीरे से फुसफुसाकर मुझसे पूछा, "खीर की जो कटोरी मैंने तुझे दी थी वही कटोरी वाली खीर तूने खाई थी न?"

मैंने आहिस्ता से सिर हिलाते हुए धीरे से कहा, "नहीं. . . उस कटोरी में खीर ज्यादा थी, इसलिए मैंने अपनी कटोरी रूपा को दे दी थी और उसकी कटोरी खुद ले ली थी. . ."

इस बात को सुनकर मम्मी के मुंह से हल्की-सी चीख निकल गई, जैसे उन्होंने अपने पैरों पर स्वयं कुल्हाड़ी चला ली हो. फिर संभल कर बोलीं—"तुझसे कटोरी बदलने को किसने कहा था?"

पापा भी इन बातों को बड़े कुतूहल से सुन रहे थे. शायद उन्हें कुछ बातें पूरी तौर पर समझ में नहीं आईं, इसलिए उन्होंने जरा तेज स्वरों में मम्मी से पूछा—"यह कटोरी की अदल-बदल की बातें मेरी समझ में नहीं आ रही हैं. साफ-साफ क्यों नहीं बतातीं?"

अब मम्मी का चेहरा स्वयं एक अपराधिन की भांति जर्द पड़ गया था. उन्होंने धीरे से आंखों को नीचे झुकाते हुए पापा को बतलाया—"कल सुबह की बनी थोड़ी खीर बच गई थी. मैंने सोचा इसे फेंकने से अच्छा है कि इसे रूपा खा ले, लेकिन उस कटोरी की खीर मीनू अपनी कटोरी से बदल कर खा गई!"

मम्मी की बातें सुनकर पापा एकदम से भभक उठे—"चलो, अच्छा हुआ! नहीं तो बेचारी एक पराई बच्ची की यह दशा होती! हूं. . . .अपनी बच्ची को ताजा और गैर की बच्ची को बासी! शर्म नहीं आई. . .?"

पापा की बात सुनकर मैं रूपा का कोमल और भोला चेहरा निहारने लगी. तभी पापा ने बहुत रोष के साथ मम्मी से कहा, "जिस चीज को तुम अपने बच्चों को नहीं खिला सकतीं, उसे पराये बच्चे को खिलाने का तुम्हें क्या अधिकार है? फिर इन बच्चों के लिए भेद-भाव कैसा! यह तो एक ही जैसे मासूम और प्यारे होते हैं!"

मम्मी का मन भर आया था. उन्हें भीतर ही भीतर स्वयं पर भारी ग्लानि हुई थी. अपने पास शांत और सहमी-सी खड़ी हुई रूपा को बहुत प्यार से मम्मी ने अपनी बांहों में भर लिया था. ●

द्वारा श्री बांकेलाल मेहरोत्रा,
स्टेट बैंक आफ इंडिया, टांडा, फैजाबाद (उ. प्र.).

kissekahani.com

हास्य कहानी

गप्पीराम

मनमोहन मदारिया

शहर नरसिंहपुर का मोहल्ला आजाद वार्ड एक समय गप्पीराम के नाम से ही जाना जाता था. वैसे, देखने-सुनने में उनमें कोई खासियत नहीं थी. कद से न ज्यादा ऊंचे, न ज्यादा ठिगने. आंखें न बहुत बड़ी, न बहुत छोटी. सिर पर न चांद, न घुंघराले बाल. पांच-दस लोगों के झुंड में खड़े हो जाएं, तो चेहरे-मोहरे से पहचानना मुश्किल. मगर मसल है न कि पक्षी अपनी बोली से जाना जाता है; काक और कोकिला का भेद उनके मुंह खोलते ही पता चलता है. बतियाते हुए गप्पीराम भी लाखों की भीड़ में अलग नजर आते थे. किसी ने जैसे गप्पीराम को ही ध्यान में रखकर कहा है—उनके मुंह में जीभ नहीं है, कतरनी है—तेज और पैनी कतरनी!

गप्पीराम बातें बनाने की कला मानो मां की कोख से ही सीख कर आए थे. स्कूल में तो उल्टे वही गुरुजी को पढ़ाते थे. गणित के गुरुजी पूछते—"दस पैसे में एक आम मिलता है, तो एक रुपये में कितने आम मिलेंगे?"

गप्पी जवाब देते—"बीस तक भी मिल सकते हैं, पंडित जी!

"बीस तक कैसे मिल सकते हैं?" गुरुजी पूछते.

"आप मुझे रुपया दीजिए, मैं बीस से भी ज्यादा आम लाकर बता सकता हूं," गप्पी कहते, "यह तो भाव-ताव करने पर है. जिसे भाव-ताव करना आता है, वह रुपये के बीस आम पा जाएगा; जिसे नहीं आता, उसे एक आम नहीं मिलेगा!"

"बैठ जाओ!" गुरुजी कहते, "तुम्हें गणित कभी समझ में नहीं आएगा!"

भाषा के गुरुजी निबंध लिखने को कहते—'तुम क्या बनोगे?' इस विषय पर तीन पृष्ठों का एक निबंध लिखो. गप्पी ने यह निबंध तीन वाक्यों में पूरा कर दिया, लिखा—'भविष्य के बारे में कोई कुछ नहीं कह सकता. भगवान जिसे जो बनाएगा, वही वह बनेगा. इससे ज्यादा इस विषय पर कोई क्या लिख सकता है!'

गुरुजी ने गप्पी का यह 'मिनी-एसे' देखा, तो आगबबूला हो गए. "गेट आउट!" कड़ककर वह बोले.

गप्पी इस बार कक्षा से जो बाहर निकले, तो लौटकर कभी वहां न गए. स्कूल से छुट्टी पाकर अपने इलाके का प्रत्यक्ष भूज्ञान प्राप्त करने के लिए जहां-तहां की पद-यात्राएं करने लगे. इसी दरमियान उन्होंने संत-महंतों, मौलवी-औलिया, गुंडे-उठाईगीरों, बेड़नियों, मदकचियों आदि का (कु) संग कर अपने सामान्य ज्ञान-कोष में अपार वृद्धि कर ली.

●

गप्पीराम की बातें ज्ञानवर्द्धक होने के साथ साथ चटपटी और चटपटी के साथ साथ रसीली होतीं. वह बतरस के बादशाह थे. जहां खड़े हो जाते, लोगों का ठट्ठ लग जाता. कोई नगर की बात करता तो वह राज्य की हांकते. कोई राज्य की बात करता तो वह देश की बात ले उड़ते. इधर तो वह दूसरे ग्रहों और अन्य सौर-मंडलों की बातें भी करने लगे थे. सामने वाले ने कहा, "कलेक्टर साहब हमें बहुत मानते हैं. हमारे कहने से मिडवानी माई के मेले में उन्होंने प्याऊ का बंदोबस्त कर दिया!"

"भैया की बातें!" गप्पीराम अपने ढंग से मुस्कराकर कहते, "कलेक्टर क्या करेगा? वह तो उस दिन हमें मुख्य मंत्री ठाकुर भैया मिल गए थे. हमने थोड़ा उलाहना दे दिया. वह बोले हम आज ही कलेक्टर को डपट देंगे...तो कलक्टर बेचारा तो हुकुम का गुलाम है. न हमने ठाकुर भैया से कहा होता और न मेले में प्याऊ लगती!"

बिरजू ने एक बार प्रेमचंद का नाम लिया, कहा—"प्रेमचंद्र जैसा साहित्यकार नहीं."

"हां, इसका वास्तविक रहस्य हम तुम्हें बताते हैं, बिरजू," गप्पीराम बोले, "मास्को में एक बार हमें टालस्टाय मिल गए. वह अपना उपन्यास 'वार एंड पीस' दिखाने लगे. पूछा—'यह पढ़ा है?' हमने कहा—'यह तो कोरी नकल है महाभारत की!' सुनकर वह बड़

kissekahani.com

गए. तो, भैया, इस भारत की मिट्टी में ही यह खूबी है कि यहां जसा साहित्यकार दूसरी जगह पैदा नहीं हो सकता. दुनिया का इतिहास छान लो, है कहीं कालिदास की जोड़ का साहित्यकार?"

आश्चर्यचकित बिरजू ने पूछा—"दादा, यह मास्को कहां है? क्या जबलपुर जिले में है?"

"ले इतना भी नहीं जानता," गप्पीराम बोले, "मास्को रूस देश में है. रूस देश का नाम तो सुना है न?"

"रूस तो, सुनते हैं, बड़ी दूर है यहां से!" बिरजू बोला, "तो क्या आप रूस भी हो आए हो?"

"हम कहां नहीं गए, बिरजू!" गप्पीराम बोले, "ये बाल धूप में नहीं पकाए. ठौर-ठौर घूमे हैं, खूब धूल फांकी है, तब अकल की यह दाढ़ निकली है!"

बिरजू जैसे नई उमर के लड़के तो गप्पीराम को बस देखते ही रह जाते थे.

गप्पीराम के ठाठ उन दिनों देखन लायक होते जब आम चुनाव होते. उनके पास जमानत की रकम होती, तो वह कब के विधान सभा में नजर आते. मगर खैर, विधान सभा में नरसिंहपुर निर्वाचन-क्षत्र से जो भी आदमी चुना जाता, वह उनका ही होता! चुनाव के वक्त हर उम्मीदवार उन्हें अपने पक्ष में रखना चाहता. तब उनकी बन आती. जो सबसे ज्यादा रकम देता और सो भी पेशगी, वह उसी की जयजयकार बोलते. उसके गुणों का मुक्त कंठ से ऐसा धाराप्रवाह बखान करते कि मतदाता-जन 'वाह वाह' कर उठते और बेहिचक उसे ही वोट देते. विरोधी उम्मीदवारों की इस कदर निंदा करते, इतनी मीन-मेख निकालते कि उन्हें दिन में तारे नजर आ जाते, जवाब देने के लिए बंगले झांकने लगते, उन्हें जमानतें बचाने की पड़ जाती.

पिछले बीस वर्षों से गप्पीराम की दाल-रोटी इस तरह मजे से पक रही थी. अब वह प्रौढ़ हो गए थे.

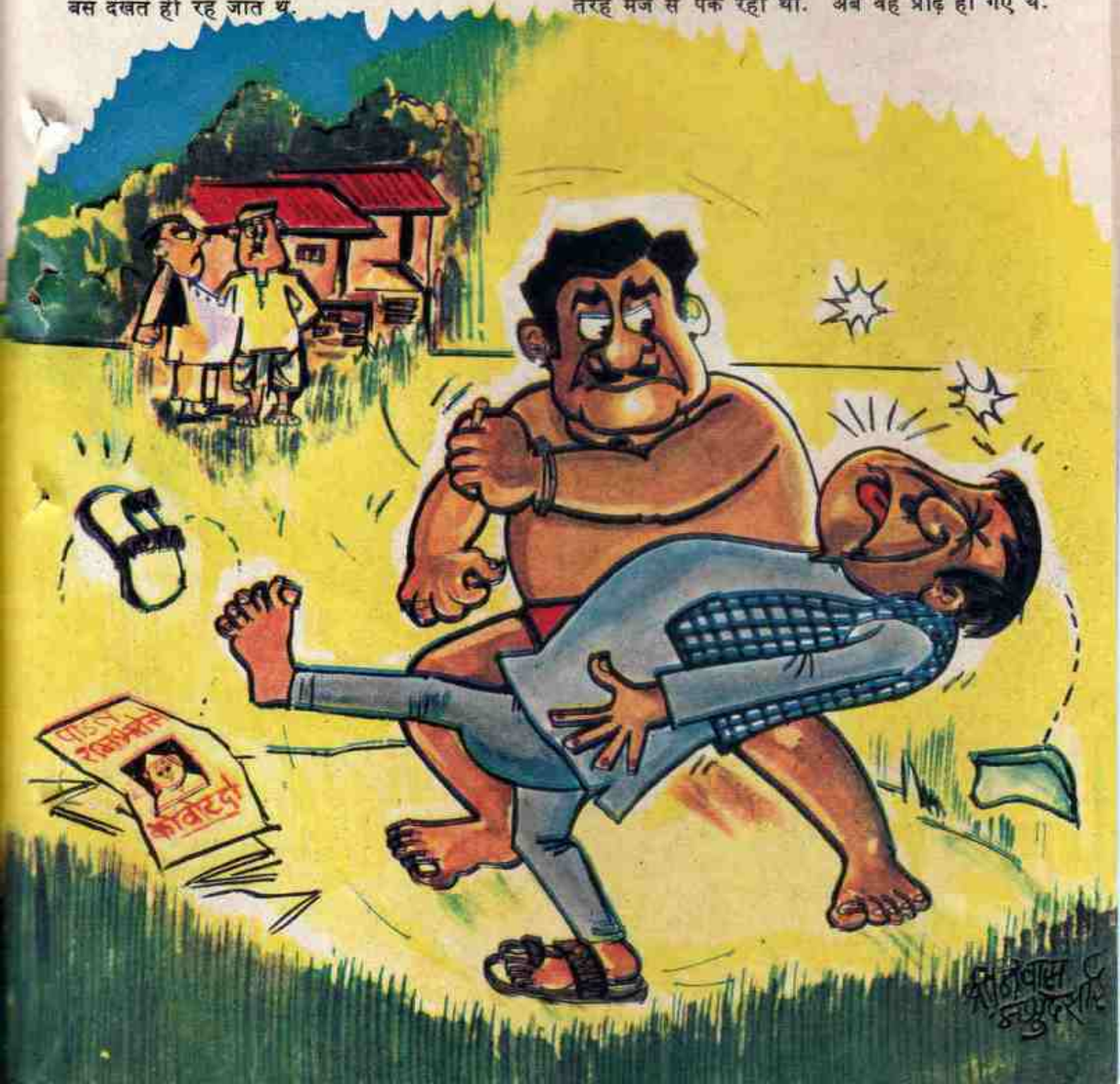

kissekahani.com

उम्र के साथ उनकी वाक्-शक्ति भी अधिक तीक्ष्ण हो गई थी. ऐसी लच्छेदार और घुमावदार बातें करते, जैसी सिर्फ वही कर सकते थे. अपने उम्मीदवार को विजयी बनाने के लिए वह दूसरी तिकड़में भी करते. पिछले आम चुनाव में विरोधी उम्मीदवार पंडित रामभरोसे जरा भारी पड़ रहे थे, क्योंकि अधिकांश मतदाता उन्हीं की बिरादरी के थे. गप्पीराम के उम्मीदवार चौधरी भैरोंसिंह घबड़ाए.

"तुम फिक्र मत करो," गप्पीराम ने उन्हें धीरज बंधाया. "मैं इस रामभरोसे की वह गत बनाऊंगा कि राम का भरोसा धरा रह जाएगा! जीतेगा वही जो राम भरोसे नहीं, गप्पीराम भरोसे होगा!"

और एक सभा में गप्पीराम ने कहा, "भाइयो, पंडित रामभरोसे पाखंडी ब्राह्मण है. मांस-मछली खाने वाला कैसे सच्चा ब्राह्मण हो सकता है? सबूत चाहो, तो उसके घर की तलाशी ले लो!"

लोगों ने जब पंडित रामभरोसे के घर की तलाशी ली, तो वहां नुची हुई हड्डियां मिलीं. पंडित रामभरोसे बोले, "भाइयो, मैं मांस-गोश्त नहीं खाता. ये हड्डियां तो किसी शरारती ने मेरे घर में फेंक दी हैं. मैं किसी की भी सौगंध खाने को तैयार हूं . . ."

मगर उनकी बात को किसी ने नहीं माना. चुनाव में पंडित रामभरोसे की जमानत जब्त हो गई. चौधरी भैरोंसिंह ने मैदान मार लिया.

●

आठ माह बाद मध्यावधि चुनाव क्या आया, बिल्ली के भाग्य से मानो छींका टूटा. गप्पीराम की तो बन आई. अब उन्होंने अपने रेट और ऊंचे कर दिए. चौधरी भैरोंसिंह एक बार जीत चुके थे. इस बार भी उन्हें जीतने का पूरा विश्वास था. उन्होंने गप्पीराम को मुंहमांगे रुपये गिनने से इंकार किया. गप्पीराम ने दूसरे उम्मीदवार से बात चलाई. आखिर पंडित रामभरोसे ने मुंहमांगी रकम पेशगी देकर गप्पीराम को अपना प्रचार-एजेंट नियुक्त कर लिया.

गप्पीराम जोर-शोर से पंडित रामभरोसे के गुणों का बखान करने लगे, विरोधी उम्मीदवारों में कुत्सित अवगुण दर्शाने लगे. पक्ष और विपक्ष में जुलूस निकलने लगे. सभाएं होने लगीं. रात-दिन लाउड-स्पीकार गरजते. नारे सुन पड़ते—

'जीतेगा, भाई—जीतेगा, अमुक छाप जीतेगा!'

'हारेगा, भाई, हारेगा—तमुक छाप हारेगा!!'

गप्पीराम पंडित रामभरोसे को जिताने के लिए हर चाल चल रहे थे. दरअसल यह पंडित रामभरोसे की नहीं, गप्पीराम की इज्जत का सवाल था, उनकी रोटी-रोजी का सवाल था.

मतदान की तारीख निकट आई, तो गप्पीराम पंडित रामभरोसे को लेकर घर-घर जाने लगे, व्यक्ति-व्यक्ति से मिलने लगे. वह कंदेली में तनसू पहलवान के अखाड़े पर भी गए. तनसू तेईस साल का नौजवान था—खूब गठी हुई काठी का सांवला गबरू जवान. पिछले आम चुनाव में पहली बार ही उसने वोट दिया था. गप्पीराम ने उसकी पीठ पर दुलार से हाथ फेरते हुए कहा, "बेटा तनसू, मालूम है न, आठ तारीख को मतदान है. पंडित रामभरोसे जी को वोट देना है. याद रखना रामभरोसे जी बड़े योग्य और चरित्रवान व्यक्ति हैं."

"मगर, महराज," तनसू पहलवान ने गप्पीराम का हाथ झटकते हुए कहा, "तुमने तो कहा था, यह पाखंडी है, ब्राह्मण होकर मांस-मछली खाता है!"

"तू कहां की बात लिये है, बेटा?" गप्पीराम बोले, "वह तो पुरानी बात हुई. मैं तो आज जो कह रहा हूं उसको मान. कहा है न, बीती ताहि बिसार दे और आगे की सुधि ले . . ."

"मर्द की जबान एक होती है, मगर तेरी जबान. . ." कहते हुए तनसू पहलवान ने गप्पीराम को एक भरपूर हाथ दिया. वह धूल चाटने लगे. तनसू गरजा—"कमीने, लबाड़िए! लोगों को बरगलाता है! आज मैं तेरी जुबान दुरुस्त कर दूंगा!" और उसने गप्पीराम को ऐसे पीटना शुरू किया जैसे धोबी कपड़े को पछाड़ता है.

गप्पीराम चीखे,—"माफ कर दो, पहलवान भैया, माफ कर दो. अब ऐसी उल्टी-सीधी बातें नहीं करूंगा. कसम खाता हूं. मेरा एतबार करो. . ."

"तेरा क्या एतबार! झूठे, लबाड़!" और तनसू पहलवान ने गप्पीराम की ऐसी ठुकाई की कि उनकी बोलती बंद हो गई.

निर्धारित तारीख को मतदान हुआ. चुनाव-फल निकला. इस बार भी गप्पीराम के उम्मीदवार पंडित रामभरोसे विजयी हुए, मगर उन्हें इसलिए विजय मिली, क्योंकि पहलवान तनसू से सबक पाकर गप्पीराम आगे चुप रहे थे. उनकी इस चुप्पी ने ही पंडित रामभरोसे को विजयी बना दिया था.

गप्पीराम अब कोई दूर की नहीं, पास की ही कौड़ी लाने लगते हैं, तो उनके कानों में पहलवान तनसू की बात गूंज उठती है—मर्द की जबान एक होती है. और वह पास की कौड़ी भी उनके हाथ से फिसल जाती है! वह मन मसोस के चुप रह जाते हैं.

शहर नरसिंहपुर के मोहल्ला आजाद वार्ड का बतरस का बादशाह वह गप्पीराम गप्पों की अपनी सल्तनत खोकर अब एकदम मौनी बाबा हो गया है—बेचारा और बेजबान फकीर. अब कोई भूला-भटका चुनाव-उम्मीदवार उनके पास आता भी है, तो वह दूर से हाथ जोड़ लेते हैं—"ना, बाबा, ना, अब हम चुनावों के पचड़े में नहीं पड़ते! हमने सारा माया-मोह छोड़कर अब वैराग्य ले लिया है!"

गप्पीराम को लोग-बाग अब इस वजह से चुप्पीराम कहने लगे हैं, तो गलत क्या है? ●

एफ १०५/५ (१४६४), टी. टी. नगर, भोपाल-६.

टेलीफोन (पृष्ठ ७ से आगे)

दादा जी ने अखबार समेटा और छत पर आ गए. इस समय उनका चेहरा रुआंसा हो रहा था. मम्मी ने खाने के लिए पूछा तो, बोले—"अभी मुझे भूख नहीं है."

दादा जी ने कहने को तो अखबार फैला रखा था, किंतु उनका मन नाटक में भटक रहा था. वह आंखें मूंद कर कल्पना कर रहे थे कि अब किसी दृश्य पर दर्शकों की आंखें भर आई होंगी. अब हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा होगा.

सहसा दादा जी ने आंखें खोलकर जो सामने देखा, तो उनकी पलकें झपक गईं. उन्होंने दुबारा देखा—हां, उनकी नजरें धोखा नहीं खा रही थीं. अपने घर की छत पर टिंकू ही खड़ा था. उसका मुंह दूसरी ओर था. टिंकू का मकान उसी लाइन में कोने वाला था. सब मकानों की छतें मिली हुई थीं.

दादा जी ने और ध्यान से देखा, तो पाया कि टिंकू के घर की छत पर जो काली दरी बिछी हुई है, वह वास्तव में दरी नहीं—दीवार की ओट में छुपे बच्चों के सिर थे.

दादा जी पलक झपकते सारा माजरा समझ गए.

●

बच्चों तक पहुंचने के दो रूट दादा जी के सामने थे. पहला था—बाई रोड, सीढ़ियां उतरकर गली में से होकर टिंकू के घर, फिर वहां की सीढ़ियां चढ़कर बच्चों तक पहुंचना. दूसरा रूट था—बाई एयर, सीधा छतों पर होते हुए मकानों के बीच की छोटी छोटी दीवारें फलांगते हुए लक्ष्य तक पहुंचना.

दादा जी ने एयर रूट लेना ही ठीक समझा और छतों पर होते हुए तेजी से टिंकू के घर की ओर बढ़ चले.

जब दादा जी बच्चों तक पहुंचे, तो टिंकू और बबली में बहस चल रही थी. बबली नाटक का पहला अंक समाप्त होने की खुशी में दादा जी को फोन करना चाहता था. टिंकू कह रहा था कि व्यर्थ फोन का बिल बढ़ाने से क्या लाभ? नाटक खत्म होने पर ही दादा जी को फोन करना उचित रहेगा. मधु, पिंकी, मुन्नू, पप्पू पढ़ रहे थे. आशा, किट्टी, राजू, मुनीश ताश पर जुटे थे. एक तीसरी टोली कैरम-बोर्ड पर झुकी हुई थी.

दादा जी दीवार पर चढ़कर धम्म से छत पर कूदे. दादा जी को इस तरह अपने बीच में पाकर बच्चों की जो दशा हुई, उसकी कोई उपमा नहीं दी जा सकती. मानो एक बड़े हॉल में चूहे बिल्ली के गले में घंटी बांधने के प्रस्ताव पर मीटिंग कर रहे हैं, चूहों का निकटतम बिल आधा किलोमीटर दूर है, हॉल के इकलौते दरवाजे पर बिल्ली की म्याऊं सुनकर चूहों की जो दशा होगी, लगभग वही हालत इस समय बच्चों की थी. जिसके हाथ में स्ट्राइकर था, उसका स्ट्राइकर गिर पड़ा. किसी के पत्ते, किसी का पेन सब जमीन सूंघने लगे.

दादा जी बिल्ली की तरह सोच रहे थे कि किस चूहे को पहले गड़प करें. आखिर दादा जी मुनीश की ओर बढ़े—"क्यों रे, तू भी मुझे चरका देने लगा? मैं तो सोचता था कि तू बड़ा होकर बड़ा आदमी बनेगा. . ."

दादा जी की पीठ पीछे से जाने कौन बोला—"दादा जी, बड़े होकर तो हम सभी बड़े आदमी बनेंगे!"

दादा जी की आंखें इस समय पूरी तरह मुनीश पर फोकस थीं. उसने दादा जी को बनाने में सक्रिय हिस्सा लिया था. दादा जी मुनीश की ओर बढ़े, तो वह घबराहट में बोला—"द द द. . . दा. . .दा जी, मैं सच कहता हूं, मेरा कोई दोष नहीं है. मैं तो बबली के कहने पर छत से होकर आपके और अपने घर गया था."

दादा जी ने भी सोचा कि झगड़े की जड़ तो बबली है. वह बबली से बोले—"क्यों रे, अब तू मुझसे प्रेक्टीकल जोक करने लगा है?"

बबली ने उत्तर दिया—"दादा जी, प्रेक्टीकल तो मैं प्रयोगशाला में भी नहीं करता, यहां क्या करूंगा!"

दादा जी बबली की ओर बढ़े—"अब मैं तुम्हें नाटक दिखाऊंगा—'होगी जीत हमारी'."

बबली पीछे हटता हुआ बोला—"दादा जी, अब नाटक का नाम बदलकर 'हो गई हार हमारी' कर दीजिए!"

बबली दादा जी को बातों में फंसाकर बच भागना चाहता था. किंतु दादा जी असावधान नहीं थे. इधर बबली ने दीवार के दूसरी ओर कूदने का यत्न किया, उधर दादा जी के शक्तिशाली हाथों ने उसे आ जकड़ा. अब यह बात पानी की तरह साफ थी कि बबली की जबरदस्त पिटाई होगी. सारे बच्चे सहमे हुए थे. बबली ने आंखें मूंद लीं.

टिंकू जाने कब नीचे खिसक लिया था. उसने दादा जी के घर का नंबर मिला दिया.

दादा जी का शक्तिशाली मुक्का बबली की पीठ पर पड़ने ही वाला था कि मम्मी छत पर आ पहुंचीं. वहीं से ऊंचे स्वर में मम्मी ने कहा—"पिता जी. . . आपका फोन!"

"मेरा फोन!" दादा जी प्रसन्नता से चिल्लाए और बबली को ज्यों का त्यों छोड़ कर 'बाई एयर' ही वापस दौड़ चले. ●

सी- ३, अरावली, आई. आई. टी.,
नई दिल्ली-२९.

kissekahani.com

१,००० रुपये के नकद इनाम — पराग उद्धरण प्रतियोगिता नं. १८

ज्ञानवर्द्धन व मनोरंजन के साथ साथ धन भी

सर्वशुद्ध या निकटतम पूर्ति पर ७०० रु., न्यूनतम अशुद्धियों पर ३०० रु.

बच्चों और किशोरों के लिए प्रस्तुत यह प्रतियोगिता उनकी अपनी प्रतियोगिता है. थोड़े से श्रम, अध्ययन और सूझबूझ से आप इस प्रतियोगिता में विजयी हो सकते हैं.

इस प्रतियोगिता के संकेत-वाक्य बच्चों के लिए प्रकाशित पुस्तकों से ही लिये गए हैं. इसलिए जो पाठक सबसे अधिक पुस्तकें पढ़ते होंगे, उनके लिए खेल खेल में एक हजार रुपये जीतने का यह स्वर्ण अवसर है.

सामने के पृष्ठ पर १२ संकेत-वाक्य दिए गए हैं. प्रत्येक वाक्य में एक शब्द का स्थान डैश लगाकर छोड़ दिया गया है. उसी पृष्ठ पर एक पूर्ति-कूपन है, जिसमें दो पूर्तियां दी गई हैं. जिस क्रमांक का संकेत-वाक्य है, प्रत्येक पूर्ति में उसी क्रमांक के आगे दो शब्द दिए गए हैं. उनमें से एक शब्द सही है, और दूसरा गलत. बस, आप गलत शब्द पर × का निशान लगा दीजिए.

'पराग उद्धरण प्रतियोगिता' में भाग लेने के नियम और शर्तें

१—एक पूर्ति-कूपन में दो पूर्तियां दी गई हैं. आप एक पूर्ति भरें या दोनों—पूरा कूपन बाहरी रेखाओं पर काटकर भेजना होगा. पूर्तियां 'पराग' में प्रकाशित पूर्ति-कूपनों पर ही स्वीकार की जाएंगी. यदि आप केवल एक ही पूर्ति भरें, तो दूसरी पूर्ति को क्रास कर दीजिए, और उसके नीचे पूर्ति क्रमांक आदि कुछ न भरिए.

२—पूरे कूपन की दोनों पूर्तियों का प्रवेश-शुल्क १ रुपया और केवल एक पूर्ति का प्रवेश-शुल्क ५० पैसे है. दोनों में से किसी भी पूर्ति को आप पहली मान सकते हैं. एक ही नाम से आप चाहे जितनी पूर्तियां भेज सकते हैं. एक ही लिफाफे में अनेक नामों और परिवारों की पूर्तियां भेजी जा सकती हैं. लिफाफे के अंदर रखी सभी पूर्तियों का सम्मिलित प्रवेश-शुल्क एक ही पोस्टल आर्डर, मनी आर्डर, या नकद रसीद से भेज सकते हैं. किंतु ऐसी सभी पूर्तियों के नीचे कुल पूर्तियों की संख्या, उनके क्रमांक, और पूर्ति-कूपन में पोस्टल आर्डर, मनी आर्डर की रसीद या नकद रसीद का नंबर लिखना अनिवार्य है. पोस्टल आर्डर, या डाकखाने से मिली मनी आर्डर की रसीद, या नकद रसीद पूर्तियों के साथ अवश्य नत्थी करके भेजिए. डाक-टिकट या करेंसी नोट प्रवेश-शुल्क के रूप में स्वीकार नहीं किए जाएंगे. आप कार्यालय में नकद रुपया जमा करके या डाक-खर्च सहित मनी आर्डर भेजकर ५० पैसे मूल्य की चाहे जितनी नकद रसीदें प्राप्त कर सकते हैं और उन्हें अगले चार महीने तक, प्रवेश-शुल्क के रूप में, पूर्तियों के साथ नत्थी कर सकते हैं.

३—स्थानीय प्रतियोगी अपनी पूर्तियां 'टाइम्स आफ इंडिया भवन' के प्रवेश द्वार पर बनी 'स्थानीय प्रवेश पेटी' में डाल सकते हैं. स्थानीय या डाक से आने वाली सभी पूर्तियों के लिफाफों के खुलने वाली तरफ भेजने वाले का पता, तथा उनके पीछे यह पता लिखा होना चाहिए—**'पराग उद्धरण प्रतियोगिता नं. १८', प्रतियोगिता विभाग, पोस्ट बैग नं. २०७, टाइम्स आफ इंडिया भवन, बंबई—१.'** मनी आर्डर फार्मों और रजिस्टरी से भेजे जाने वाले लिफाफों पर 'पोस्ट बैग नं. २०७' न लिखें. पोस्टल आर्डर क्रास कर दें. उसमें 'पाने वाले' के स्थान पर **'पराग उद्धरण प्रतियोगिता नं. १८'** और 'पोस्ट आफिस' के आगे—**'बंबई—१'**—लिखें. कृपया संपादक के नाम पूर्तियां या शुल्क न भेजें.

४—प्रथम पुरस्कार ७०० रु. उन प्रतियोगियों को मिलेगा, जिनकी पूर्तियों में संकेत-वाक्यों के सही पूरक शब्दों पर निशान नहीं होंगे, और सभी गलत शब्दों पर निशान लगे होंगे. यदि ऐसी कोई पूर्ति प्राप्त न हुई, तो उसके निकटतम अशुद्धियों वाली पूर्तियों पर प्रथम पुरस्कार दिया जाएगा. द्वितीय पुरस्कार ३०० रु. प्रथम पुरस्कार प्राप्त पूर्तियों से निकटतम अशुद्ध पूर्तियों पर प्रदान किया जाएगा. समान अशुद्धियों के एक से अधिक विजेताओं को घोषित पुरस्कार बराबर बराबर बांटे जाएंगे.

५—अपना नाम और पता प्रत्येक पूर्ति-कूपन पर सुपाठ्य और स्पष्ट अक्षरों में लिखिए. डाक में खो जाने वाली, विलंब से प्राप्त होने वाली, या गंदी व कटी-फटी पूर्तियां प्रतियोगिता में शामिल नहीं होंगी.

६—सभी पूर्तियां कार्यालय में पहुंचने की अंतिम तिथि सोमवार, ११ मई १९७० है. अपनी पूर्तियां भेजने के लिए अंतिम तिथि की प्रतीक्षा न कीजिए. निर्धारित अवधि के प्रारंभिक दिनों में ही पूर्तियां भेज देने से आप अनेक भूलों से बच सकते हैं. सर्वशुद्ध शब्दावली तथा संबंधित पुस्तकों व पुरस्कार विजेताओं की सूची 'पराग' के जुलाई ७० के अंक में प्रकाशित की जाएंगी.

७—प्रतियोगी को इस प्रतियोगिता से संबंधित प्रत्येक विषय में प्रतियोगिता संपादक का निर्णय अंतिम रूप से मान्य होगा. वैधानिक रूप से विवादास्पद विषयों में बंबई के संबद्ध न्यायालय को ही निर्णय देने का अधिकार होगा.

८—नियमों के प्रतिकूल तथा पूर्ति-कूपनों में आवश्यक विवरण से रिक्त कोई भी पूर्ति प्रतियोगिता में सम्मिलित नहीं की जाएगी. 'पराग' तथा संबद्ध प्रकाशनों के कर्मचारियों को इसमें भाग लेने का अधिकार नहीं होगा. ●

kissekahani.com

'पराग' उद्धरण प्रतियोगिता नं. १८ के संकेत-वाक्य

१. वे सब धर्मों के प्रति उदार हैं, तुम अपने——को नीच समझते हो, यही तुम्हारी भूल है.

२. सभी समासद्——की बात सुनकर गंभीर हो गए.

३. अम्बोपा कभी——की लाश को, कभी मूर्ति के टुकड़ों को देखता खामोश खड़ा रहा.

४. अगले दिन सभी तैयारियों में जुट गए. कुछ——और बहुत-सा दूसरा फालतू सामान बांध कर एक किसान के पास रखा.

५. अंत में——से लड़ने पर भी कलिंग की सेना को हारना ही पड़ा.

६. मेरे अनुभवों को सभी जगह प्रकाशित किया जाय. मेरी——को सर्वत्र फैलाया जाय.

७. नाटे कद का दिलचस्प जवान है——बजाना जानता है.

८. उसने तुरंत हमारी——की व्यवस्था रद्द कर दी.

९. उसे लेने के लिए तुम——से दौड़कर नुक्कड़ की दुकान तक नहीं जा सकते.

१०. उसके बाद उसकी चाल तेज और तेज होती जाती है और——सैकिंड में वह दृष्टि से ओझल हो जाता है.

११. इस——का मतलब क्या है, इसे समझने की आवश्यकता है.

१२. क्योंकि इस से पहले उनके मन में यह शंका थी कि कहीं आगे चलकर गंगा की धारा का प्रवाह——न हो जाए.

यहां से काटिए

अंतिम तिथि : ११-५-७०

'पराग' उद्धरण प्रतियोगिता नं. १८ (पूर्ति-कूपन)

शब्दों के प्रत्येक जोड़े में से जो शब्द आप गलत समझें, उस पर × का चिह्न बना दें. यदि आप केवल एक ही पूर्ति भरें, तो दूसरी पूर्ति को क्रास कर दें.

१	आप	बाप
२	युद्ध	बुद्ध
३	साथी	हाथी
४	बंदूकें	संदूकें
५	वीरता	धीरता
६	आज्ञाओं	आशाओं
७	गितार	सितार
८	रवोज	रोज
९	झट	चट
१०	बीस	तीस
११	कला	कथा
१२	मंद	बंद

१	आप	बाप
२	युद्ध	बुद्ध
३	साथी	हाथी
४	बंदूकें	संदूकें
५	वीरता	धीरता
६	आज्ञाओं	आशाओं
७	गितार	सितार
८	रवोज	रोज
९	झट	चट
१०	बीस	तीस
११	कला	कथा
१२	मंद	बंद

यहां से काटिए

पूर्ति क्रमांक : .... कुल पूर्ति संख्या : .... पूर्ति क्रमांक : .... कुल पूर्ति संख्या : ....

इस प्रतियोगिता में भाग लेते हुए मुझे प्रतियोगिता के सभी नियम व शर्तें पूर्णतया स्वीकार हैं.

नाम व पूरा पता (स्याही से) : _____

_____

_____

पोस्टल आर्डर / मनी आर्डर रसीद / नकद रसीद / का नंबर : .....

यहां से काटिए

kissekahani.com

CMCF-3-203 HIN

kissekahani.com

'पराग' उद्धरण प्रतियोगिता नं. १६ का परिणाम

एक अशुद्धि पर २ प्रतियोगियों ने प्रथम पुरस्कार जीता

सही उत्तर : १–मत, २–पढ़ाई, ३–पकड़ने, ४–डंडों, ५–पलटने, ६–कहीं, ७–घबराते, ८–जुता, ९–अंडा, १०–उड़ा, ११–लहराने, १२–उतर.

'पराग' उद्धरण प्रतियोगिता नं. १६ में सर्वशुद्ध हल कोई प्राप्त नहीं हुआ. इसलिए प्रथम पुरस्कार १ अशुद्धि पर २ प्रतियोगियों ने जीता. प्रत्येक को ३५० रुपये प्राप्त हुए. इसी प्रकार दो अशुद्धियों पर ११ प्रतियोगियों को पुरस्कार मिले. इनमें से प्रत्येक प्रतियोगी को २७ रुपये २८ पैसे प्राप्त हुए.

अगर आपको पूरा भरोसा है कि आप पुरस्कार के हकदार हैं और आपका नाम पुरस्कार विजेताओं की सूची में नहीं है, तो आप २० अप्रैल १९७० से पूर्व **प्रतियोगिता संपादक, 'पराग' उद्धारण प्रतियोगिता, पोस्ट बैग नं. २०७, टाइम्स आफ इंडिया प्रेस, बंबई–१** के पते पर एक पत्र लिखें, उस पत्र में अपनी पूर्ति की अशुद्धियों की संख्या, पोस्टल आर्डर, मनी आर्डर रसीद, या नकद रसीद का नंबर दें. साथ में जांच की फीस के रूप में १ रुपया मनी आर्डर या पोस्टल आर्डर द्वारा भेजें. यदि आपका दावा सही होगा, तो पुरस्कार की राशि को उसी के अनुसार फिर से वितरित किया जाएगा. **पुरस्कार की राशि अप्रैल १९७० में कार्यालय से भेजी जाएगी.**

१ अशुद्धि वाले २ विजेता : प्रत्येक को ३५० रुपये

१–जगदीशप्रसाद आर्य, द्वारा श्री गनपतराय आर्य, सदर बाजार, लाडनूं (राज.). २–कु. कुसुम चुघ, द्वारा श्री पी. एन. चुघ, बी. ए., डी ३३-बी, विजय नगर, दिल्ली–९.

२ अशुद्धि वाले ११ विजेता : प्रत्येक को २७ रुपये २८ पैसे

१–कमल नागपाल, श्रीगंगानगर (राज.). २–रामचंद्र वर्मा, चरखारी स्टेट (हमीरपुर) उ. प्र.. ३–कु. आशा चुघ, दिल्ली–९. ४–कु. मधु चुघ, दिल्ली–९. ५–मोहनलाल, भोपाल–१० (म. प्र.). ६–हरपालसिंह प्रेवाल, श्रीगंगानगर (राज.). ७–प्रीतमसिंह अरोरा, नई दिल्ली–५. ८–कु. कमलेश राणा, मोहन्द्रा, जि. पन्ना, (म. प्र.). ९–पी. के. राय, नई दिल्ली–५. १०–बी. के. तिवारी, मऊ (म. प्र.). ११–हुसेनसाहेब मुहम्मदअली तटगार, हुबली, जिला धारवाड़.

इस प्रतियोगिता में जिन पुस्तकों स संकेत-वाक्य लिय गए उनका परिचय

१–चंद्रशेखर वेंकट रामन—ले. संतराम वत्स्य—ज्ञानभारती, दिल्ली —पृ ११. २–उपर्युक्त—पृ. २०. ३–हरगोविंद खुराना —ले. व प्र. उपर्युक्त—पृ. ४०. ४–उपर्युक्त—पृ. ५१. ५–आजादी की पहरेदारी में—ले. सत्यदेवनारायण सिन्हा— नेशनल प. हाउस, दिल्ली—पृ. ७. ६–उपर्युक्त—पृ. ६९. ७–प्रेरक कथाएं—ले. श्रीकृष्ण—उपर्युक्त—पृ. २२. ८—उपर्युक्त—पृ. वही. ९–मीठा जहर—रूपांतरकार संतराम वत्स्य—ज्ञान भारती —पृ. १७. १०–उपर्युक्त —पृ. २१. ११–राष्ट्रीय गौरव के चिह्न—डा. हरिकृष्ण देवसरे—नेशनल प. हाउस —पृ १८. १२–उपर्युक्त —पृ. ३४.

भूल सुधार —मार्च अंक में प्रकाशित 'उद्धरण प्रतियोगिता नं. १५' के परिणाम की निम्नलिखित पुस्तकों के लेखक श्री संतराम वत्स्य हैं, श्री श्रीकृष्ण नहीं : 'आइंस्टाइन', 'एडीसन', 'न्यूटन', 'प्रफुल्लचंद्र राय', और, 'हमारे पशु'. भूल के लिए हमें खेद है. —सं.

kissekahani.com

१९६९ के विशेष डाक-टिकट

—गजराज जैन

विगत वर्ष हमारे लिए कई दृष्टियों से विशेष महत्वपूर्ण रहा. क्योंकि इस वर्ष हमने न केवल महात्मा गांधी, गुरु नानकदेव तथा मिर्जा गालिब जैसे महान पुरुषों की शताब्दियां मनाईं अपितु मनुष्य को चंद्रमा पर घूमते भी देखा. इन सभी अवसरों पर हमारे डाक-तार विभाग ने हमें नए नए डाक-टिकट भेंट किए. इस वर्ष निकले कुल २४ विशेष टिकटों का परिचय तुम्हारी जानकारी के लिए यहां दिया जा रहा है :

इस वर्ष का सब से पहला टिकट वर्ष के पहले दिन १ जनवरी १९६९ को प्रसिद्ध बंगला उपन्यासकार बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय की स्मृति में निकाला गया. बंकिम बाबू का जन्म बंगाल में २६ जून १८३६ को हुआ था. कलकत्ता विश्वविद्यालय से बी. ए. पास कर वह डिप्टी कलेक्टर बन गए. अपने जीवन काल में उन्होंने दुर्गेशनंदिनी, कपाल कुंडला, मृणालिनी, विषवृक्ष, कृष्णकांत का वसीयतनामा, आनंदमठ, देवी चौधरानी जैसे लोकप्रिय उपन्यासों की रचना की. हमारा राष्ट्र-गीत 'वंदेमातरम्' उनके आनंदमठ उपन्यास का ही अंश है. नीले रंग में छपे इस टिकट पर बंकिमचंद्र का चित्र अंकित है. (चित्र सं. १)

'भारतरत्न' डा. भगवानदास की जन्म शताब्दी के अवसर पर १२ जनवरी को गेरुआ रंग का टिकट निकाला गया. डा. भगवानदास का जन्म १२.१.१८६९ को बनारस में हुआ था. श्रीमती ऐनीबिसेंट से प्रभावित होकर आपने बनारस के सेंट्रल हिंदू कालेज की स्थापना की, जो बाद में बनारस विश्वविद्यालय के रूप में विकसित हुआ. आपने प्राचीन भारतीय जीवन एवं दर्शन पर हिंदी, संस्कृत में लगभग ३० पुस्तकें लिखीं. १८ सितंबर १९५८ को ८९ वर्ष की आयु में आपका देहांत हो गया. (चित्र सं. २)

अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना के लिए दिया जाने वाला नेहरू पुरस्कार १९६६ में अमरीकी नीग्रो नेता डा. मार्टिन लूथर किंग को दिया गया. डा. किंग की मृत्यु हो जाने के कारण उसे लेने के लिए श्रीमती किंग को भारत में आमंत्रित किया गया. पुरस्कार-प्रदान-समारोह के अवसर पर २५ जनवरी को एक विशेष डाक-टिकट जारी किया गया, जिसपर डा. किंग का चित्र अंकित है. अमरीकी रंगभेद नीति के विरुद्ध आजीवन अहिंसात्मक आंदोलन चलाने वाले डा. किंग का जन्म १५ जनवरी १९२९ को अमरीका में ही हुआ था. इस महान नेता को ४ अप्रैल १९६८ को गोली मार दी गई. (चित्र सं. ३)

उर्दू के प्रसिद्ध शायर मिर्जा गालिब (असदुल्ला बेग खां) की मृत्यु शताब्दी के अवसर पर १७ फरवरी १९६९ को जो विशेष टिकट जारी किया गया उसपर गालिब और उनकी मुहर का चित्र अंकित है. मिर्जा-गालिब का जन्म २७ दिसंबर १७९७ को आगरा में हुआ. फिर वह दिल्ली चले आए जहां वह उर्दू व फारसी में काव्य-रचना करने लगे. उनकी उर्दू कविताओं का संग्रह 'दीवाने-गालिब' १८४१ में प्रकाशित हुआ. उनका देहांत १५ फरवरी १८६९ को हुआ. (चित्र सं. १०)

हैदराबाद के विख्यात उस्मानिया विश्वविद्यालय की स्वर्ण जयंती के अवसर पर दिनांक १५.३.६९ को हरे रंग का एक विशेष डाक-टिकट जारी किया गया जिसपर इस विश्वविद्यालय के भवन का चित्र अंकित है. इस विश्वविद्यालय की स्थापना हैदराबाद के तत्कालीन निजाम मीर उस्मान अली खां द्वारा २२ सितंबर १९१८ को की गई थी. (चित्र सं. ११)

अपने संचार-मंत्री-काल में स्वर्गीय रफी अहमद किदवई ने १ अप्रैल १९४९ को 'समस्त हवाई डाक योजना' चालू की. इसकी बीसवीं जयंती के अवसर पर नीले रंग का एक विशेष डाक-टिकट जारी किया जिसपर एक हवाई जहाज एवं इस योजना के प्रवर्तक श्री किदवई का चित्र अंकित है. श्री किदवई का जन्म उत्तर प्रदेश में १८ फरवरी १८९५ को हुआ था. अलीगढ़ से बी. ए. करने के पश्चात् आपने अपना राजनैतिक जीवन शुरू किया. आपने केंद्रीय मंत्रिमंडल में परिवहन एवं संचार मंत्री तथा खाद्य एवं कृषि मंत्री के पदों पर सफलता पूर्वक कार्य किया. (चित्र ७)

इस वर्ष अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन की अर्द्ध शताब्दी संसार भर में बड़े उत्साह से मनाई गई. इस अवसर पर ११.४.६९ को विशेष टिकट जारी किया गया. इस संगठन की स्थापना सन् १९१९ में सामाजिक न्याय और संसार भर के मजदूरों के कार्य और रहन-सहन की दशाओं में सुधार करने के लिए की गई थी. (चित्र १३)

जलियांवाला बाग ब्रिटिश दमन-नीति का ज्वलंत उदाहरण प्रस्तुत करता है. रोलट एक्ट का विरोध करने के लिए अमृतसर के इस स्थान पर दिनांक १३ अप्रैल १९१९ को एक आम सभा हुई. निहत्थे लोगों की इस शांत सभा पर क्रूर जनरल डायर ने अचानक गोली चलवा दी जिसके परिणाम स्वरूप ३७९ व्यक्ति मारे गए और लगभग १२०० घायल हुए. इस बलिदान दिवस की ५० वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में लाल रंग का जो

१
२
3
४
५
६
७
८
९
१०
११
१२
१३
१४
१५
१६
१७
१८
१९
२०
२१
२२
23
२४
भारत INDIA
20
75
Rs.5
IMCO
NAGESWARA RAO PANTULU
DR. ZAKIR HUSAIN

kissekahani.com

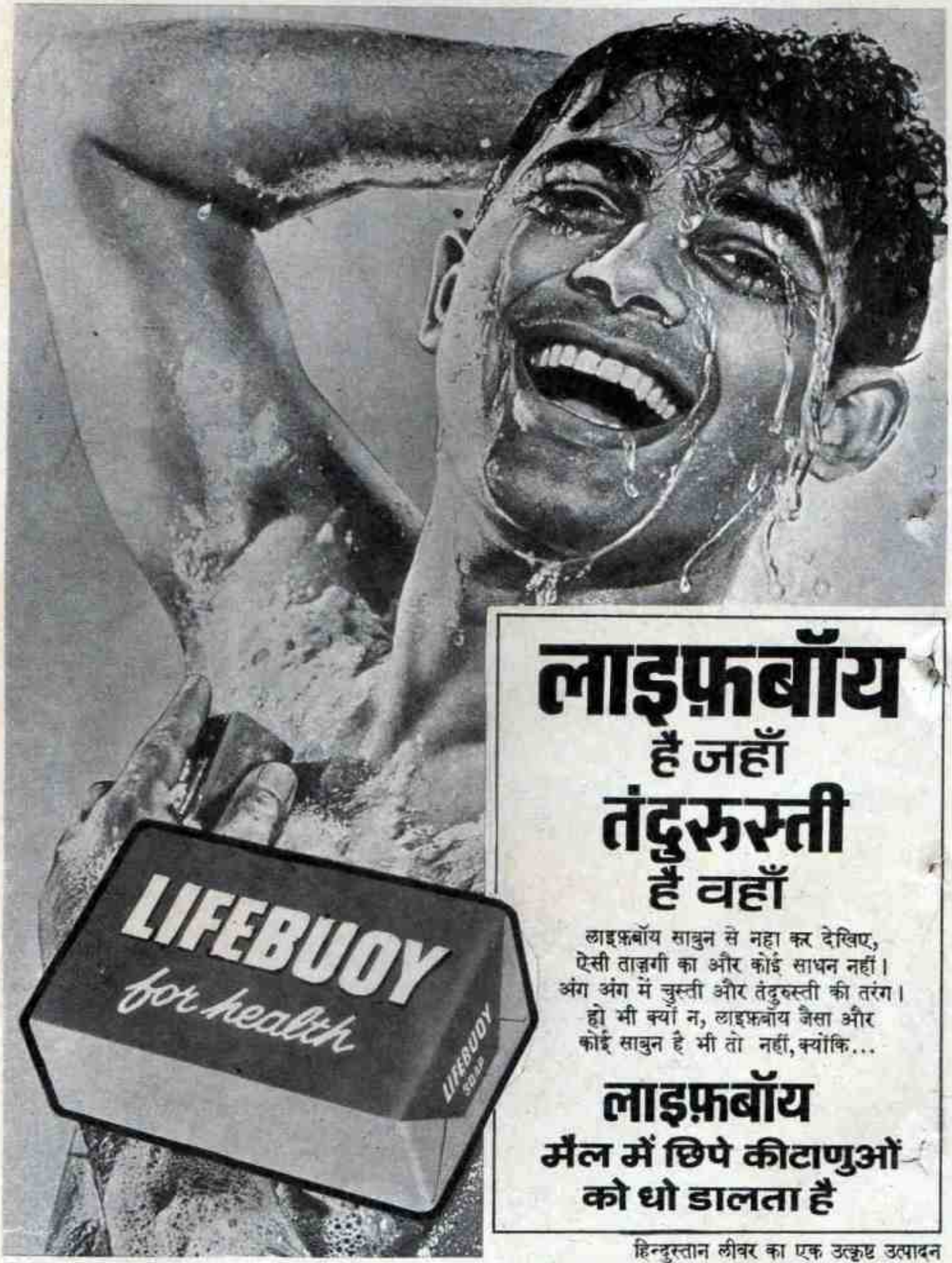

लाइफ़बॉय
है जहाँ
तंदुरुस्ती
है वहाँ

लाइफ़बॉय साबुन से नहा कर देखिए,
ऐसी ताज़गी का और कोई साधन नहीं।
अंग अंग में चुस्ती और तंदुरुस्ती की तरंग।
हो भी क्यों न, लाइफ़बॉय जैसा और
कोई साबुन है भी तो नहीं, क्योंकि...

लाइफ़बॉय
मैल में छिपे कीटाणुओं को धो डालता है

हिन्दुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पादन

लिटास-L. 62-140 HI

विशेष डाक-टिकट जारी किया गया उस पर 'स्मारक' व फूल चढ़ाते दो हाथों का चित्र है. (चित्र ४)

'देशोद्धारक' काशीनाथुनी नागेश्वरराव पंतुलु की जन्म शताब्दी के अवसर पर १ मई १९६९ को गहरे भूरे रंग का विशेष टिकट जारी किया गया, जिस पर पंतुलु जी का चित्र है. श्री नागेश्वरराव का जन्म १ मई १८६७ को आंध्र प्रदेश में हुआ था. श्री नागेश्वरराव की गणना दक्षिण में स्वतंत्रता आंदोलन का सफल संचालन करने वाले नेताओं में की जाती है. अपने जीवन काल में उन्होंने अनेक पुस्तकों का प्रकाशन किया और लगभग २०० पुस्तकालयों की स्थापना करवाई. (चित्र सं. १९)

पिछली शताब्दी के उद्योगपतियों में श्री अरदेसर खरसेदजी वाडिया का नाम विशेष महत्वपूर्ण है. वह पहले भारतीय थे जिन्हें 'फेलो ऑफ दी रायल सोसाइटी' बनने का गौरव प्राप्त हुआ था. इसके अलावा, बंबई में गैस द्वारा प्रकाश की शुरूआत करने वाले और समुद्र में चलने वाला भाप का जहाज बनाने वाले भी वह पहले व्यक्ति थे. उनकी स्मृति में हरे-नीले रंग का एक विशेष टिकट २७ मई १९६९ को निकाला गया. (चित्र सं. १२)

बंगाल के श्रीरामपुर कालेज की १५० वीं जयंती के अवसर पर ७ जून १९६९ को एक हल्का कत्थई रंग का टिकट जारी किया गया. जिसपर इस कालेज के भवन का चित्र अंकित है. इस कालेज की स्थापना श्रीरामपुर की डैनिश बस्ती में सन् १८१८ में डा. विलियम कैरे तथा उनके सहयोगी मिशनरियों द्वारा की गई थी. (चित्र सं. ६)

भारतीय कृषि-उद्योग में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने वाले उद्योगपति श्री लक्ष्मणराव किर्लोस्कर की जन्म शताब्दी के अवसर पर दिनांक २० जून १९६९ को काले रंग का टिकट निकाला गया. आपका जन्म २० जून १८६९ को बेलगाम जिले के गुरलाहोसूर गांव में हुआ था. शुरू में आप स्कूल अध्यापक रहे फिर आपने चारा काटने की मशीन और लोहे के हल बनाने का एक छोटा सा कारखाना लगाया जो बाद में जाकर विशाल किर्लोस्कर उद्योग के रूप में विकसित हुआ. इस प्रमुख उद्योगपति और समाजसुधारक का देहांत २६ सितंबर १९५६ को हुआ था. (चित्र सं ८)

भारत के तीसरे राष्ट्रपति डा. जाकिर हुसैन का निधन शनिवार ३ मई १९६९ को अचानक हो गया. इसके चालीस दिन बाद चेहलुम पर एक विशेष डाक-टिकट जारी किया गया. (चित्र सं.२४)

गांधी जी की जन्म शताब्दी पर दिनांक २.१०.६९ को ४ विशेष टिकट निकाले गए. जिनका मूल्य क्रमशः २० पैसा, ७५ पैसा १ रुपया तथा ५ रुपया था. २० पैसे वाले टिकट पर बा और बापू का चित्र भूरे रंग में छापा गया. ७५ पैसे वाले टिकट पर गांधी जी अपनी लोकप्रिय मुद्रा में अंकित किए गए हैं. एक रुपये वाले नीले टिकट पर डांडी मार्च करते हुए गांधी जी का रेखा चित्र है और ५ रुपये वाले दुरंगे टिकट पर चर्खा कातते हुए गांधी जी का चित्र अंकित है. (चित्र सं. १६, २०, २१, १७)

kissekahani.com

अंतरशासन समुद्री परामर्श संगठन (इम्को) की १० वीं वर्षगांठ पर १४-१०-६९ को नीले रंग का जो विशेष टिकट निकाला गया उस पर समुद्र में तैरते एक टैंकर का चित्र अंकित किया गया है. (चित्र सं. १८)

संसार के संसदीय प्रजातंत्र वाले देशों का ५७ वां अंतर्संसदीय सम्मेलन ३० अक्तूबर से ७ नवंबर तक लोक सभा के अध्यक्ष सरदार गुरुदयालसिंह ढिल्लों की अध्यक्षता में नई दिल्ली में हुआ. इसमें ५५ देशों के लगभग ६०० प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया. इस अवसर पर ३० अक्तूबर को गहरे नीले रंग का जो विशेष टिकट जारी किया गया, उस पर भारतीय संसद भवन एवं ग्लोब का चित्र अंकित है. (चित्र सं. १५)

चंद्रमा पर दो बार मनुष्यों का पहुंच जाना इस वर्ष की सब से अधिक महत्वपूर्ण घटना है. अपोलो १२ के चंद्रमा धरातल पर उतरने के अवसर पर १९ नवंबर १९६९ को जो पीले काले रंग का विशेष टिकट निकाला गया उसपर अपोलो यान, पृथ्वी और चंद्र धरातल पर चलते हुए एक यात्री का चित्र अंकित है. (चित्र सं. २२)

सिख धर्म के संस्थापक गुरु नानकदेव की ५०० वीं जयंती के अवसर पर दि. २३. ११.६९ को धूसर नीले रंग का जो टिकट जारी किया गया उस पर नानकाना साहिब स्थित गुरुद्वारे का चित्र अंकित है. (चित्र सं. ९)

प्रकृति और प्राकृतिक साधन संरक्षण के अंतरराष्ट्रीय संघ की बैठक २४ नवंबर १९६९ से १ दिसंबर ६९ तक नई दिल्ली में हुई. इस अवसर पर निकाले गए हरे और भूरे रंग के टिकट पर बाघ का मुंह चित्रित किया गया है. (चित्र १४)

महान देशभक्त और शिक्षा विशारद श्री थावरदास लीलाराम वासवानी की ९० वीं वर्षगांठ पर नीले काले रंग का एक विशेष टिकट २५ नवंबर को जारी किया गया जिसपर साधु वासवानी का चित्र अंकित है. श्री वासवानी का जन्म २५ नवंबर १८७९ को हैदराबाद सिंध में हुआ. तब से मृत्यु पर्यंत साधु वासवानी ने देश के कोने कोने में जाकर स्वदेशी, सादगी एवं दीन-सेवा का प्रचार किया. उनका देहांत १६ जनवरी १९६६ को पूना में हुआ. (चित्र सं. २३)

इस वर्ष का अंतिम टिकट दिनांक २९.११.६९ को ठक्कर बापा की जन्म शताब्दी के अवसर पर जारी किया गया. श्री अमृतलाल विट्ठलदास ठक्कर का जन्म २९ नवंबर १८६९ को भावनगर (सौराष्ट्र) में हुआ था. इंजीनियर के पद पर काम करते हुए जब उन्होंने भंगियों और निम्न वर्गों की दुर्दशा को देखा तो उन्होंने नौकरी छोड़ कर अछूतोद्धार का कार्य करना शुरू कर दिया. इसके अलावा अकाल पीड़ितों, आदिवासियों, शरणार्थियों आदि की भी उन्होंने अनथक सेवा की. समाज के शोषितों व पददलितों के इस सच्चे सेवक का देहांत १९ जनवरी १९५१ को हुआ. (चित्र सं. ५) ●

हिंदी विभाग, राजकीय महाविद्यालय, भीलवाड़ा (राज.)

kissekahani.com

सरकस

भालू राम साथ बीवी के
गए देखने सरकस,
बैठे कुर्सी पर, बीड़ी का
लिया एक लंबा कश!

घेर लिया बच्चों ने उनको
ताली लगे बजाने;
गए देखने को थे सरकस,
खुद ही लगे दिखाने!

—निरंजनलाल मालवीय 'अविचल'

नन्हे-मुन्नों के लिए नए शिशु गीत

पिछले कई वर्षों से 'पराग' में शिशु गीत छापे जा रहे हैं. इन शिशु गीतों के चयन में बड़ी सावधानी बरती जाती है. क्योंकि शुद्ध शिशु गीत लिखना उतना आसान नहीं है, जितना समझा जाता है इसलिए अच्छे गीत बहुत कम लिखे जाते हैं. ये गीत ऐसे होने चाहिएं कि इन्हें चार से छह साल तक के बच्चे आसानी से जबानी याद कर लें और अन्य भाषा-भाषी बड़े बच्चे भी इनका आनंद ले सकें. इन से मुहावरेदार हिंदी सरलता से जबान पर चढ़ जाती है.

चालाक चूहा

पड़ा खाट पर चूहा कांपे,
तन पर ओढ़ रजाई;
चुहिया बोली, "ठहरो, राजा,
ला दूं तुम्हें दवाई!"

चुहिया चली दवाई लेने,
चूहा झट उठ धाया;
दूध-मलाई का पीछे से,
उसने किया सफाया!

—पंकज गोस्वामी

kissekahani.com

बंदर भूप

गया खेत में बंदर भाग,
चुट्टर-मुट्टर तोड़ा साग!

आग जलाकर चट्टर-पट्टर,
साग पकाकर खद्दर-बद्दर!

सापड़-सूपड़ खाया खूब,
पोंछा मुंह उखाड़ कर दूब!

चूल्हे पर कूदे बेहाल,
और फुलाकर अपने गाल!

चलनी बिछा, ओढ़कर सूप,
डट कर सोए बंदर भूप!

—अनुपम

भालू का ब्याह

घोड़े पर चढ़ बंदर मामा,
गए रचाने शादी!
भालू बोला, "मेरे भैया,
करते क्यों बरबादी!

घरवाली तो पीट पीट कर,
कर देगी मुंह काला;
फैशन का बिल होगा इतना,
निकलेगा दीवाला!"

भालू की बातें सुन बंदर,
जान छोड़ भग आया;
उधर मजे से भालू जी ने,
अपना ब्याह रचाया!

—अनिलकुमार खरे

kissekahani.com

पी एन बी के साथ बचत करने के लिये आपका धन्यवाद...अधिक से अधिक लोगों के लिये ऋण सुविधायें उपलब्ध हैं।

ग्रहणियों को

उनके रसोईघर के उपकरणों की खरीद के लिये

डॉक्टरों को

उनके क्लिनिक के साज़-सामान की खरीद के लिये

फुटकर व्यापारियों को

उनके व्यापार की उन्नति तथा ग्राहकों की सेवा श्रेष्ठतम बनाने के लिये

परिवहन चालकों को

नये स्कूटर तथा टैक्सियाँ खरीदने के लिये

कारीगरों और इन्जीनियरों को

नई परियोजनाओं को स्थापित करने के लिये

यदि आप उपर्युक्त में से कोई भी नहीं हैं और आपके सामने वित्तीय समस्या है तो कृपया हम से सम्पर्क स्थापित करें। देश भर में आपकी सेवा के लिये हमारी ६०० से अधिक शाखायें हैं।

बचत कीजिये... पी एन बी के साथ अधिक बचत कीजिये

PraUbhaiPNB/691/1N

पंजाब नैशनल बैंक

१८९५ से राष्ट्र की सेवा में निरत

कस्टोडियन : एस. सी. त्रिखा

M. SHAHID
H. No.813, Chotta Bazar,
Kashmere Gate, Delhi-110006
Mob. No.9250627395
mshahid.shahid786@gmail.com

kissekahani.com

बोलती तसवीर (पृष्ठ १९ से आगे)

मैंने पास की दूकान से तुम्हारे लिए मंगवाए हैं, इन्हें खा लो. मैं पानी भी भिजवा दूंगा."

उसके चले जाने के बाद राज बोला—"यह मालिक कितना भला आदमी है! हमारे लिए उसने इतना खतरा उठाया है!"

ठाकुर बोला—"नहीं, वह बहुत बदमाश है. हमें यहीं फंसाए रखना चाहता है जिससे हम इस कमरे में शोर मचाकर पुलिस का ध्यान न खींचें. अगर हमें बाहर निकलना है, तो स्वयं प्रयत्न करना होगा—."

दोनों उस रात कमरे में बंद रहे. अगले दिन ग्यारह बजे के करीब खाना आया. परंतु लाने वाले आदमी ने उसकी बात का जवाब नहीं दिया. केवल यह बता गया कि अब खाना इन्हें नौ बजे रात को मिलेगा. खाने में चार परांठे व खूब तेल डली आलू की रसेदार सब्जी थी. राज से केवल आधा परांठा खाया गया.

सारे दिन ठाकुर उस दरार तक पहुंचने का प्रयत्न करता रहा था. दरार बहुत ऊंची थी. ठाकुर बोरियों को घसीटकर एक के ऊपर एक रखता रहा. शाम तक उनकी एक सीढ़ी-सी तैयार हो गई. उसने आखिरी बोरी ऊपर चढ़ाई और दरार से बाहर झांककर चिल्लाया— "देख, राज, दूर एक पानवाले की दूकान दिखाई दे रही है और उसके आगे एक पुलिसवाला बैठा है ; वह हमारी आवाज सुन सकता है, परंतु मोटरों और ट्रकों का शोर बहुत है, इसलिए हमारी आवाज कभी वहां नहीं पहुंचेगी!"

राज भी बोरियों के ऊपर चढ़ गया. उसने देखा, वह पुलिस वाला इसी दूकान पर निगाह रखे था. दोनों समझ गए. यही पुलिस वाला उनकी कैद का कारण है. उसने इधर-उधर दृष्टि डाली. सड़क पर बहुत से लोग आ-जा रहे थे. इतनी दूर से उन्हें पहचानना कठिन था. पान की दूकान में एक मोटा-सा दूकान वाला बैठा था और पान लगा रहा था. तभी राज की दृष्टि दूकान में टंगे एक कैलेंडर पर जा टिकी. राज उस कैलेंडर को एकटक देखे जा रहा था. वह यह खोजने का प्रयत्न कर रहा था कि उस चित्र पर क्या भाव है. उसे लगा इतनी दूर से वह आकृति उसे प्रोत्साहित कर रही है, दिलासा दे रही है. राज ठाकुर से बोला—"तुझे दूकान में टंगा कैलेंडर दिखाई देता है?"

ठाकुर ने अंधेरे में आंखें फाड़ीं. उसे कुछ भी नहीं दिखाई दिया. उसने सिर हिला दिया. "ठाकुर, तुझे कुछ नहीं दिखाई देता, पर अब मैं बाहर निकलने की तरकीब सोचूंगा," यह कहकर राज ने कमरे में घूमना आरंभ कर दिया. ठाकुर देख रहा था, जो राज कल शाम से कम से कम दस बार रो चुका था और जिसने बाहर निकलने की सारी आशाएं छोड़ दी थीं अब कमरे के कोने कोने में झांक रहा था. फिर उसने चुटकी बजाई और ठाकुर को कुछ बताने लगा. ठाकुर ने सारा प्लान सुना और सहमति में सिर हिलाया. दोनों काम में लग गए. उनका बनाया प्लान बहुत सरल था. कमरे में वे जिस खिड़की से घुसे थे, दूसरे कमरे में वह रोशनदान की तरह खुलती थी. बस उसी खिड़की के नीचे पक्के फर्श पर उन्होंने वह तेल वाली सब्जी लुढ़का दी जो राज ने दिन में छोड़ दी थी और उसे चारों ओर बिखरा दिया.

रात को कहे समय के अनुसार वह आदमी फिर खाना ले कमरे में घुसा और घुसते ही फिसल पड़ा. उसका सिर दीवार से टकराया और हाथ में लिया हुआ गिलास उछलकर उसी के सिर पर गिरा. दोनों जने तैयार थे. उन्होंने गेहूं की खाली बोरियां दनादन उसके मुंह पर फेंकनी आरंभ कर दीं और फिर भाग लिये और जाते जाते खिड़की के पट बंद करना न भूले. वह ड्रमों को उस जगह से हटाना भी न भूले. इसके बाद उन्होंने जो रेस लगाई, तो सबसे पहले उन्हें वह आदमी मिला, जो उन्हें उस कमरे में बंद कर गया था. ठाकुर ने टंगड़ी दी, वह बिना कुछ समझे-बूझे जमीन पर चित्त हो गया. जूए वाला कमरा खाली था और अब वहां कुछ टूटी कुर्सियां पड़ी थीं. उसके बाद वे बाहर होटल में आए. होटल आज लगभग खाली-सा था था और मालिक अपनी गद्दी पर बैठा कुछ हिसाब लगा रहा था. उसने इन्हें बाहर भागते देखा, तो वह भी बाहर भागा. उन्होंने समझा यह हमें पकड़ना चाहता है, परंतु वह कुछ दूर उनके पीछे भागा और फिर बाहर खड़ी एक कार में बैठ गया. जितनी देर में ये दोनों ठिठकें और कुछ सोचें वह गाड़ी आंख से ओझल हो गई. ठाकुर नंबर याद करना न भूला. दोनों दौड़कर पनवाड़ी की दूकान पर पहुंचे. पुलिस वाला किसी आदमी से बातचीत करने में व्यस्त था.

दोनों ने हांफते हांफते अपनी सारी कथा उसे कह सुनाई. फिर तो कुछ ही देर में वहां पुलिस की गाड़ियों के हार्न बजने लगे. पुलिस वालों ने उस दूकान को चारों ओर से घेर कर एक बार फिर तलाशी ली. इस बार राज और ठाकुर सरीखे गुप्त कमरों का रास्ता दिखाने वाले सहायक साथ थे. वहां बहुतसी ऐसी वस्तुओं के गोदाम मिले, जिन्हें रखना जुर्म है. इसके अतिरिक्त वहां गेहूं और आटे के भी छुपे हुए भंडार थे.

दोनों मित्रों का केवल एक अपराध था—उन्होंने जूआ खेलने में भाग लिया था. परंतु उनके और कामों को देखते हुए उन्हें माफ कर दिया गया. भविष्य में राज और ठाकुर को कभी किसी ने इन बुरी जगहों पर नहीं देखा. ●

क्वार्टर नं. ३२, टाइप फोर्थ, एफ. सी. आई. कालोनी, पोस्ट पर्वतपुर, जिला लखीमपुर (असम).

kissekahani.com

कहो कैसी रही

एक हाथी नदी के एक पुल को पार कर रहा था. पुल लकड़ी का था और हाथी के वजन से चरमरा उठता था. हाथी की पीठ पर एक चींटी भी थी. जब बीच नदी में पुल ज्यादा चरमराने लगा, तो चींटी बोली, "मैंने तुमसे पहले ही कहा था, कि मेरा और तुम्हारा वजन यह पुल सहन नहीं कर सकेगा! मगर तुमने मेरी बात पर ध्यान नहीं दिया. अब क्या होगा? देखो, अगर डर लगता हो, तो मैं अब भी उतर जाऊं!"

•

शास्त्री जी भाषण कर रहे थे, "हमें अधिक गेहूं उगाना चाहिए और..."

"ठीक है, किंतु भूसे का क्या होगा?" एक विरोधी ने पूछा.

"अभी मैं इनसानों के खाने की बात कर रहा हूं. आपके भोजन की बात भी एक मिनिट बाद करता हूं!"

•

जेल की कोठरी में फांसी की सजा पाने वाला कैदी सब से अधिक ईश्वर को याद करता था. जब भी जेलर गश्त पर आता, वह भगवद् भजन में डूबा होता. हर घड़ी इसी क्रिया में लगा रहता और बातों का जवाब तक इशारों में देता. उसका यह सिलसिला दिन में ही नहीं, रात में भी जारी रहता.

एक दिन दोपहर के समय जेलर राउंड पर आया, तो कैदी बेखबर पड़ा सो रहा था. जेलर ने उसे जगाया और पूछा, "क्यों आज पूजा-पाठ बंद है?"

"घरवालों ने खबर दी है कि मौत की सजा उमर कैद में बदल गई है. ईश्वर से जितना काम लेना था ले चुका, अब मैं उसे अधिक तकलीफ नहीं देना चाहता!"

•

सड़क पर खड़े एक आदमी ने दूसरे आदमी से पूछा, "भाईजान, यहां से शराबघर अधिक दूर है क्या?"

"नहीं, भाई, यहां से जाने में सिर्फ पांच मिनिट लगते हैं, मगर लौटने में पचास मिनिट लगते हैं!"

•

सर विस्टन चर्चिल रेडियो से एक वार्ता प्रसारित करने वाले थे. बादल घिर आए थे और बड़ी ठंड थी. चर्चिल ने टैक्सी की और रेडियो भवन पर पहुंच कर उन्होंने टैक्सी ड्राइवर से कहा—"तुम यहीं ठहरो, मैं अभी वापस आता हूं."

"मैं नहीं ठहर सकता. मुझे चर्चिल का भाषण सुनना है," ड्राइवर बोला.

सुनकर चर्चिल बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने उसको एक पौंड इनाम दिया. ड्राइवर ने सोचा, आदमी रईस है, वापस ले जाऊंगा, तो और इनाम देगा. इसलिए बोला, "चर्चिल को मारिए गोली, मैं आपको वापस लेकर जाऊंगा!"

•

एक नए सिपाही से थानदार बोला: "तुम कोई केस नहीं लाते हो, ऐसा कैसा चलेगा, दूसरे सिपाही

"अरे, आपके पूरे शरीर पर पट्टियां क्यों बंधी हैं? क्या शिकार में किसी बड़े जानवर की चपेट में आ गए थे?"

"नहीं, कोई बड़ा शिकार नहीं, बस एक खरगोश मारा था."

"अजीब बात है!"

"हां, उस खरगोश का मालिक बड़ा ही खूंखार निकला!"

kissekahani.com

कैसे इतने सारे केस ले आते हैं? अगर खून, चोरी या जुए का केस नहीं ला सकते हो, तो साइकिल के केस ही लाओ."

उस रात ड्यूटी पर पहुंचते ही वह सिपाही अंधेरे में बैटरी लेकर जाते हुए एक आदमी को रोकते हुए बोला, "तुम्हारे पास लाइट है, साइकिल कहां है?"

●

"अजी, सुनते हो, वह जो आपने बेबी को न टूटने वाला खिलौना दिया था न..."

"क्यों, क्या हुआ? क्या उसने वह भी तोड़ डाला?"

"वह तो नहीं, लेकिन बाकी सारे खिलौने उसने उसी से ठोक-ठोककर तोड़ डाले!"

●

शराबी: "भई, जरा यह बताओ कि इस सड़क का दूसरा किनारा किधर है?"

राहगीर: "वह रहा सामने!"

शराबी: "कमाल है अभी मैं उस किनारे पर था, तो एक साहब ने बताया कि दूसरा किनारा उधर है!"

●

एक महाशय एक सभा में बड़े जोरशोर से गला फाड़-फाड़ कर भाषण दे रहे थे. एक कुत्ता थोड़ी दूर बैठा हुआ बड़ी आश्चर्य-मिश्रित मुद्रा में वक्ता महोदय तथा श्रोताओं की ओर देख रहा था. इतने में ही एक दूसरा कुत्ता वहां पर आया और अपनी भाषा में उसने पहले कुत्ते से पूछा—"क्यों भाई, बड़े ध्यान से भाषण सुना जा रहा है!"

इस पर पहले कुत्ते ने विस्मय दर्शाते हुए उत्तर दिया—"अरे भाई, भाषण तो क्या सुनूंगा, पर मुझे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हो रहा है कि ये कैसे अजीब जानवर हैं; कोई तो घंटे भर से गला फाड़ रहा है और बाकी सब गुमसुम बैठे हैं. कोई भी उस बेचारे का साथ नहीं दे रहा!"

●

एक डाक्टर ने अपनी किताब में वजन घटाने का नुस्खा बताते हुए लिखा—

"अगर आप खूब ठूंस-ठूंस कर खाएं, तो काफी मोटे हो जाएंगे. मोटे होने पर आप आलसी हो जाएंगे. आलसी होने पर आप काम कम करेंगे. कम काम करने पर आपको पैसे कम मिलेंगे. शायद आप नौकरी से निकाल भी दिए जाएंगे. तब पैसे के अभाव में आपको खाना भी नहीं मिलेगा और खाना न मिलने पर आप खूब दुबले हो जाएंगे!"

●

एक धनी किसान बहुत कंजूस था. एक बार वह कुंएं में गिर पड़ा. उसने अपनी पत्नी को पुकार कर कहा—"मुझे कुंएं से निकालो."

इस पर पत्नी ने कहा—"ठहरो, मैं खेत पर से मजदूरों को बुलाती हूं."

एक शराबी मोटर को स्टार्ट करने जा ही रहा था कि सिपाही ने उसे रोक कर पूछा, "तुम मोटर को ड्राइव करने तो नहीं जा रहे हो?"

"अवश्य ड्राइव करने जा रहा हूं. मैं पैदल चलने की हालत में जो नहीं हूं!" शराबी ने उत्तर दिया.

किसान ने पूछा, "अभी कितना बजा है?"

पत्नी ने कहा, "अभी पौने बारह बजे हैं."

किसान ने कहा, "अभी पंद्रह मिनिट ठहर जाओ. जब छुट्टी हो जाए, तो बुलाना. तब तक मैं यहीं तैर रहा हूं!"

●

एक नवाब साहब के दरबार में एक शायर कविता सुना रहे थे. कविता की हरेक पंक्ति के अंत में 'बालियां', 'जालियां' जैसे शब्दों का प्रयोग किया गया था. कविता सुंदर थी. चारों तरफ से 'वाह वाह' की आवाजें आ रही थीं. नवाब के एक मुंह लगे मुसाहिब थे जगनू मियां. उनसे यह न देखा गया. वह खुद के सिवा किसी अन्य को नवाब की नजरों में चढ़ने देना नहीं चाहते थे. शायर को संबोधित करके बोले, "हजरत, आपने चीज तो अच्छी सुनाई, लेकिन इसमें 'तालियां' तो कहीं आया ही नहीं. वह भी किसी शेर में बांध देते तो मजा आ जाता!"

शायर को पहले तो यह बात बहुत बुरी लगी, लेकिन उसने तुरंत ही संभल कर उत्तर दिया, "हुजूर, वह भी अर्ज किया है, सुनिये:

जुगनू मियां की दुम जो चमकती है रात में,
सब देख देख उसको बजाते हैं तालियां!"

खूब तालियां बजीं. जुगनू मियां का मुंह देखते ही बनता था.

—वीणा वल्लभ

kissekahani.com

फ़ुर्सत के क्षण एक नया मनोरंजन

"न कोई काम न काज, मैं तो तंग आ गया" ऐसा आपने कई बार कहा होगा। है कि नहीं? सच पूछिए तो, कुछ न कुछ दिलचस्प काम करते रहने की बजाय कुछ न करने से ज़्यादा थकान होने लगती है। आइए, हम आपको फ़ुर्सत के वक़्त करने के लिए एक ऐसा दिलचस्प काम बताएँ जिससे आपको आराम तो मिलेगा ही, मानसिक संतोष भी मिलेगा और मन खिल उठेगा।

'देखना' भी एक कला है

अगली बार जब भी फ़ुर्सत मिले, हर चीज़ को दिलचस्पी लेकर देखिए। फिर आपको उनमें ऐसी ख़ूबसूरती नज़र आने लगेगी जैसी आपने अबतक देखते हुए भी अनुभव नहीं की थी। आपको लगेगा कि किस तरह छोटी-छोटी चीज़ों से जीवन में एक नया रस, एक नया आनन्द भर आता है।

इस कला के लिए चाहिए-नयी आँखें

जी हाँ, जीवन के सौन्दर्य को निरखने के लिए चाहिए नयी, निराली आँखें—कैमरे की आँखें। फोटो खींचते समय आप दृश्य के रूप को तो फ़िल्म पर उतारते ही हैं, साथ ही उसमें अपनी सृजनात्मक-कला का परिचय भी देते हैं। चित्र खींचने के लिए हर दृष्टि से विचार करना; कहाँ से, किस कोण से चित्र खींचना... ये तथा और भी ऐसी कई बातें हैं जो आपके हाथ में हैं और अपनी इस कला से आप आश्चर्यजनक और आल्हादक परिणाम ला सकते हैं।

नये-नये मित्र बनाने का रहस्य!

एक और लाभ है फोटोग्राफी का। पिकनिक में, पार्टियों में, आपको कैमरे के साथ देखते ही लोग चाहेंगे कि आप अपने कैमरे से उनके भी कुछ चित्र खींच लें। यही तो है आपकी सफलता और लोकप्रियता की कुंजी... मित्र बनाने का रहस्य!

'क्लिक' कैमरा—फोटोग्राफी शुरू करने के लिए सर्वोत्तम!

फोटोग्राफी का सफलता के साथ श्री गणेश करने के लिए आपके पास एक सीधा-सादा और भरोसेमन्द कैमरा चाहिए। इसके लिए आगफ़ा क्लिक III आज़मा कर देखिए। इसमें न तो कुछ 'एडजस्ट' करने का झंझट है और न कुछ गणना करने की परेशानी। बस फ़िल्म डालिए, निशाना साधिए और फोटो पर फोटो खींचते जाइए। आपको देख कर आश्चर्य होगा कि शुरू से ही आपने बड़ी शानदार तस्वीरें खींच ली हैं। आगफ़ा क्लिक III में '१२०' रॉल फ़िल्म इस्तेमाल कीजिए और एक फ़िल्म से १२ फोटो खींचिए। घर में इस्तेमाल करना चाहें तो फ्लेशगन लगा सकते हैं। देर किस बात की? आगफ़ा क्लिक III कैमरा अभी ले आइए और शुरू कीजिए फोटो खींचने का शौक। यह सभी फोटोग्राफ़िक शॉप्स (दूकानों) पर मिलता है। क़ीमत रु. ४६.५० (टैक्स अतिरिक्त)

सभी अधिकृत आगफ़ा विक्रेताओं के यहाँ मिलता है।

आगफ़ा की देख-रेख में बनानेवाले:
दि न्यू इंडिया इण्डस्ट्रीज लि., बड़ौदा
सोल डिस्ट्रिब्यूटर्स:
आगफ़ा-गेवअर्ट इंडिया लिमिटेड
बम्बई • नई दिल्ली • कलकत्ता • मद्रास

CMAG-121-203 HIN

kissekahani.com

'पराग' रंग भरो प्रतियोगिता ९४

बच्चो, नीचे का चित्र है न मजेदार! काश, यह रंगीन होता, तो क्या कहना था! चलो, तुम ही रंग भरकर इसे हमारे पास २० अप्रैल तक भेज दो. हां, अगर तुम्हारा खयाल हो कि चित्र की पृष्ठभूमि को तुम अपनी कल्पना से और ज्यादा उभार सकते हो, तो रंगों द्वारा उसे चित्रित करने की तुम्हें स्वतंत्रता है. सब से अच्छे रंग भरने वाले तीन प्रतियोगियों को एकसे सुंदर इनाम मिलेंगे और उनमें से दो के चित्रों को छापा भी जाएगा. लेकिन रंग भरने वालों की उम्र १६ साल से अधिक नहीं होनी चाहिए और उन्हें 'वाटर कलर' ही उपयोग में लाने चाहिएं. चित्र के नीचे वाला कूपन भरकर भेजना जरूरी है. पूर्तियां भेजने का पता : संपादक, 'पराग' (रंग भरो प्रतियोगिता नं. ९४), पो. आ. बा. नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया बिल्डिंग, बंबई–१.

यहां से काटो

यहां से काटो

यहां से काटो

कूपन

'पराग' रंग भरो प्रतियोगिता – ९४

नाम और उम्र ----------

पूरा पता ----------

यहां से काटो

kissekahani.com

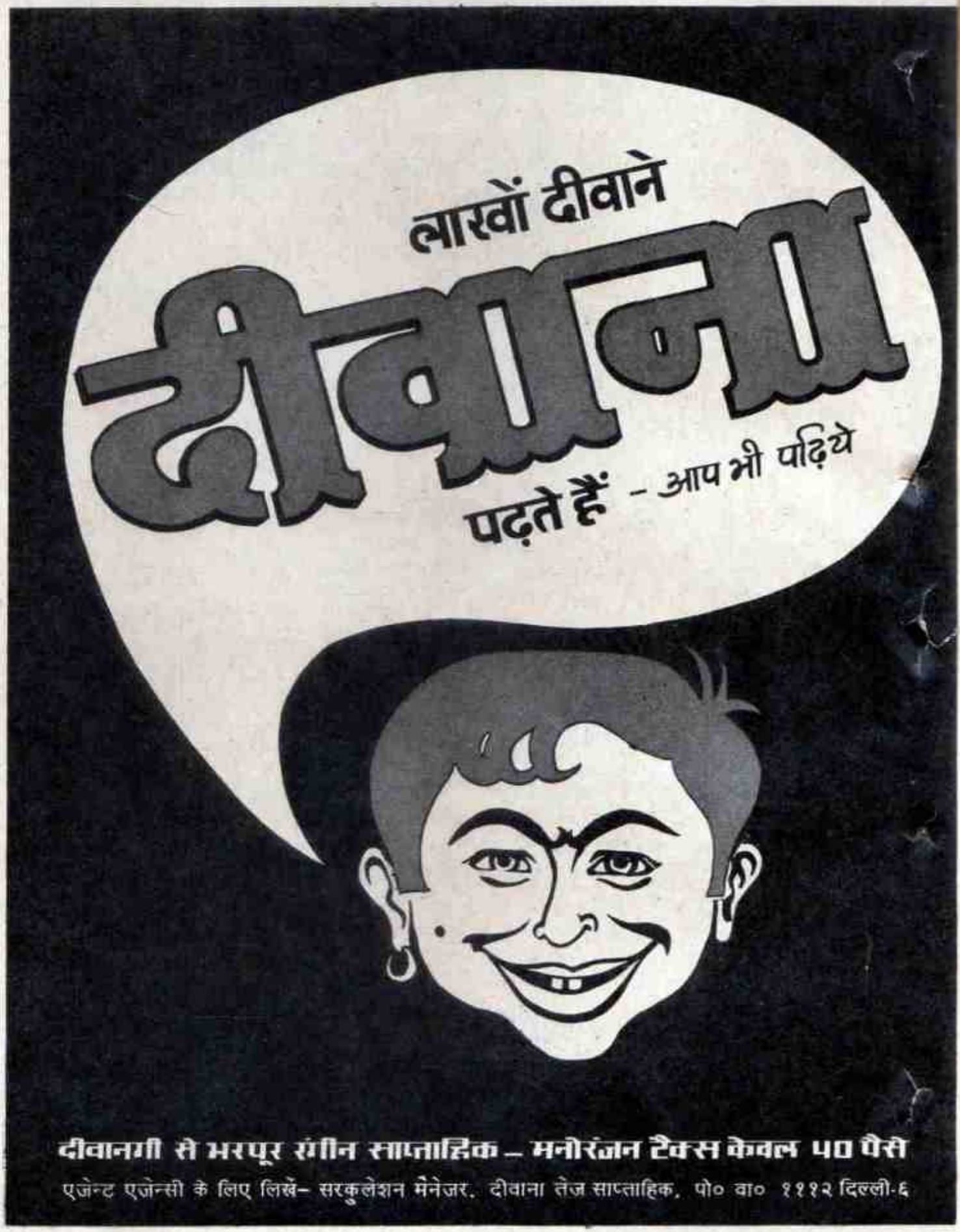

kissekahani.com

रंग भरो प्रतियोगिता नं. ९१ का परिणाम

'पराग' की रंग भरो प्रतियोगिता नं. ९१ में जिन तीन चित्रों को पुरस्कार योग्य चुना गया, उनमें से दो को यहां छापा जा रहा है. पुरस्कार विजेताओं के नाम और पते इस प्रकार हैं :

● **यासिन भाई हासिम भाई वैद्य, द्वारा डी. एच. बी. वैद्य, जवाहर रोड, डभाण भागोल, नडियाद, जिला खेड़ा (गुजरात).**

● **कुमारी राका रानी गर्ग, द्वारा श्री एन. सी. गर्ग, रेलवे कांट्रेक्टर, ठक्कर फलिया, दोहद (गुजरात).**

● **रामतीर्थ निषाद, द्वारा श्री रामचंद्र विकल, खेपड़ा डीह, फैजाबाद (उ. प्र.).**

ऊपर वाला चित्र है यासिन भाई हासिम भाई वैद्य का और नीचे वाला कुमारी राकारानी गर्ग का. दोनों ही प्रतियोगियों ने अपनी कल्पना से चित्र की पृष्ठभूमि को नया रूप-रंग दिया है. यासिन भाई हासिम भाई वैद्य ने उसे घर का ड्राइंग-रूम मान कर चित्रित किया है, जबकि कुमारी राकारानी गर्ग ने बच्चों को घर के बाहर चबूतरे पर खेलते दिखाया है. रंगों का चुनाव दोनों का बढ़िया है. दूसरे बच्चों में से इनके प्रयास अच्छे रहे : हरीशकुमार वी. भींडे, गांधीधाम; दिलीप अवस्थी, कानपुर; कुमारी काजल मालाकार, पो. रायपुर, देहरादून; कुमारी बीना गुप्ता, राउरकेला–२; मनोहर लाल, सहारनपुर; कुमारी अनीता सक्सेना, नई दिल्ली–५; कुमारी रेखा बंसल, मद्रास–१२; कुमारी सुषमा आर्य, देहरादून; बलजीत सिंह साही, चंडीगढ़; अशोक कुमार केड़िया, राउरकेला; चंद्रमोहन श्रीवास्तव, वाराणसी; कुमारी सुनीता मित्तल, मुज्जफर-नगर; कुमारी नलिनी माथुर, नई दिल्ली-१६; कुमारी सुशीला कपूर, वाराणसी; कुमारी विनीता कुमारी, बोकारो (धनबाद); हरिशंकर शुक्ल, लखनऊ; प्रताप स्वर्णकार, दुर्ग; रघुवीर सिंह, पटना–२; कुमारी राधा वार्ष्णेय, अलीगढ़; श्यामलाल किशोर, दहियावां (छपरा); राजेशकुमार ठाकुर, छिंदवाड़ा तथा कुमारी प्रेमलता, अजमेर. ●

kissekahani.com

www.kissekahani.com

यही है 'वारलॉर्ड ७'

उसकी ओर तो देखिये। लम्बी, चिकनी व मज़बूत। उसे स्विवेल स्टैण्ड पर रखिये। सीधा खड़ा कीजिये। उसमें अम्युनिशन बेल्ट लगाइये। (जल्दी कीजिये)—बहुत जल्दी, क्योंकि जब वह गोलियां बरसाना शुरू करेगी तो रुकने का नाम न लेगी। हर गोली के साथ वह चमक और लौ देखिये।

'वारलॉर्ड ७' सटीक व घातक। एक मिनट में २०० दर्दनाक मौतें।

जब वह गोलियों की बौछार कर रही हो तो आपको बस एक ही ओर रहना चाहिए, बस उसी की ओर। आपकी आंखें निशाने की ओर रहनी चाहिए।

बटन दबाते ही गोलियों की बौछार शुरू।

'वारलॉर्ड ७' बच्चों का खिलौना—पर बिल्कुल असली जैसी दिखती व आवाज करती है। पूरा खिलौना-स्विवेल स्टैण्ड, अम्युनिशन बेल्ट सहित बैटरी चालित मशीन गन सभी प्रमुख दुकानों में मिलते हैं।

दूर से नियंत्रित बैटरी चालित एक्सप्लोडिंग टैंक भी। यह सुरंग पर फटकर टुकड़े टुकड़े हो जाता है। इसे १० सेकंड में ही फिर से जोड़ा जा सकता है।

म्युचुअल प्लास्टिक्स

नीलम मेन्शन, त्रिभुवन रोड, बम्बई-४

हर मौक़े पे रंग, कोका-कोला के संग

मन लगाकर खेलने का निराला आनन्द। उस पर कोका-कोला का संग...भरता है मन में नयी उमंग! कोका-कोला का स्वाद ही ऐसा जानदार, उमंगभरा और ताज़गीदायक है कि बार-बार पीने को जी चाहता है। कोका-कोला... फिर कोका-कोला... फिर कोका-कोला! दुनियाभर में जहाँ देखिए, जब देखिए कोका-कोला पीनेवालों की संख्या बढ़ती ही जा रही है। वाह री लज़्ज़त कोका-कोला, ऐसी लज़्ज़त और कहाँ!

Enjoy Coca-Cola

कोका-कोला, कोका-कोला कम्पनी का रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क है।

CMCC-13-203 HN

बेनेट कोलमैन एंड कंपनी लिमिटेड, स्वत्वाधिकारी के लिए प्यारेलाल साह द्वारा टाइम्स आफ इंडिया प्रेस, बंबई में मुद्रित और प्रकाशित; पो. आ. बाक्स २०७, बंबई-१; दिल्ली आफिस : ७, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-१; कलकत्ता आफिस : १३/१ और १३/२, गवर्नमेंट प्लेस ईस्ट; लंदन आफिस : ३, अल्बे मार्ले स्ट्रीट, डब्ल्यू-१.

REGD. No. M H 468

kissekahani.com

देगा मज़ा यम् यम् यम्,
देखो चबाके चूइंग गम !

पेपरमिंट के
मज़ेदार ज़ायकेवाला
चिक्लेट्स चूइंग गम

www.kissekahani.com

६० पैसे में १२

एडम्स का श्रेष्ठ उत्पादन